राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

धनबाद, रांची एवं पटना से प्रकाशित

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | रांची, गुरुवार 22 अगस्त 2024 ● भाद्रपद कृष्ण पक्ष 03 , संवत 2081 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ 6 ● वर्ष : 2, अंक : 134 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

पेज 12

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

वीर शहीद नीलांबर पीतांबर की धरा से लातेहार, पलामू और गढ़वा की बहनों को

खुशियों का उपहार

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री

सम्मान राशि का करेंगे हस्तांतरण

झारखण्ड मुख्यमंत्री
मंईयां
सम्मान योजना

हर बहना को
हर साल
₹ 12 हजार

पलामू प्रमंडल (लातेहार, पलामू और गढ़वा) की सभी बहनों का समारोह में स्वागत है

केवल 2 सप्ताह में 45 लाख निबंधन

अब तक 43 लाख बहनों का आवेदन स्वीकृत

31 अगस्त से पहले सभी बहनों के खातों में होगी एक हजार रुपये की सम्मान राशि (पहली किस्त)

सितंबर से हर महीने की 15 तारीख को हर बहन के खाते में बिना देर पहुँचेगी सम्मान राशि

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखण्ड सरकार

राजनीतिक उथल-पुथल : अब झारखंड की राजनीति में फिर से एक नए दल का उदय, पूर्व के इतिहास नहीं रहे हैं सुखद

नयी राह पर चलना कितना आसान होगा पूर्व सीएम चंपाई सोरेन के लिए?

कौशल आनंद। रांची

- बाबूलाल भी भाजपा से अलग होकर गठित कर चुके थे झाविमो, मगर अंततः कर दिया गया भाजपा में विलय
- पहले तुम, पहले तुम के चक्कर में बुरी तरह से फंस गए चंपाई, भाजपा और चंपाई दोनों की रणनीति को हेमंत ने किया फेल

अब यह तय हो चुका है कि चंपाई सोरेन कम से कम झामुमो में रहने वाले नहीं हैं. खुद चंपाई के बयानों से यह भी साफ हो गया कि वे अगल राह चलेंगे, जिसमें नयी क्षेत्रीय पार्टी का गठन भी विकल्प हो सकता है. इसके बाद अब झारखंड की राजनीति में फिर से एक नए दल के उदय की संभावना प्रबल हो गयी है. इसमें कोई दो राय नहीं है कि चंपाई सोरेन कोल्हान के टाइगर में अपनी हैसियत एवं रूतबा रखते हैं. वे गुरूजी के आंदोलन की साथी और विश्वास पात्र के रू में जाने जाते हैं. इसलिए चंपाई का झामुमो से निकलना पार्टी संगठन के साथ-साथ कोल्हान में भी पार्टी के कमजोर होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है. मगर अब सवाल उठ रहे हैं कि चंपाई के लिए नयी राह व भी नए संगठन खड़ा करके चलना कितना आसान होगा.

14 साल झाविमो को चलाने वाले मरांडी को भाजपा के समक्ष घुटने टेकने पड़े

उस समय के राष्ट्रीय नेताओं की अनदेखी करने का आरोप लगाकर पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने भी अपना एक नया राजनीतिक संगठन झारखंड विकास मोर्चा खड़ा किया था. 2014 में झाविमो के आठ विधायक भी जीत दर्ज की. मगर उस समय के तत्कालीन रघुवर सरकार में पांच विधायक पाला बदल कर भाजपा में शामिल हो गए. 2019 में भी झाविमो अकेले दम पर चुनाव लड़ी, तीन विधायक जीते भी. मगर बाद में खुद मरांडी ही पूरे संगठन का विलय भाजपा में कर दिया. उस समय मरांडी पर ये आरोप भी लगे कि 2019 के चुनाव लड़ने में फंडिंग भाजपा ने ही की थी.

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पार्टी विधायक तोड़ने की चंपाई और भाजपा दोनों की रणनीति को कर दिया फेल

मिली जानकारी के अनुसार भाजपा की रणनीति न केवल चंपाई सोरेन को अपने पाले में लाने की थी, वहीं पार्टी के विधायकों को भी तोड़ने की थी. जैसे ही कोल्हान के चार विधायक के नाम मीडिया में उछली, हेमंत सोरेन अलर्ट हो गए और डैमेज कंट्रोल में जुट गए. जिसमें हेमंत सोरेन शत प्रतिशत सफल साबित हुई. चंपाई सोरेन का कोलकाता भाया दिल्ली जाना, वहां तीन दिन रूकना केवल एक इतेफाक के तौर राजनीतिक के जानकार मानने को तैयार नहीं हैं. दरसल भाजपा द्वारा दिए गए होमवर्क को पूरा करने में चंपाई सफल नहीं हो सके. पहले तुम, पहले तुम के चक्कर में खुद भाजपा और चंपाई सोरेन उलझ कर रह गए. नतीजा चंपाई सोरेन के झामुमो में बने रहने की सारी संभावना समाप्त हो गयी. हालांकि राजनीति में संभावनाए कभी समाप्त नहीं होती है. इसलिए अभी आगे का खेला देखना, विधानसभा चुनाव के पहले तक दिलचस्प होगा.

जेपीएससी मेंस परीक्षा का रिजल्ट जल्द होगा जारी

- 5600 अभ्यर्थियों ने दी थी मुख्य परीक्षा
- रिजल्ट किया जा चुका है तैयार

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएसएसी) जल्द ही मुख्य परीक्षा का रिजल्ट जारी करेगा. रिजल्ट लगभग तैयार किया जा चुका है. मुख्य परीक्षा में 5600 अभ्यर्थी शामिल हुए थे. बताते चलें कि पीटी की परीक्षा 17 मार्च को हुई थी. 22 अप्रैल को पीटी परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया था. 22 से 24 जून तक मुख्य परीक्षा ली गई थी. यह परीक्षा 342 पदों के लिए ली गई थी. मुख्य परीक्षा का रिजल्ट आने के बाद सफल अभ्यर्थियों के लिए इंटरव्यू की प्रक्रिया पूरी की जाएगी. इसके बाद अंतिम रूप से चयनित अभ्यर्थियों का रिजल्ट जारी किया जाएगा.

डीजीपी से मिला रांची प्रेस क्लब का प्रतिनिधिमंडल, रखी मांग

पत्रकारों पर चल रहे हैं फर्जी मुकदमे, रोक लगाएं

संवाददाता। रांची

झारखंड के पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता से रांची प्रेस क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को मुलाकात की. इस दौरान पत्रकारों की समस्याओं के समाधान के लिए मांग पत्र सौंपा गया. पुलिस महानिदेशक को दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि झारखंड में पत्रकारिता का गौरवशाली इतिहास रहा है. यहां के पत्रकारों नें तमाम चुनौतियों के बावजूद पूरी निष्ठा के साथ लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का मान बढ़ाया है. इसके बावजूद झारखंड के पत्रकार कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं.

पत्रकारहित में झारखंड के सभी पत्रकारों के आस्था का केंद्र बने ''द रांची प्रेस क्लब'' के प्रतिनिधिमंडल ने कई समस्याओं की ओर डीजीपी का ध्यान आकृष्ट कराया, जिनमें प्रमुख रूप से पूरे झारखंड में पत्रकारों पर दर्ज कराए गए झूठे मामले की एसआईटी द्वारा जांच करवा कर उन्हें न्याय दिलाया जाय. पत्रकारों को उनकी मुखर पत्रकारिता की कीमत चुकानी पड़ रही है, जैसे बुंडू के पांच परगना अखबार के पत्रकार आशीष प्रमाणिक, बुंडू न्यूज 11 के अमित दत्ता, हजारीबाग के झारखंड दर्पण के पत्रकार सचिन खंडेलवाल, रातू के खबर मंत्र के पत्रकार मो. मुजीबुल, पलामू मेदिनीनगर के दैनिक भास्कर के ब्यूरो चीफ संजय तिवारी, पलामू जिले के छतरपुर के प्रभात खबर के प्रतिनिधि राजीव सिन्हा, छतरपुर के ही दैनिक भास्कर के पत्रकार बुद्धिनारायण सिंह और ओरमांझी के न्यूज 11 के पत्रकार मो. मोहसिन के खिलाफ दर्ज मुकदमे इसके उदाहरण हैं.

डीजीपी अनुराग गुप्ता को मांग पत्र सौंपते प्रेस क्लब के पदाधिकारी.

पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की दिशा में पहल हो

ज्ञापन में कहा गया है कि संबंधित मामलों की जांच करवा कर उन्हें फर्जी मुकदमों से बरी करवाया जाए. साथ ही झारखंड में छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों की तरह पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की दिशा में पहल की जाय. झारखंड के हर थाने में पीड़ितों के आवेदन का रिसीविंग देने की प्रक्रिया कड़ाई से लागू किया जाए. ज्ञापन में कहा गया है कि ऐसे कई मौके आए है जब रसूख वाले लोग पत्रकारों की आवाज दबाने के लिए झूठे रंगदारी, मारपीट जैसे मुकदमे दर्ज किए जाते हैं, पुलिस और थाना भी रसूखदारों के इशारे पर ही काम करती है. ऐसे मामलों को दर्ज करने से पूर्व पुलिस द्वारा पूरी सत्यता को सतर्कता से जांच सुनिश्चित करने के निर्देश आपके स्तर से दिए जाएं. साथ ही क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने डीजीपी से आग्रह किया कि झारखंड पुलिस और प्रेस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में साइबर क्राइम और विभिन्न विषयों पर क्लब में वर्कशॉप का भी आयोजन किया जाए.

पुलिस महानिदेशक ने ज्ञापन के बाद प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया की संबंधित मांगों पर सकारात्मक रूप से कार्रवाई की जाएगी. पुलिस महानिदेशक को ज्ञापन सौंपने वालों में द रांची प्रेस क्लब के उपाध्यक्ष धर्मेंद्र गिरि, कोषाध्यक्ष कुबेर सिंह, मैनेजिंग कमेटी सदस्य आरजे अरविंद, मोनू कुमार और विजय मिश्रा प्रमुख रूप से शामिल रहे.

31 तक फसल बीमा योजना का लाभ लें

रांची। खरीफ फसल 2024 के लिए फसल बीमा कराया जा रहा है. किसानों को यह सुविधा कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के तहत बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के आधार पर उपलब्ध कराया जा रहा है. इसका लाभ लेने को सभी जिलों में सूचना जारी की जा रही है. इच्छुक किसान पास के प्रज्ञा केंद्र जा सकते हैं. साथ ही किसान पोर्टल पर ऑनलाइन खुद आवेदन फॉरमर लॉगिन से दे सकते हैं. बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 अगस्त है. पंजीकरण में आधार कार्ड, बैंक पासबुक, राजस्व पदाधिकारी द्वारा निर्गत भूमि प्रमाण पत्र चाहिए. तत्काल उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में मुखिया या प्रधान से सत्यापित वंशावली एवं भूमि विवरणी, बटाई, स्वसत्यापित फसल बुआई प्रमाण पत्र और मोबाइल नंबर की भी जरूरत होगी.

कमांडर दिवाकर दस्ते के सदस्य थे तीनों, देसी कार्बाइन भी बरामद

टीपीसी के तीन उग्रवादी गिरफ्तार

संवाददाता। रांची

पुलिस ने टीपीसी कमांडर दिवाकर गंझू के दस्ते के तीन उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है. एसएसपी चंदन सिन्हा को मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस की टीम ने यह कार्रवाई की है. इसे लेकर बुधवार को ग्रामीण एसपी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि तीन टीपीसी उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें बड़कागांव निवासी प्रकाश गंझु, हजारीबाग निवासी राहुल लहरी और रांची निवासी मोनू कुमार बड़ाईक शामिल है. गिरफ्तार उग्रवादियों के पास से एक देशी कार्बाइन मैगजीन सहित, 13 जिन्दा गोली, एक बाइक, जिओ कंपनी का राउटर और चार मोबाइल फोन बरामद हुआ है.

टीपीसी कमांडर दिवाकर दस्ते के गिरफ्तार उग्रवादी.

घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे थे : पुलिस को सूचना मिली थी कि मंगलवार की रात दामोदर नदी के किनारे बड़कागांव, केरेडारी और बुढ़मू थाना की सीमा पर स्थित ग्राम छापर में टीपीसी उग्रवादी जमा हुए हैं. जो लेवी वसूलने और किसी बड़ी घटना का अंजाम देने की योजना बना रहे हैं. सूचना के आधार पर डीएसपी खलारी के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन किया गया. इसके बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची तो उग्रवादी भागने लगे. जिसमें पुलिस द्वारा घेराबंदी कर तीन उग्रवादियों पकड़ा गया. दो अन्य उग्रवादी अंधेरे का फायदा उठा भागने मे सफल रहे.

भारत बंद के समर्थन में भी माले कार्यकर्ता सड़क पर उतरे

लैटरल एंट्री के खिलाफ माले ने किया प्रदर्शन

संवाददाता। रांची

आदिवासी, दलित और पिछड़ों का आरक्षण के खिलाफ हो रहे हमले के खिलाफ भाकपा माले ने सक्रिय समर्थन प्रदान किया था. बुधवार को राज्य के सभी जिलो में माले कार्यकर्ता सड़क पर उतरे. माले के अलावे छात्र संगठन आइसा के बैनर तले सैकड़ों छात्र युवा भी इन प्रतिवाद कार्यक्रमों में हिस्सा लिए. धनबाद, रांची, डालटनगंज. रामगढ, गिरिडीह, कोडरमा, बोकारो, दुमका, देवघर आदि जिलों के ग्रामीण तथा शहरी इलाकों में प्रदर्शन प्रदर्शनकारी आरक्षण में वर्गीकरण व लैटरल एंट्री के जरिये नियुक्ति के खिलाफ नारे लगा रहे थे. वे जाति आधारित जनगणना चालू करने की मांग कर रहे थे.

बंद के समर्थन में सड़क पर उतरे माले के नेतागण.

रांची के अल्बर्ट एक्का चौक पर सुबह करीब साढ़े दश बजे दर्जनों माले कार्यकर्ता तख्तियां लेकर प्रदर्शन किया एवं नारे लगाए. प्रदर्शन का नेतृत्व रविन्द्र भुईयां, जगरनाथ ओरांव, शांति सेन, ऐति तिर्की, नौरिन, अकरम, मोइन, मोहन दत्ता, शुभेंदु सेन, एनामुल, समर सिन्हा, भीम साहू, नौहीद आकाश आदि ने किया. बंद को सफल बनाने आम जनो के सहयोग के लिए पार्टी सचिव ने आभार जताया.

जेटेट के लिए आवेदन की तिथि बढ़ी, 26 तक कर सकेंगे आवेदन

- सर्वर में आयी खराबी के कारण जैक ने लिया फैसला
- पहले 22 अगस्त तक जमा किये जाने थे आवेदन

प्रमुख संवाददाता। रांची

झारखंड एकेडेमिक काउंसिल (जैक) ने टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट (टेट)) परीक्षा के लिए आवेदन जमा करने की तिथि बढ़ा दी है. अब उम्मीदवार 26 अगस्त तक आवेदन जमा कर सकते हैं. पहले टेट परीक्षा के लिए आवेदन भरने की अंतिम तिथि 22 अगस्त निर्धारित थी. लेकिन सर्वर में आयी खराबी के कारण जैक ने आवेदन भरने की लास्ट डेट को बढ़ाने का फैसला लिया. टेट एग्जाम के लिए 23 जुलाई से ही ऑनलाइन आवेदन जमा करने की प्रक्रिया जारी है. अब तक इस परीक्षा के लिए लगभग साढ़े तीन लाख अभ्यर्थी आवेदन दे चुके हैं.

ऐसे करें आवेदन :

- जीटेट 2024 आवेदन पत्र भरने के लिए सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट jactetportal.com पर जायें.
- वेबसाइट के होम पेज पर आपको रजिस्टर नाउ के लिंक पर क्लिक करे और अपना रजिस्ट्रेशन कराये.
- रजिस्ट्रेशन होने के बाद अभ्यर्थी फिर से लॉग इन करके बाकी डिटेल भरें और एप्लिकेशन सब्मिट कर दें.
- इसके बाद आवेदन शुल्क जमा करें.
- फॉर्म का प्रिंटआउट निकालकर अपने पास रख लें.

रीडर स्तर के 63 पुलिसकर्मियों की वरीयता सूची जारी

रांची। 63 रीडर (आशु सहायक अवर निरीक्षक) स्तर के पुलिसकर्मियों का पुलिस मुख्यालय ने औपबंधिक वरीयता सूची जारी की है. वहीं रिटायर डीएसपी अनिल शंकर को एसीपी और एमएसीपी योजना का लाभ देने को लेकर बैठक हुई. जिसमें निर्णय लिया गया कि अनिल शंकर को एसीपी और एमएसीपी योजना का लाभ से संबंधित सभी तरह की कार्रवाई गृह विभाग से सहमति मिलने के बाद की जाएगी. इसे लेकर डीआईजी कार्मिक ने अधिसूचना जारी किया है.साथ ही रेंज और इकाई के डीआईजी को कहा गया है कि अपने-अपने क्षेत्रों में पदस्थापित रीडर स्तर के पुलिसकर्मियों का वरीयता सूची प्रसारित की जाए. इसमें अगर किसी पुलिसकर्मी को आपत्ति है, तो इसे 15 दिनों के अंदर बताया जाए. इसके अलावा यह भी कहा गया है कि अगर पुलिसकर्मियों का नाम इस सूची में छूट गया है तो इसको लेकर अलग से जानकारी उपलब्ध कराई जाए.

कोर्ट की खबरें

राजकुमार अग्रवाल को कोर्ट से राहत

संवाददाता। रांची

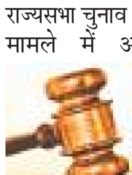

राज्यसभा चुनाव से जुड़े हॉर्स ट्रेडिंग मामले में आरोपी राजकुमार अग्रवाल को हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है. हाईकोर्ट ने उनके खिलाफ रांची सीबीआई कोर्ट के चल रहे ट्रायल की प्रक्रिया को खत्म कर दिया है. इस मामले में सीता सोरेन के खिलाफ चार्जशीट दायर की है. सीबीआई की चार्जशीट में बताया गया था कि सीता सोरेन ने राज्यसभा चुनाव में वोटिंग के लिए 50 लाख रुपये लिए थे. बुधवार की सुनवाई के दौरान राजकुमार अग्रवाल के अधिवक्ता द्वारा कोर्ट को बताया कि जो पैसे बरामद हुए थे, वह उनके नहीं थे. एजेंसी ने उन्हें पैसों के मामलों में क्लीन चिट भी दे दी है. इसलिए उनके खिलाफ चल रही कार्रवाई को रद्द किया जाना चाहिए.

एडवोकेट एसोसिएशन और आरडीबीए ने हाईकोर्ट से किया आग्रह

रांची। आरक्षण के मुद्दे पर बुलाये गये बंद के कारण झारखंड हाईकोर्ट और रांची सिविल कोर्ट के कई अधिवक्ता और उनके मुवक्किल अदालत तक नहीं पहुंच पाए. इसे देखते हुए हाईकोर्ट एडवोकेट एसोसिएशन और रांची जिला बार एसोसिएशन ने हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस और रांची सिविल कोर्ट के प्रधान न्यायायुक्त से यह आग्रह किया था कि अगर कोई अधिवक्ता किसी मामले में पक्ष नहीं रख पा रहा है तो 21 अगस्त को सूचीबद्ध मामलों में किसी भी तरह का विपरीत आदेश पारित न किया जाये. रांची जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं महासचिव के संयुक्त हस्ताक्षर से यह पत्र जारी किया गया था. हाईकोर्ट एडवोकेट एसो. के महासचिव ने भी पत्र जारी किया था.

गांजा तस्कर दुखहरण साहू को 10 साल सश्रम कारावास

रांची। रांची सिविल कोर्ट ने गांजा और अवैध शराब के तस्कर दुखहरण साहू को 10 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है. इसके साथ ही अदालत ने उसपर दो लाख 20 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है. अदालत ने अपने आदेश में कहा है कि जुर्माना की राशि नहीं देने पर दोषी को दो वर्ष की अतिरिक्त कारावास भुगतनी होगी. इस केस के दूसरे आरोपी साबिर अंसारी को अदालत ने साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है. मामले में सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से 7 गवाहों को प्रस्तुत किया गया था. रांची सिविल कोर्ट के प्रधान न्याययुक्त दिवाकर पांडेय की कोर्ट ने यह फैसला सुनाया है.

आज सीएम पलामू में, देंगे सौगात

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 22 अगस्त को पलामू में महिलाओं को मईयां सम्मान योजना की सौगात देंगे. 21 अगस्त तक इस योजना के लिए 42.85 लाख आवेदन स्वीकृत किए जा चुके हैं. इस योजना के तहत महिलाओं को सालाना 12 हजार रुपये दिए जाएंगे. 23 अगस्त को हजारीबाग, 27 अगस्त को दुमका, 28 अगस्त को चाईबासा और 30 अगस्त को रांची में आयोजित कार्यक्रम में सीएम शिरकत करेंगे.

कैबिनेट की बैठक 29 को: मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक 29 अगस्त को होगी. यह बैठक प्रोजेक्ट भवन स्थित मंत्रीपरिषद कक्ष में होगी. इसमें कई अहम प्रस्तावों को मंजूरी मिलेगी.

क्लासिफाइड

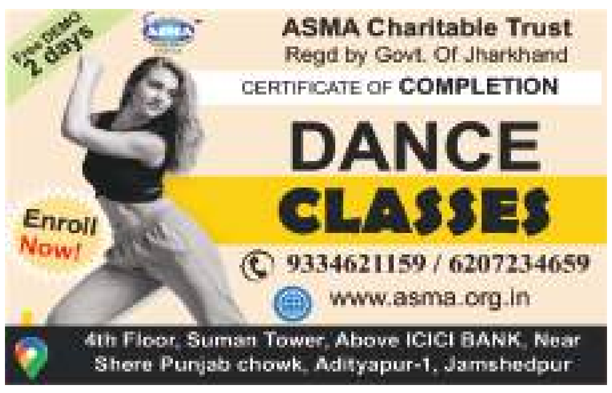

गौरव नयी दिल्ली में पीएसयू और सरकारी शिखर सम्मेलन आयोजित

मेकॉन को पब्लिक सेक्टर एक्सीलेंस अवॉर्ड

संवाददाता। रांची

मेकॉन को सर्वश्रेष्ठ मिनीरत्न केंद्रीय पीएसयू श्रेणी के अंतर्गत प्रतिष्ठित डन एंड ब्रैडस्ट्रीट पब्लिक सेक्टर एक्सीलेंस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया. भारत में इस्पात उद्योग के लिए इंजीनियरिंग कंसल्टेंट के रूप में वर्ष 1959 में स्थापित मेकॉन ने धातु, ऊर्जा और इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे कई क्षेत्रों में सम्पूर्ण समाधान इंजीनियरिंग परामर्शी संगठन के रूप में खुद को स्थापित किया है. मेकॉन के सेवा पोर्टफोलियो में अवधारणा, इंजीनियरिंग, खरीद, परियोजना प्रबंधन, डायग्नोस्टिक अध्ययन, मूल्य वर्धित सेवाएं, ईपीसी निष्पादन, ओ एंड एम सेवाएं शामिल हैं. डन एंड ब्रैडस्ट्रीट, एक अग्रणी वैश्विक बी2बी एनालिटिक्स और बिजनेस इंटेलिजेंस समाधान प्रदाता ने 20 अगस्त को नयी दिल्ली में पीएसयू और सरकारी शिखर सम्मेलन के अपने 16वें संस्करण की मेजबानी की.

मेकॉन पब्लिक सेक्टर एक्सिलेंस अवॉर्ड से हुआ सम्मानित.

शिखर सम्मेलन में इंडिया @ 2047 विजनः पावर्ड बाई रिसर्जेंट पब्लिक सेक्टर विषय पर गहन चर्चा हुई. जिसमें प्रमुख केंद्रीय और राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को उनके व्यावसायिक उत्कृष्टता और मंत्रालयों को उनकी अभिनव पहलों व योजनाओं के लिए सम्मानित किया गया. इस शिखर सम्मेलन में मेकॉन लिमिटेड की ओर से संजय कुमार वर्मा, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, मेकॉन ने पुरस्कार प्राप्त किया.

हेमंत सरकार ने बेच दिया है युवाओं का भविष्यः बाउरी

प्रमुख संवाददाता। रांची

नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने हेमंत सरकार पर निशाना साधा है. ट्वीट कर कहा है कि हेमंत सरकार ने राज्य के युवाओं का भविष्य बेच दिया है. 100 अंकों के पेपर में अभ्यर्थी को 252 अंक दे दिये गये हैं. वहीं, 78 प्रश्नों के सही उत्तर देनेवाले अभ्यर्थी को 156 की जगह 88.23 अंक दिये गये हैं. पीजीटी में हुई भीषण गड़बड़ियों का मामला पहले दिन से लगातार भाजपा उठा रही है. इस मामले की सीबीआई जांच आवश्यक है. झारखंड सरकार राज्य के युवाओं के भविष्य को बेचने का पाप ना करें, अविलंब मामले में सीबीआई जांच की अनुशंसा करें. सरकार व परिस्थितियां बदलेंगी, जिन्होंने भी नियुक्ति घोटाले में सहभागिता सुनिश्चित की है उनकी जिम्मेदारी तय की जाएगी. भाजपा आएगी, न्याय दिलाएगी. राज्य का आदिवासी-मूलवासी समाज सोरेन परिवार से त्रस्त है, इस बार समाज उन्हें सत्ता से उखाड़ फेंकेगा.

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	33.2	26.2
जमशेदपुर	35.8	26.7
डालटनगंज	34.6	25.4

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

रांची, धनबाद एवं पटना से प्रकाशित

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in

रांची, गुरुवार 22 अगस्त 2024 ● भाद्रपद कृष्ण पक्ष 03, संवत 2081 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ ● वर्ष : 2, अंक : 134

आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

सर्राफा

सोना (बिक्री)	67,300
चांदी (किलो)	86,000

ब्रीफ खबरें

रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन को बेल

रांची। चेशायर होम रोड की एक एकड़ जमीन की गलत तरीके से खरीद-बिक्री करने के आरोपी रांची के पूर्व डीसी और निलंबित आईएएस छवि रंजन की जमानत याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस रंगोन मुखोपाध्याय की कोर्ट में सुनवाई हुई. सुनवाई के दौरान ईडी और बचाव पक्ष यानी छवि रंजन का पक्ष सुनने के बाद अदालत ने बेल दे दी. छवि रंजन फिलहाल न्यायिक हिरासत में हैं. उनकी ओर से अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा, अभिषेक चौधरी, स्नेह सिंह और अभिषेक सिंह ने बहस की. यह केस ईडी के कांड संख्या ईसीआईआर 5/2023 से जुड़ा हुआ है.

हरियाणा : भर्ती परिणामों पर रोक

नयी दिल्ली। हरियाणा विधानसभा चुनाव में सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए निर्वाचन आयोग ने बुधवार को राज्य के अधिकारियों को चुनाव संपन्न होने तक पुलिस कांस्टेबल और शिक्षक भर्ती प्रक्रियाओं के परिणामों की घोषणा करने से रोक दिया. हरियाणा में एक अक्टूबर को एक ही चरण में विधानसभा चुनाव होना है.

ईरान : बस दुर्घटना में 28 लोगों की मौत

तेहरान। शिया जायरीनों को पाकिस्तान से इराक ले जा रही एक बस मंगलवार देर रात मध्य ईरान में दुर्घटनाग्रस्त हो गई. अधिकारियों ने बुधवार को इस हादसे में करीब 28 जायरीनों की मौत होने, जबकि 23 अन्य के घायल होने की जानकारी दी. आपातकालीन सेवा के अधिकारी मोहम्मद अली मालकजादेह ने बताया कि यह हादसा मंगलवार देर रात राजधानी तेहरान से लगभग 500 किमीर दक्षिण-पूर्व में यज्द प्रांत के तफ्त शहर के बाहरी इलाके में हुआ.

नक्सल प्रभावित राज्यों की समीक्षा करेंगे शाह

नयी दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शनिवार को छत्तीसगढ़ के रायपुर में आयोजित होने वाली एक उच्च स्तरीय बैठक में नक्सल प्रभावित राज्यों के बीच अंतर-राज्यीय समन्वय की समीक्षा करेंगे. अंतर-राज्यीय समन्वय बैठक में छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के मुख्य सचिवों और पुलिस महानिदेशकों के अलावा केंद्र सरकार के शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों के भी शामिल होंगे.

गुजरात : दूसरा स्वदेशी परमाणु रिएक्टर शुरू

नयी दिल्ली। गुजरात के काकरापार परमाणु ऊर्जा स्टेशन में 700 मेगावाट के भारत के दूसरे स्वदेशी परमाणु ऊर्जा रिएक्टर ने पूरी क्षमता से परिचालन शुरू किया. एनपीसीआईएल ने बताया कि केएपीएस इकाई 700 मेगावाट की पूर्ण क्षमता तक पहुंचने से पहले 90% क्षमता पर काम कर रही थी.

सामूहिक दुष्कर्म मामले में 6 गिरफ्तार

रायगढ़। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले की पुलिस ने रक्षाबंधन के दिन 27 वर्षीय आदिवासी युवती से सामूहिक बलात्कार के आरोप में छह लोगों को गिरफ्तार किया है. पुलिस अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि रायगढ़ के पुसौर थाना क्षेत्र में एक आदिवासी युवती से सामूहिक बलात्कार के आरोप में राहुल चौहान समेत छह लोगों को गिरफ्तार किया गया है.

भारत बंद : समर्थक सड़क पर उतरे, कम चले वाहन, बंद रहे स्कूल-कॉलेज व दुकानें

झारखंड में मिला-जुला असर रामगढ़ व धनबाद में असरदार

लगातार न्यूज । नेटवर्क टीम

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आरक्षण को लेकर सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले के विरोध में आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के भारत बंद का झारखंड में भी मिला जुला असर रहा. कई जिलों में बंद समर्थक सड़क पर उतर कर भारत बंद को सफल बनाने में जुटे थे. राजधानी रांची की बात करें, तो सामान्य दिन की तुलना में वाहनों का परिचालन काफी कम रहा. व्यस्त रहनेवाले किशोरगंज चौक पर बुधवार को वाहन कम दिखे. सड़क पर लोग कम ही नजर आए. इक्का-दुक्का दुकानों को छोड़ कर सभी दुकानें बंद रहीं. वहीं, बंदी को देखते हुए एहतियातन सभी स्कूलों बंद रहे.

रांची के अलावा हजारीबाग, गिरिडीह, बोकारो, चाईबासा, झरिया, लातेहार आदि जिलों में भारत बंद का मिला-जुला असर देखने को मिला. गिरिडीह, चक्रधरपुर में बंद असरदार रहा. सड़कों पर गाड़ियां कम दिखीं. भारी वाहनों का परिचालन पूरी तरह से बाधित है. सभी मार्गों में बंद समर्थक मौजूद हैं. बोकारो की बात करें तो यहां भी भारत बंद का कोई असर नहीं दिख रहा है. रोड पर सामान्य दिनों की तरह ही ट्रक, बस सहित अन्य गाड़ियां नहीं चलीं. बता दें कि झारखंड में भारत बंद को झामुमो, कांग्रेस, राजद और वाम दलों के अलावा कई संगठनों ने समर्थन दिया था.

धनबाद में भी दिखा असर, सड़क पर उतरे समर्थक : भारत बंद का धनबाद में व्यापक असर देखने को मिल रहा है. प्रदर्शनकारियों ने धनबाद बरटांड बस स्टैंड, झरिया-कतरास मोड़, बस्ताकोला, लोदना मोड़ आदि क्षेत्रों में सड़क पर बांस लगा कर आवागमन को अवरुद्ध कर दिया. धनबाद में अधिकतर निजी स्कूलों को बंद रहीं. तोपचांची नेशनल हाईवे को भीम आर्मी, राजद और जेबीकेएसएस कार्यकर्ताओं ने जाम कर दिया था. झरिया में बंद का खास असर नहीं दिखा. सभी दुकानें खुली रहीं और छोटे वाहन चलते रहे. हालांकि बंद समर्थक सड़क पर बैठे थे, जिसकी वजह से सड़क पर जाम की स्थिति उत्पन्न होती रही. झरिया-सिंदरी मुख्य मार्ग बस्ताकोला के समक्ष बंद समर्थकों ने सड़क जाम कर दिया है. इसकी वजह से करीब दो घंटे से आवागमन पूरी तरह बाधित रहा. पुलिस ने कुछ बंद समर्थकों हिरासत में लिया. वहीं बाघमारा, हरीना चौक, डुमरा में सुबह से ही भारत बंद का असर देखने को मिला.

रामगढ़ में असरदार रही बंदी, कई मार्ग किये अवरुद्ध : हजारीबाग व लातेहार में भी भारत बंद का मिला-जुला असर देखा गया. लातेहार के महुआडांड़ में बंद समर्थक सड़कों पर उतर आये. वहीं, रामगढ़ जिले में बंद का व्यापक असर देखने को मिला. सुभाष चौक पर बंद समर्थक सड़क पर उतरकर एनएच -23 को पूरी तरह बाधित कर दिया था. जिले के भुरकुंडा कोलांचल में बंद का असर पूरी तरह देखने को मिला. सैकड़ों की संख्या में बंद समर्थक भुरकुंडा मतकम्मा चौक पर डटे रहे और रामगढ़-पतरातू मुख्यमार्ग को जाम कर दिया. इसके अलावा लोहरदगा व सिमडेगा में बंद का आंशिक असर देखने को मिला.

रांची में बंद के दौरान टायर जला कर सड़क जाम किया, पास से गुजरता एंबुलेंस. तस्वीर : रमीज

धनबाद : जाम ने ले ली किशोरी की जान

धनबाद । भारत बंद के कारण धनबाद में एक सड़क दुर्घटना में जख्मी निरसा की एक किशोरी की जान चली गई. 14 वर्षीय पायल बुधवार को अपने घर के समीप अज्ञात बाइक की चपेट में आने से गंभीर रूप से जख्मी हो गई थी. पायल को परिजन निजी वाहन से धनबाद के अस्पताल ले जा रहे थे. लेकिन बंदी की वजह से कई स्थानों पर बैरिकेडिंग लगाकर सड़क जाम कर दिया गया था. जाम के कारण युवती को अस्पताल पहुंचाने में देर हो गई. एसएनएमएमसीएच पहुंचने पर इमरजेंसी में डॉक्टरों ने किशोरी का इलाज शुरू किया, लेकिन कुछ ही देर में उसकी मौत हो गई.

पटना में लाठीचार्ज, गुजरात में मालगाड़ी रोकी

एजेंसियां । नयी दिल्ली

एससी-एसटी के आरक्षण में क्रीमी लेयर लागू करने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ बुधवार को बुलाए गये भारत बंद का मिला-जुला असर रहा. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के आह्वान पर बुलाए गए इस बंद को देशभर के 21 संगठनों ने समर्थन दिया था. बिहार की राजधानी पटना में बंद के दौरान जमकर बवाल देखने को मिला. पुलिस ने भी प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज किया. इस दौरान सिविल ड्रेस में मौजूद एसडीएम पर पुलिस जवान ने लाठियां भांज दी. वहां मौजूद पुलिस अफसरों ने जवान को रोका और बताया कि वो एसडीएम हैं. इसके बाद जवान ने एसडीएम से माफी मांगी. भारत बंद के समर्थन में पूर्णिया के निर्दलीय सांसद पप्पू यादव भी सड़क पर उतरे.

वहीं, राजस्थान के जयपुर, अलवर, अजमेर समेत कई इलाकों में भारत बंद का असर नजर आया. यहां प्रमुख बाजार बंद रहे और सड़कों पर आवागमन अन्य दिनों की तुलना में कम देखने को मिली. वहीं, असम में बंद बेअसर रहा. राज्य भर में विद्यालयों, कार्यालयों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कामकाज सामान्य ढंग से चला तथा कर्मियों की पूर्ण उपस्थिति रही. भारत बंद का पंजाब और हरियाणा में भी कोई खास असर नहीं दिखा. हालांकि कुछ स्थानों पर विरोध प्रदर्शन हुए. पंजाब और हरियाणा में भारत बंद का कोई खास असर नहीं दिखा. सार्वजनिक परिवहन सेवाएं सामान्य रूप से संचालित रहीं. साथ ही दुकानें भी खुली रहीं.

यूपी में प्रदर्शन, एमपी में बंद का आंशिक असर

उत्तर प्रदेश में भारत बंद को सपा, बसपा, आजाद पार्टी समेत तमाम संगठनों ने अपना समर्थन दिया. लखनऊ के हजरतगंज चौराहे पर बसपा कार्यकर्ताओं ने अंबेडकर प्रतिमा के पास विरोध-प्रदर्शन किया. प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुईं. इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की. वहीं, मध्य प्रदेश में भारत बंद का आंशिक असर दिखा. राजधानी भोपाल के अलावा ग्वालियर चंबल अंचल, विंध्य अंचल, मालवांचल, निमाड़, महाकौशल, बुंदेलखंड क्षेत्र में भी पूरी तरह से शांति रही.

गुजरात में मालगाड़ी रोकी, डेढ़ घंटे बाद छोड़ा : गुजरात के छोटा उदयपुर, नर्मदा, सुरेंद्रनगर, साबरकांठा और अरावली जैसे जिलों के आदिवासी और दलित बहुल इलाकों में भारत बंद का असर दिखा. यहां बाजार बंद रहे. सुरेंद्रनगर जिले के वाधवन तालुका में प्रदर्शनकारियों ने मालगाड़ी रोक दी और नारेबाजी की. पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को समझाया और करीब डेढ़ घंटे बाद मालगाड़ी भावनगर के लिए रवाना हुई. ओडिशा में सड़क, रेल सेवाएं आंशिक रूप से प्रभावित रहीं. सरकारी कार्यालयों, बैंक, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और शैक्षणिक संस्थानों में सामान्य दिनों की तरह कामकाज हुआ.

ना झामुमो के रहे, ना भाजपा में जा सके

नई पार्टी बनायेंगे चंपाई सोरेन

जिलिंगगोड़ा गांव में अपने समर्थकों को संबोधित करते चंपाई सोरेन.

पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने सुर बागी होने के बाद झारखंड की राजनीतिक गलियारों में कयासों का दौर लगना शुरू हो चुका था. इस बीच 'एक्स' पर पोस्ट कर झामुमो में अपमान होने की बात कह कर उन्होंने सियासी सरगर्मी और बढ़ा दी थी. चंपाई ने तीन विकल्प भी बताए थे, राजनीति से सन्यास, नयी पार्टी का गठन और इस राह में मिलने वाले समान विचारधारा वाले दोस्त का साथ. सभी को उनके अगले कदम का इंतजार था. चंपाई सोरेन ने बुधवार को साफ कर दिया कि वह राजनीति से सन्यास नहीं लेंगे और नया संगठन बनाएंगे.

विशेष संवाददाता । रांची

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और आंदोलन के वक्त से गुरुजी के मजबूत स्तंभ माने जानेवाले चंपाई सोरेन के झामुमो में रहने की संभावनाएं अब खत्म हो गयी हैं. उन्होंने खुद ही बड़ा ऐलान कर एक तरह से इस पर मुहर लगा दी है. कोलकाता से मंगलवार देर रात झारखंड लौटने के बाद चंपाई सोरेन ने बुधवार को सरायकेला-खरसावां जिला स्थित अपने पैतृक गांव जिलिंगगोड़ा में एक जनसभा को संबोधित किया. उन्होंने कहा कि कोलकाता से लौटने के बाद उनकी बहुत से लोगों से बातचीत हुई. देर रात ही 5000 से अधिक लोगों के के साथ बातचीत हुई थी. अब वे बड़ा फैसला लेने जा रहे हैं.

चंपाई काफी समझदार, अपनी मंजिल ढूंढ लेंगे : मरांडी : पूर्व सीएम चंपाई सोरेन की घोषणा के बाद प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने बहुत ही सधा हुआ बयान दिया है. मरांडी ने कहा कि चंपाई सोरेन काफी समझदार हैं, वो अपनी मंजिल ढूंढ लेंगे. चंपाई सोरेन संघर्षशील रहे हैं, सही राह पर आगे चलेंगे. साथी ढूंढ रहे हैं, तो सही साथी ढूंढ लेंगे. मरांडी ने कहा कि चंपाई से भाजपा में आने का न आग्रह करेंगे और न ही अनुरोध. समझदार चंपाई सोरेन खुद उचित निर्णय लेंगे.

आदिवासी हित की बात करने वाले साथी की तलाश

जिलिंगगोड़ा के उत्क्रमित फुटबॉल ग्राउंड में भारी संख्या में मौजूद समर्थकों को संबोधित करते हुए चंपाई ने कहा कि मैंने तय कर लिया है कि राजनीति से संन्यास नहीं लेंगे. अगर आदिवासियों और दलितों के हित की बात करने वाला कोई साथी मिलेगा, तो उनके साथ आगे बढ़ेंगे. उन्होंने कहा कि सभी जानते हैं कि जब मैं कुछ भी नहीं था, तब भी यहां के मजदूरों के हक में आवाज बुलंद करता था. उनकी लड़ाई लड़ता था. उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि वे अपनी नयी पार्टी बनाएंगे.

सन्यास नहीं लेंगे

पोटका के इंपीरियल रिसॉर्ट में बनी आगे की रणनीति : जिलिंगगोड़ा में अपने समर्थकों को संबोधित करने के बाद चंपाई सोरेन पोटका विधानसभा क्षेत्र पहुंचे. यहां इंपीरियल ब्लू रिसॉर्ट में उन्होंने अपने समर्थकों एवं शुभचिंतकों के साथ बैठक की. देर शाम तक चली बैठक में अपने सिपहसलारों से अगले कदम को लेकर चर्चा की. मीडिया द्वारा आगे के राजनीतिक कदम के बारे में पूछने पर चंपाई ने कहा कि इंतजार कीजिए जल्द तस्वीर साफ हो जाएगी.

देश भर के 16 माननीय दुष्कर्म के आरोपी

एजेंसी । नयी दिल्ली

देश में 151 मौजूदा सांसदों और विधायकों ने अपने चुनावी हलफनामों में महिलाओं के खिलाफ अपराध से संबंधित मामलों की जानकारी दी है. इनमें पश्चिम बंगाल के सांसदों और विधायकों की संख्या सबसे अधिक है. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई. एडीआर ने 2019 और 2024 के बीच चुनावों के दौरान निर्वाचन आयोग को सौंपे गए मौजूदा सांसदों और विधायकों के 4,809 हलफनामों में से 4,693 की जांच की, जिसके बाद महिलाओं के खिलाफ अपराध से संबंधित मामलों का सामना कर रहे 16 सांसदों और 135 विधायकों को चिह्नित किया गया.

आरोपी माननीयों में बंगाल शीर्ष पर : रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के खिलाफ अपराध से संबंधित आरोपों का सामना कर रहे 25 सांसदों और विधायकों के साथ पश्चिम बंगाल शीर्ष पर है, जिसके बाद आंध्र प्रदेश में 21 और ओडिशा में 17 सांसद-विधायक हैं. यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है जब कोलकाता के एक सरकारी अस्पताल में प्रशिक्षु चिकित्सक के साथ कथित बलात्कार और हत्या तथा ठाणे में दो बच्चियों के यौन उत्पीड़न की घटनाओं को लेकर देशव्यापी विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं. रिपोर्ट के अनुसार, 16 मौजूदा सांसद और विधायक ऐसे हैं, जिन्होंने आईपीसी की धारा 376 के तहत बलात्कार से संबंधित मामलों की जानकारी दी है. इनमें से दो सांसद और 14 विधायक हैं.

भाजपा के सांसद-विधायक सबसे अधिक : रिपोर्ट के अनुसार, राजनीतिक दलों में सबसे अधिक भाजपा के 54 सांसद और विधायक हैं, जिनके खिलाफ महिलाओं के खिलाफ अपराध से संबंधित मामले हैं. इसके बाद कांग्रेस के 23 और तेलुगु देशम पार्टी के 17 सांसद-विधायक हैं. भाजपा और कांग्रेस दोनों के ही पांच-पांच मौजूदा सांसद-विधायक बलात्कार के आरोपों का सामना कर रहे हैं.

एडीआर रिपोर्ट की मुख्य बातें

- 16 सांसदों, 135 विधायकों पर महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले
- पार्टी के तौर पर भाजपा के सबसे अधिक आरोपी, बंगाल के माननीय सबसे अधिक

अस्पताल में तोड़फोड़ मामले में तीन निलंबित

कोलकाता। पुलिस ने पिछले सप्ताह आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में हुई तोड़फोड़ के सिलसिले में अपने तीन अधिकारियों को निलंबित कर दिया है. अधिकारियों ने बताया कि निलंबित पुलिसकर्मियों में दो सहायक पुलिस आयुक्त शामिल हैं. बता दें कि बीते 15 अगस्त को तड़के कुछ लोगों ने आरजी कर अस्पताल में घुस कर आपातकालीन विभाग, नर्सिंग स्टेशन और दवा घर में तोड़फोड़ की थी.

भारत के खिलाफ चीन की साजिश को सैटेलाइट तस्वीरों ने किया बेपर्दा

एलएसी के पास बनाया छह हेलीस्ट्रिप

लगातार । न्यूज नेटवर्क

भारत के पूर्वी लद्दाख और अरुणाचल को अपना हिस्सा बताने वाले चीन ने एक बार फिर भारत के खिलाफ साजिश रचना शुरू कर दिया है. चीनी सेना ने लद्दाख से लगनेवाली वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास छह हेलीस्ट्रिप बनाई है. इस खुलासा सैटेलाइट तस्वीरों से हुआ है. लद्दाख के डेमचोक से इन लद्दाख से 160 किमी दूरकी दूरी करीब 160 किलोमीटर है. चीन यहां से भारतीय सेना के टैंकों और अन्य बड़े हथियारों को निशाना बना सकता है.

भारतीय व चीनी सेनाओं का संघर्ष क्षेत्र रहा है डेमचोक : डेमचोक एलएसी के पास ही है और भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच संघर्ष क्षेत्र रहा है. यहां भारत और चीन की सेना आमने-सामने तैनात रहती हैं. फिलहाल भारत सरकार की तरफ से इस मुद्दे पर कोई जवाब नहीं आया है. एक मीडिया रिपोर्ट की मानें, तो यह हेलीस्ट्रिप गेयायी नाम की जगह पर बनाया गया है, पर यहां कंस्ट्रक्शन का काम पूरा नहीं हुआ है. सैटेलाइट तस्वीरों से जाहिर होता है कि यहां पर छह हेलीस्ट्रिप तैयार की जा रही है. मतलब साफ है कि यहां आधा दर्जन से अधिक हेलीकॉप्टर एक साथ तैनात किए जा सकते हैं.

रिपोर्ट बाहर आने के बाद कांग्रेस का मोदी पर निशाना

चीन की सेना ने लद्दाख से सटी एलएसी के पास छह हेलीस्ट्रिप बनाए जाने की मीडिया रिपोर्ट बाहर आने के बाद कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है. ऑफिसियल 'एक्स' हैंडल पर पोस्ट में कहा है कि चीन बॉर्डर पर अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा. एक बार फिर सैटेलाइट तस्वीरों से इस बात का खुलासा हुआ है. चीन लगातार एलएसी पर दखल दे रहा है, लेकिन नरेंद्र मोदी खामोश हैं. जो मोदी चीन को 'लाल आंख' दिखाने की बातें करते थे, आज वे चीन का नाम तक नहीं ले पा रहे हैं. चीन ऐसी हिमाकत सिर्फ इसलिए कर पा रहा है, क्योंकि मोदी चीन को पहले ही क्लीन चिट दे चुके हैं.

खुलासा — द लांसेट डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी' पत्रिका में प्रकाशित विश्लेषण ने चौंकाया

रेड मीट खाने से टाइप-2 मधुमेह का खतरा अधिक

एजेंसी । नयी दिल्ली

दक्षिण-पूर्व एशिया सहित दुनिया भर के 20 देशों के 19 लाख से अधिक वयस्कों पर किए अध्ययन के अनुसार रेड मीट का सेवन टाइप-2 मधुमेह के खतरे को बढ़ाता है. 'द लांसेट डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी' पत्रिका में प्रकाशित विश्लेषण में पाया गया है कि रोज 50 ग्राम प्रसंस्कृत मांस, 100 ग्राम असंसाधित रेड मीट और 100 ग्राम पोल्ट्री मांस लेने से टाइप-2 मधुमेह होने के खतरा क्रमशः 15 प्रतिशत, 10 प्रतिशत और आठ प्रतिशत अधिक है.

अमेरिका, ब्रिटेन, ब्राजील, मेक्सिको सहित अन्य देशों के शोधकर्ताओं की अंतरराष्ट्रीय टीम ने कहा कि दुनिया के कई क्षेत्रों में मांस का सेवन अनुशंसित स्तर से अधिक है और इसका संबंध टाइप-2 मधुमेह सहित गैर-संचारी रोगों से है. उन्होंने कहा कि हालांकि, सभी मौजूदा सबूत काफी हद तक उच्च आय वाले देशों, मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका और यूरोप के अध्ययनों पर आधारित हैं. इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने 31 समूहों को शामिल किया, जिसके लिए डेटा वैज्ञानिक अध्ययन और ऑनलाइन रजिस्ट्री से संकलित किया गया था. अध्ययन में भाग लेने वाले 19,66,444 लोगों में से एक लाख से अधिक लोगों को टाइप-2 मधुमेह हुआ, जो आम तौर पर 10 वर्ष तक रहता है.

शोधकर्ताओं ने कहा, टाइप-2 मधुमेह के साथ असंसाधित रेड मीट और प्रसंस्कृत मांस का सकारात्मक संबंध अमेरिका के क्षेत्र में (क्रमशः 13 और 17 प्रतिशत), यूरोपीय क्षेत्र में (छह और 13 प्रतिशत) अधिक था. वहीं, पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र व पूर्वी एशिया में (17 और 15 प्रतिशत) पाया गया. हालांकि, शोधकर्ताओं को इस बात का कोई सबूत नहीं मिला कि पोल्ट्री के बजाय असंसाधित रेड मीट का सेवन करने से मधुमेह के खतरे को कम करने में मदद मिलती है.

- दुनिया के कई क्षेत्रों में मांस का सेवन अनुशंसित स्तर से अधिक
- काफी हद तक उच्च आय वाले देशों के वयस्कों पर है अध्ययन

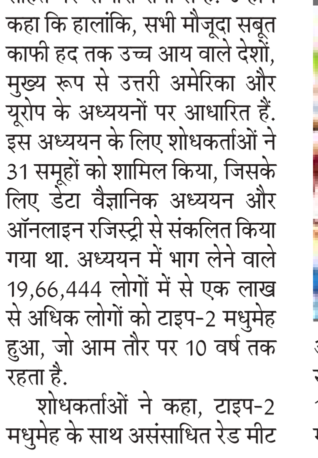

संतुलित आहार लेना जरूरी

इस शोध से साफ है कि रेड मीट का अधिक सेवन करने से टाइप 2 डायबिटीज का खतरा बढ़ सकता है. इसलिए, अगर आप अपनी सेहत को बेहतर बनाए रखना चाहते हैं, तो रेड मीट की मात्रा को कम करना और संतुलित आहार लेना जरूरी है. इसके अलावा, मांस के हेल्थ ऑप्शन जैसे कि पोल्ट्री या अनप्रोसेस्ड रेड मीट का सेवन करने से डायबिटीज के खतरे को कुछ हद तक कम किया जा सकता है. इसका मतलब यह भी है कि अपने खान-पीने की आदतों पर ध्यान देना और जरूरत के मुताबिक इसमें सकारात्मक बदलाव जरूरी है.

युद्धग्रस्त क्षेत्र में शांति व स्थिरता बहाली की उम्मीद : नरेंद्र मोदी

एजेंसी । नयी दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि वह यूक्रेन में जारी संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान पर अपना दृष्टिकोण साझा करने के लिए राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की के साथ पहले की बातचीत को आगे बढ़ाने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं. पोलैंड और यूक्रेन की आधिकारिक यात्रा पर रवाना होने से पहले जारी एक बयान में मोदी ने युद्धग्रस्त क्षेत्र में शांति और स्थिरता की जल्द बहाली की उम्मीद भी जताई.

इस दौरे के पहले चरण में मोदी बुधवार को पोलैंड की राजधानी वॉरसा पहुंचे. वे यहां 22 अगस्त तक रहेंगे. पोलैंड में अपने प्रवास के दौरान मोदी, राष्ट्रपति आंद्रेज सेबेस्टियन डूडा से मिलेंगे और प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे. इसके बाद वे 23 अगस्त को यूक्रेन की राजधानी कीव भी जाएंगे और यूक्रेन संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान पर राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की के साथ विचार साझा करेंगे. कीव में मोदी सात घंटे रहेंगे. बता दें कि पीएम मोदी, यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के निमंत्रण पर यूक्रेन का दौरा कर रहे हैं. यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यूक्रेन की पहली यात्रा है. मोदी ने कहा है कि एक मित्र और साझेदार के रूप में हम क्षेत्र में शांति और स्थिरता की शीघ्र बहाली की उम्मीद करते हैं.

- पोलैंड और यूक्रेन की आधिकारिक यात्रा पर पीएम

धनबाद में भारत बंद रहा असरदार

श्याडीह में टायर जलाकर बंद समर्थकों ने किया सड़क जाम

▪ कतरास तेतुलमारी मधुबन सोनारडीह सहित अन्य इलाकों ने नहीं दिखा बंदी का कोई खासा असर

संवाददाता । कतरास

बुधवार कतरास, तेतुलमारी, मधुबन, सोनारडीह ,सहित अन्य इलाकों में भारत बंद का मिला जुला असर देखने को मिला.कतरास के श्याडीह में सुबह बंद समर्थक कांग्रेस नेता राजेश राम के नेतृत्व में सड़कों उतरकर बंद दुकानों को बंद करवा दिया. इस दौरान बंद समर्थकों ने कतरास बाघमारा मुख्य मार्ग पर टायर जलाकर विरोध प्रदर्शन करते हुए यातायात बाधित कर दिया. कुछ देर तक सड़कों की दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लगी रही हालांकि कतरास पुलिस के प्रयास से यातायात सुचारू किया.

वहीं कतरास बाजार पंचगढ़ी में बंदी का कोई असर देखने को नहीं मिला.प्रतिदनिकी तरह दुकानें खुली रहीं हालांकि सड़कों पर वाहनों का आवागमन अन्य दियों के अपेक्षा कुछ कम दिखाई दी. मधुबन थाना क्षेत्र के सेनीडीह में बंद समर्थक सुबह कुछ समय के लिए बोकारो राजगंज एनएच मार्ग पर विरोध प्रदर्शन कर लौट गए. इधर बंदी को कतरास तेतुलमारी मधुबन पुलिस लगातार इलाके में गश्त करती दिखी. एहतियात के तौर पर कतरास तेतुलमारी मधुबन सोनारडीह सहित अन्य अधिकतर निजी स्कूलों में पहले ही छुट्टी की घोषणा कर दी गई थी. लंबी दूरी की बसों का परिचालन बंद रहा. छोटे वाहन आम दिन की ही तरह चल रहे हैं. श्याडीह में कांग्रेस नेता राजेश राम , दिलीप दास भीम कुमार दास, मदन कुमार दास,रामसुंदर दास, कार्तिक दास, सुरेंद्र दास, दिलु कुमार दास, धनंजय दास, जावेद अंसारी, एहसान अंसारी, कमरुद्दीन अंसारी, इसराइल अंसारी, जनार्दन ठाकुर , राजेश कुमार दास, जयराम दास ,अजय दास सहित अन्य लोग बंदी के समर्थन में सड़क पर उतरे थे.

सड़क पर उतरे बंद समर्थक बाजारों में पसरा रहा सन्नाटा

धनबाद । एससी–एसटी आरक्षण में क्रीमिलेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के आह्वान पर भारत बंद पूरी तरह सफल रहा. समिति के बंद का समर्थन बसपा, कांग्रेस और झामुमो ने भी किया था. धनबाद में बंद समर्थक सड़कों पर उतर कर बंद को सफल बनाए. बरटांड बस स्टेंड, झरिया कतरास मोड़, बस्ताकोला, लोदना मोड़ समेत अन्य जगहों पर बांस लगाकर सड़क मार्ग अवरूद्ध किया गया, जिससे वाहन नहीं चले. विभिन्न इलाके में सड़कों पर सन्नाटा पसरा था. बंद के दौरान किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पुलिस मुस्तैद दिखी. बंद को देखते हुए रेल पुलिस को अलर्ट रहने का निर्देश दिया गया था. रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ के जवान गश्ती कर रहे थे. झरिया–सिंदरी मुख्य मार्ग पर बस्ताकोला में बंद समर्थक सड़क पर उतर कर सड़क किया. सड़क जाम के कारण आवागमन पूरी तरह बाधित रहा. सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए सिंदरी डीएसपी, झरिया सीओ समेत कई थानों की पुलिस सड़कों पर निगरानी कर रहे थे. कई बंद समर्थकों को हिरासत में भी लिया गया.

बीसीसीएल : प्रतिदिन उत्पादन रिपोर्ट

एरिया		कोल	ट्रांसपोर्ट
बरोरा	–	16,004 टन	14,485 टन
ब्लॉक-2	–	14,004 ”	14,899 ”
गोविंदपुर	–	1,742 ”	2,100 ”
कतरास	–	7,125 ”	6,794 ”
सिजुआ	–	7,415 ”	4,816 ”
कुसुंडा	–	12,013 ”	6,059 ”
पंजाब	–	504 ”	0 ”
बस्ताकोला	–	11,048 ”	6,665 ”
लोदना	–	11,060 ”	5,857 ”
ईजे	–	10,010 ”	0 ”
सीवी	–	1,700 ”	0 ”
डब्ल्यू जे	–	515 ”	0 ”
कुल		93,140	61,675

भारत बंद समर्थकों ने निकाली बाइक रैली

सुप्रीम कोर्ट के फैसले को वापस लेने की मांग

चिरकुंडा । चिरकुंडा नगर परिषद् क्षेत्र में भारत बंद के समर्थन में एससी–एसटी, ओबीसी काउंसिल के बैनर तले बुधवार को बाइक रैली निकाली गई. रैली जीटी रोड और नेहरु रोड होकर शहीद चौक पहुंची, जहां शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई. इसके बाद तीन नंबर अंबेडकर चौक पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया. यहां नुक्कड़ सभा कर एससी–एसटी आरक्षण में क्रीमिलेयर के वर्गीकरण संबंधी सुप्रीम कोर्ट के फैसले को वापस लेने की मांग की गई. वक्ताओं ने कहा कि यह उनके अधिकारों को छिनने का षड़यंत्र है. मौके पर महासचिव प्रभुनाथ पासवान, चंद्रशेखर आर्य, काजल बाउरी, एसपी चौहान, मोहन सिंह यादव, जिप सदस्य सह झामुमो नेता गुलाम कुरैशी, पीएल मुर्मू, लखी देवी, रंजीत बाउरी, अशोक कुमार, प्रमोद रजक आदि उपस्थित थे.

भाजपा षड्यंत्र कर एससी/एसटी कानून को समाप्त करना चाह रही : अमितेश सहाय

धनबाद । भारत बन्द के दौरान झामुमो केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य अमितेश सहाय ने कहा कि भाजपा एससी/एसटी कानून को षड़्यंत्र कर समाप्त करना चाह रही है. जिससे देश की आम जनता में काफी आक्रोश है. भाजपा देश की संविधान के साथ पूरी तरह छेड़छाड़ करने में तुली हुई है. झामुमो भाजपा की इस चाल को कभी सफल होने नहीं देगी. झामुमो जनहित को सर्वोपरि रखते हुए कार्य करते रहेगी. झारखण्ड में भी भाजपा ने अनेकों बार षड़्यंत्र कर हेमन्त सोरेन की सरकार को अपदस्थ करने का कुप्रयास किया लेकिन भाजपा नाकाम रही. आने वाले चुनाव में भाजपा को जनता कड़ी रूप से सबक सिखाएगी. झामुमो भारत बन्द की इस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए सड़कों पर उतर गई है.

हरिणा डुमरा बाजार में दुकानदार की पिटाई

बाघमारा में सड़कों पर उतरे समर्थक

भीड़ से बचाकर पुलिस ले गई थाने

संवाददाता । बरोरा

भारत बंद का व्यापक असर बाघमारा प्रखण्ड के हरिणा में देखने को मिला. एसटी–एससी समाज के लोगों के अलावे आजाद दल,वामसेफ, भीम आर्मी, झामुमो, कांग्रेस अन्य संगठनों ने बन्दी का साथ दिया. सुप्रीम कोर्ट फैसले की निंदा की .सुबह 9 बजे से ही बंद समर्थकों हरिणा विवेकानंद चौक को पूर्ण रूप से जाम कर सड़क पर बैठ गए. इसकी वजह से घंटों वाहनों का आवागमन ठप हो गया. सड़कों पर गाड़ियों की लंबी कतार लग गई छोटे वाहनों से लेकर बड़े वाहनों को सभी को रोक दिया गया. बंदी का असर ऐसा था कि पूरा हरिणा डुमरा बाजार में सन्नाटा छाया रहा. हरिणा बैंक ऑफ इंडिया के समीप दुकानदार से मारपीट की गई. बरोरा एवं बाघमारा पुलिस ने दुकानदार की जान बचाई. बंदी कर रहे महिलाओं ने आरोप लगाया कि दुकानदार बिनोद साव ने उनपर अभद्र भाषा का प्रयोग किया. आपत्तिजनक बात कही, जाति सूचक शब्द का इस्तेमाल किया. इसी बात को लेकर सभी ने उसके साथ मारपीट करने लगे. स्थिति को बिगड़ता देख बरोरा थाना प्रभारी एवं बाघमारा थाना प्रभारी ने मुश्किल से भिड़ से निकालकर जान बचाते हुए थाना ले गए. देर शाम तक यहां जाम लगा रहा.

एसडीएम की गाड़ी को बंद समर्थकों ने रोका

▪ स्टेशन रोड रहा वीरान, दुकानें रही बंद

धनबाद । एससी–एसटी आरक्षण में क्रीमिलेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के आह्वान पर बुधवार को भारत बंद रहा. इस दौरान बंद समर्थकों ने रणधीर वर्मा चौक पूरी तरह जाम कर दिया है. दोपहर एक बजे एसडीएम की गाड़ी गुजर रही थी. बंद समर्थकों ने उनकी गाड़ी को भी रोक दिया. मजबूरन एसडीएम उदय रजक को अपनी गाड़ी वापस घुमानी पड़ी. रणधीर वर्मा चौक से एक भी दो पहिया और चार पहिया वाहनों को नहीं गुजरने दिया गया. बंद समर्थकों के साथ पत्रकारों की हल्की नोक–झोंक हुई.

बंदी के कारण धनबाद स्टेशन रोड पर सन्नाटा पसरा रहा. सड़क किनारें सभी दुकानें बंद थी. सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस गश्ती कर रही थी.

टुंडी-गिरिडीह मुख्य मार्ग रहा घंटों जाम

टुंडी प्रखंड में भारत बंद पूरी तरह सफल रहा. बंद समर्थकों ने सड़क पर उतर कर टुंडी–गिरिडीह मुख्य मार्ग कदमाहरा भुरसा बांक के पास जाम किया. जाम के कारण सड़क पर वाहन की कतारें लग गई. इस मार्ग से होकर गुजरने वाले वाहनों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा. मौके पर विधायक प्रतिनिधि फुलचंद किस्कू, टुंडी प्रखंड 20 सूत्री अध्यक्ष अध्यक्ष इंद्रलाल बास्की, लाल बास्की, कामेश्वर सिंह, अजीमुद्दीन अंसारी, श्रवण बेसरा, बालेश्वर सोरेन समेत दर्जनों बंद समर्थक मौजूद थे.

भारत बंद राजगंज में असरदार, हाईवे जाम

राजगंज में भारत बंद असरदार रहा. झामुमो कार्यकर्ताओं ने भारत बंद का समर्थन करते हुए महेशपुर के पास नेशनल हाईवे करी दो घंटे तक जाम किया, जिससे सड़क के दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गई. बड़े वाहनों से लेकर छोटे वाहनों तक को नहीं गुजरने दिया गया. सड़क जाम कर रहे झामुमो कार्यकर्ताओं को हटाने पहुंचे राजगंज थाना प्रभारी से बंद समर्थकों की तीखी नोकझोंक भी हुई. राजगंज समेत आसपास के इलाके में सभी शिक्षण संस्थानों को बंद रखा गया. मौके पर रतिलाल टुडू, सनातन सोरेन, मनसा मुर्मू समेत झामुमो के सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे.

तोपचांची में नेशनल हाइवे को बंद समर्थकों ने कर दिया जाम

तोपचांची में भारत बंद का असर देखा गया. हाथों में झंडा थामे बंद समर्थक नारे लगाते हुए सुभाष चौक पहुंचे और नेशनल हाइवे को जाम कर दिया. इस दौरान बंद समर्थकों ने हंगामा भी किया. बंद का समर्थन करने टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो मौके पर पहुंचे. कहा कि आन्दोलन करने वाले लोगों की मांग जायज है सुप्रीम कोर्ट को अपने फैसले पर पुनर्विचार करना चाहिए. कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तोपचांची पुलिस मुस्तैद दिखी. बंद समर्थकों के साथ कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष मुकेश प्रसाद, राजद नेत्री गुलशन खातून, तोपचांची प्रखंड प्रमुख आंनद महतो, संतोष दास, बालेश्वर दास, बैजनाथ दास, मोहन दास, सीताराम दास, भोला राम सहित अन्य उपस्थित थे.

निरसा अनुमंडल क्षेत्र में बंद का मिला-जुला असर

निरसा : सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के भारत बंद का मिला जुला असर निरसा अनुमंडल क्षेत्र में देखने को मिला. झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस ने करीब एक घंटे तक जीटी जाम रखा. मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिप सदस्य गुलाम कुरैशी, कांग्रेस के सुधांशु शेखर झा, रजक समाज के प्रभू पासवान समेत काफी संख्या में बंद समर्थक मौजूद थे. पतलबाड़ी मोड स्थित टाटा पुरुलिया रोड और चिरकुंडा बलियारपुर रोड को जाम कर विरोध जताया. इसके कारण कई संस्थान बंद रही जबकि वाहनों का परिचालन ठप रहा. झामुमो नेता बोदी लाल हांसदा ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार की मंशा को किसी भी कीमत पर सफल होने नहीं देंगे. आरक्षण को खत्म करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के द्वारा जो एससी एस टी रिजर्वेशन में सब कैटिगरी बनाई गई है. वह गलत है1 पहले ही हमलोगों को काफी दबाया जा चुका है. अगर इस तरह की रिजर्वेशन में कटौती की जाएगी तो उनके आने वाली नस्लों को काफी दिक्कतों का सामना पड़ सकता है.

मेंहदी लगाकर स्कूल जाने पर निकाली गई पचास छात्राएं

▪ रक्षा बंधन के दूसरे दिन मेहंदी लगाकर छात्राएं पहुंची थीं स्कूल

▪ प्राचार्या ने कहा, छात्राओं को क्लास के बाहर बुलाकर समझाया गया था

संवाददाता । चिरकुंडा

लोयला स्कूल चिरकुंडा में मेंहदी लगाकर रक्षाबंधन के दूसरे दिन मंगलवार को स्कूल गई पचास से अधिक छात्राओं को क्लास से बाहर निकाले जाने का मामला प्रकाश में आया है. हालांकि कुछ देर के बाद क्लास में छात्राओं को वापस भेज दिया गया. मामले की खबर पाने के बाद अभिभावकों ने कहा कि रक्षाबंधन के त्योहार में बच्चियां शौक से मेहंदी लगाती हैं व इसके दूसरे दिन ही बच्चों का स्कूल रहता है. ऐसे में मेंहदी को छुटा पाना बहुत ही मुश्किल होता है. इसलिए स्कूल प्रबंधन को बच्चियों को मेहंदी पर थोड़ा नजरअंदाज करनी चाहिए. लोयला स्कूल के प्राचार्य जानी पी देवासिया ने कहा कि मेंहदी लगाकर छात्राओं को स्कूल के कक्षा में आना मना है फिर भी कुछ छात्राएं मेंहदी लगाकर स्कूल आई थी. मेंहदी लगाकर आई छात्राओं को को क्लास से बुलाकर समझाया गया कि यह स्कूल के नियमानुसार नहीं है.आइंदा मेहंदी लगाकर कक्षा में नही आएं. इसके बाद सभी छात्राओं को क्लास में भेज दिया गया.

प्रेस क्लब कमेटी ने सीएमडी से की मुलाकात

धनबाद । धनबाद प्रेस क्लब की नई कमेटी ने बुधवार को बीसीसीएल के सीएमडी समीरन दत्ता से उनके कार्यालय में मुलाकात की. इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें प्रेस क्लब का प्रतीक चिह्न भेंट किया. सीएमडी ने प्रतिनिधिमंडल के माध्यम नई कमेटी को शुभकामनाएं दी. साथ ही कहा कि नई कमेटी के नेतृत्व में धनबाद प्रेस क्लब विकास की राह पर आगे बढ़ेगा और पत्रकारों के लिए अच्छा काम करेगा. उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि प्रेस क्लब का हरसंभव मदद किया जाएगा. बीसीसीएल प्रबंधन हमेशा पत्रकारों का हितैषी रहा है. प्रतिनिधिमंडल में प्रेस क्लब के अध्यक्ष संजीव झा, महासचिव अजय प्रसाद, सचिव संजय चौरसिया, सचिव चंदन पाल, कार्यकारिणी सदस्य विपिन कुमार रजक शामिल थे.

असेंबली लेवल मास्टर ट्रेनरों को दिया एमसीसी का प्रशिक्षण

संवाददाता । धनबाद

आगामी विधान सभा चुनाव को लेकर असेंबली लेवल मास्टर ट्रेनरों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दूसरे दिन पुराने डीआरडीए सभागार में बीएलओ प्रशिक्षण, पोस्टल बैलेट प्रशिक्षण, आदर्श आचार संहिता प्रशिक्षण एवं सेक्टर पदाधिकारियों के प्रशिक्षण मॉड्यूल पर विस्तृत चर्चा कर बारीकियों से सभी प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया गया. मुख्य प्रशिक्षक दिलीप कुमार कर्ण ने सेक्टर पदाधिकारियों के कार्य एवं दायित्व के बारे में समझाया. वहीं अन्य प्रशिक्षक कुलदीप ने आदर्श आचार संहिता के तमाम बिंदुओं पर प्रकाश डाला. महफूज आलम ने पोस्टल बैलेट तथा होम वोटिंग के माध्यम से मतदान किए जाने की जानकारी दी. इसके अतिरिक्त पुष्कर चंद्र झा ने निर्वाचन कार्य में बीएलओ की भूमिका के बारे में बताया. अन्य मुख्य प्रशिक्षक राज कुमार वर्मा ने मतदान संपन्न होने के उपरांत सामग्रियों को जमा करने के दौरान प्रक्रिया को सरल करने के कुछ उपाय सुझाए. गुरुवार, प्रशिक्षण के अंतिम दिन, ईवीएम के विभिन्न भाग एवं कमीशनिंग की जानकारी, माइक्रो आब्जर्वर के कार्य, रिसीलिंग तथा काउंटिंग की जानकारी दी जायेगी.

तैयारी सेक्टर मजिस्ट्रेट को चुनाव से पूर्व तीन बार अपने मतदान केंद्रों के भ्रमण का निर्देश

वल्नरेबल मैपिंग रिपोर्ट तैयार करें : उपायुक्त

खास बातें

- सेक्टर पुलिस पदाधिकारियों को प्रशिक्षण
- वल्नरेबल मैपिंग चुनाव प्रक्रिया की महत्वपूर्ण कड़ी

संवाददाता । धनबाद

विधानसभा चुनाव को लेकर बुधवार को उपायुक्त माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में न्यू टाउन हॉल में सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं सेक्टर पुलिस पदाधिकारियों को वल्नरेबल मैपिंग से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया. इस अवसर पर उपायुक्त ने कहा कि सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट संबंधित थाना प्रभारी से संपर्क करके ही वल्नरेबल मैपिंग रिपोर्ट तैयार करेंगे. रिपोर्ट तैयार करते समय वहां की विधि व्यवस्था, अपराधिक घटनाएं, पूर्व के चुनाव में घटित घटनाएं, राजनीतिक प्रतिद्वंद्वता, धन-बल का प्रभाव सहित बताए गए अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखकर समझदारी से रिपोर्ट तैयार करें. उन्होंने कहा कि वल्नरेबल मैपिंग चुनाव प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण कड़ी है.

करोड़ों लोगों को हमारी निर्वाचन प्रक्रिया पर भरोसा है. हम सब इस मजबूत व्यवस्था का एक अंग है. जिस प्रकार आपके योगदान से लोकसभा चुनाव सुचारू रूप से संपन्न हुए उसी प्रकार अपने दायित्व का निर्वाहन करते हुए विधानसभा चुनाव को सुचारू रूप से संपन्न कराना है. साथ ही उपायुक्त ने सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट को चुनाव से पूर्व सेक्टर पुलिस पदाधिकारी के साथ तीन बार अपने मतदान केंद्रों का भ्रमण करने का निर्देश दिया. प्रशिक्षण के दौरान सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं सेक्टर पुलिस पदाधिकारियों को मतदान के दिन की जिम्मेदारी, एश्योर्ड मिनिमम फैसिलिटी, मॉडल कोड ऑफ़ कंडक्ट, मतदान के दिन की सुविधा, कतार मैनेजमेंट, मतदाता सुविधा पोस्टर का प्रदर्शन, पोलिंग स्टेशन लेआउट, वोटिंग कंपार्टमेंट, मतदान सामग्री की सीलिंग एवं पैकेजिंग, चुनाव के बाद की जिम्मेदारी सहित अन्य बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया गया. मौके पर उपायुक्त माधवी मिश्रा, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर हेमा प्रसाद, निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन, डीसीएलआर संतोष कुमार गुप्ता, विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी जियाउल अंसारी, उप निर्वाचन पदाधिकारी कालिदास मुंडा, जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप कुमार शुक्ला के अलावा मास्टर ट्रेनर दिलीप कुमार कर्ण, राजकुमार वर्मा, कुमार वंदन मौजूद थे.

वेस्ट मोदीडीह में संयुक्त मोर्चा की बैठक

तेतुलमारी । संयुक्त मोर्चा समर्थकों की बैठक बुधवार को वेस्ट मोदीडीह नौ नंबर हाजिरी घर के समीप आयोजित की गई. माइंस व परियोजना को प्रबंधन द्वारा बंद करने को लेकर कई रणनीति बनाई है. मोर्चा समर्थकों का कहना था कि वेस्ट मोदीडीह परियोजना को सुरक्षित रखने और विस्तारीकरण करने व बेहतर कोयले का उत्पादन करने को लेकर यहां अच्छी मशीनें उपलब्ध है, लेकिन प्रबंधन उक्त मशीनों को दूसरे जगह स्थानांतरण करने की योजना बना रही हैं, मशीन चले जाने से कोयले का उत्पादन कम हो जाएगा. इसलिए मशीन को यहां से स्थानांतरण नहीं करने दिया जाएगा. बैठक में मजदूर नेता आरके तिवारी,चंदन महतो, अरशद हुसैन,युसूफ अंसारी, भगवान सिंह, कृष्ण कुमार सिंह, आरके तिवारी, राजेश सिंह आदि थे.

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | धनबाद, गुरुवार 22 अगस्त 2024 ● भाद्रपद कृष्ण पक्ष 03, संवत 2081 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ 6 ● वर्ष : 2, अंक : 134 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

ब्रीफ खबरें

मटकुरिया गोलीकांड में गवाह मुकरा

धनबाद : मटकुरिया गोलीकांड की सुनवाई बुधवार को जिला एवं सत्र न्यायाधीश दुर्गेश चंद्र अवस्थी की अदालत में हुई. सुनवाई के दौरान अभियोजन की ओर से सहायक लोक अभियोजक उमेश दीक्षित ने गवाह युगल किशोर रिटोलिया का बयान दर्ज कराया. अभियोजन ने अब तक 30 गवाहों का मुख्य परीक्षण कराया है. गवाह ने अदालत को दिए बयान में घटना का समर्थन नहीं किया. अदालत ने सहायक लोक अभियोजक को गवाह पेश करने का आदेश दिया है. सुनवाई के दौरान आरोपी पूर्व मंत्री मन्नान मल्लिक, व अन्य हाजिर नहीं थे. बताते चलें कि 27 अप्रैल 2011 को मटकुरिया में बीसीसीएल के आवासों को अतिक्रमण से मुक्त कराने गये पुलिस बल के साथ आंदोलनकारियों की हिंसक झड़प हुई थी. घटना में तत्कालीन एसपी आरके धान जख्मी हो गए थे. वारदात में विकास सिंह समेत चार लोगों की मौत हो गई थी. तत्कालीन एसडीओ जॉर्ज कुमार के लिखित प्रतिवेदन पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की थी.

गोमो में बन्द बेअसर खुले रहे बाज़ार

गोमो। एससी-एसटी आरक्षण में क्रीमिलेयर के वर्गीकरण संबंधी सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ विभिन्न संगठनों के आह्वान पर भारत बंद गोमो में बेअसरदार रहा. सामान्य दिनों की तरह यहां के बाजार खुले रहे. सड़कों पर दो पहिया और चार पहिया वाहन चलते रहे. बन्द के समर्थन में किसी भी राजनीतिक दल के कार्यकर्ता सड़क पर नहीं उतरे.

घर के सामने खड़ी बाइक चोरी

मैथन। निरसा थाना अंतर्गत टेलीफोन एक्सचेंज के समीप रहने वाले शाहीद अंसारी की हीरो ग्लैमर बाइक (जेएच 10 बीजेड 5267) बुधवार को उनके घर के सामने से चोरी हो गई. इस संबंध में भुक्तभोगी ने निरसा थाना में शिकायत दर्ज कराई है. पुलिस मामले की छानबीन कर रही है. शाहीद अंसारी बताया कि बुधवार की दोपहर वह अपने घर के सामने बाइक खड़ी कर घर के अंदर गया. थोड़ी देर बाद बाहर आने पर बाइक गायब दिखी. काफी खोजबीन के बाद बाइक नहीं मिलने पर थाने में शिकायत दर्ज कराई.

चेंबर ऑफ़ कॉमर्स प्रतिनिधिमंडल ने बीडीओ-सीओ से की मुलाकात

निरसा। निरसा चेंबर ऑफ़ कॉमर्स के एक प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को बीडीओ और सीओ से मुलाकात कर निरसा बाजार में आए दिन लगने वाले जाम की समस्या से अवगत कराकर निराकरण करने की मांग की. बीडीओ और सीओ ने जाम की समस्या से निजात दिलाने का आश्वासन प्रतिनिधिमंडल को दिया. प्रतिनिधिमंडल में अध्यक्ष शिवकुमार अग्रवाल, सचिव राहुल गोयल, कोषाध्यक्ष दिलीप मिश्रा, सोनू साव, हाशीम अंसारी, सुखेंदु दत्ता, श्याम बिहारी, शम्स आलम, तेज प्रकाश खेड़िया, कमल खेड़िया, पप्पू बर्मन, स्वरूप चक्रवर्ती, सनातन डे शामिल थे.

भारत बंद : जाम ने ली किशोरी की जान

बाइक दुर्घटना में जख्मी हुई थी किशोरी, जाम के कारण समय पर नहीं पहुंच पाई अस्पताल

संवाददाता। धनबाद

भारत बंद के कारण धनबाद में सड़क दुर्घटना में जख्मी निरसा की एक किशोरी की जान चली गई. एसटी-एससी आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ बंद की वजह से कई स्थानों पर बैरिकेडिंग लगाकर सड़क जाम कर दिया गया था. जाम के कारण युवती को अस्पताल पहुंचाने में देर हो गई और अस्पताल पहुंचने के बाद कुछ देर में उसने दम तोड़ दिया. निरसा की रहने वाली लगभग 14 वर्षीय पायल कुमारी नामक बुधवार को अपने घर के समीप अज्ञात बाइक की चपेट में आ गई.वह गंभीर रूप से जख्मी हो गई थी. पायल को परिजन निजी वाहन से धनबाद के

▪ ईमरजेंसी में भर्ती के बाद कुछ क्षणों में तोड़ दिया दम

पायल कुमारी

अस्पताल ले जा रहे थे. लेकिन बंदी के कारण जगह-गजह जाम लगा था. एसएनएमएमसीएच ले जाने के दौरान काफी देर हो गई. एसएनएमएमसीएच की इमरजेंसी में डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरू किया, लेकिन कुछ पलों में ही किशोरी की मौत हो गई.

झरिया के बस्ताकोला में जाम में फंसी एंबुलेंस

कई दुकानों में तोड़फोड़, झरिया से दो दर्जन बंद समर्थक गिरफ्तार

धनबाद। एससी-एसटी आरक्षण में क्रीमिलेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ धनबाद में बंद असरदार रहा. दस बजे के बाद धनबाद के विभिन्न इलाकों में बंद समर्थकों ने सड़क जाम कर दिया. शहरी व ग्रामीण इलाकों में घंटों तक आवागमन बाधित रहे. कई स्थानों पर जबरन दुकानें बंद कराई गई. इस कारण विवाद हो गया. सरायढेला के डोमिनोज में बंद समर्थकों ने तोड़फोड़ कर दिया. वहीं श्यामडीह कतरास में भी दुकानदार की पिटाई कर दी गई, पुलिस की हस्तक्षेप से दुकानदार को भीड़ से बचाया गया. झरिया पुलिस बस्ताकोला में सड़क जाम कर प्रदर्शन कर से दो दर्जन अधिक समर्थकों को गिरफ्तार कर थाने ले गई. रणधीर वर्मा चौक पर प्रदर्शनकारी कुछ देर के लिए उग्र हो गए थे. हालांकि पूरे जिले में दोपहर के बाद से हालात सामान्य हुए.

तीन दिवसीय योग शिविर शुरू

चिरकुंडा। चिरकुंडा स्थित अग्रसेन भवन में मारवाड़ी महिला समिति चिरकुंडा शाखा व द योगा इंस्टीच्यूट मुंबई द्वारा तीन दिवसीय योग शिविर की शुरुआत हुई. उद्धोगपति सह समाजसेवी बिनोद अग्रवाल की पत्नी सुनीता अग्रवाल ने बतौर मुख्य अतिथि फीता काटकर शिविर का उद्घाटन किया. योगा शिक्षक के रूप में द योगा इंस्टिट्यूट मुंबई की सीनियर फैकल्टी पूजा हेलीवाल ने दर्जनों महिलाओं को प्रशिक्षण दिया. मुख्य अतिथि सुनीता अग्रवाल ने कहा कि महिलाओं के लिए विशेष योग शिविर का आयोजन काफी अच्छी पहल है. मौके पर मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्ष सीमा अग्रवाल, उषा जिंदल, भगवती रुंगटा, सुमन गढ़याण, श्रद्धा गढ़याण, निलय गढ़याण, प्रणव गढ़याण, मिठु गढ़याण आदि थे.

डॉक्टर साहब! कब होगा इलाज घर में छोटे-छोटे बच्चे भूखे हैं

▪ एसएनएमएमसीएच में मरीजों की स्थिति दयनीय

संवाददाता। धनबाद

शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज अस्पताल में डॉक्टरों की हड़ताल के कारण मरीजों की स्थिति दयनीय हो गई है. विनोद मुर्मू नामक मरीज का घुटने का ऑपरेशन नहीं हो पाया है, जो लगभग एक महीने से अस्पताल में भर्ती है. विनोद मुर्मू ने बताया कि वह दैनिक मजदूरी का काम करता है. पिछले एक महीने से अस्पताल में भर्ती है, लेकिन उनके घुटने का ऑपरेशन नहीं हो पाया है. इधर परिवार में चार छोटे-छोटे बच्चे हैं. विनोद मुर्मू ने बताया परिवार की स्थिति खराब हो गई है. उनके बच्चे भूख में रहने को मजबूर हैं और परिवार के पास इलाज के लिए पैसे नहीं हैं. जो भी पैसे बचाए थे वह अपने इलाज में सब खत्म हो गए हैं और नहीं पता कि अब वे अपने इलाज के लिए पैसे कहां से लाएं. उन्होंने बताया कि मोटरसाइकिल ने टक्कर मार दी थी, घटना में घुटने की हड्डी टूट गई है.अस्पताल आने पर आपरेशन की बात कही, ज्यादा मरीज होने के कारण ऑपरेशन में देर हो गई. जब तक उसका नंबर आता, तब डॉक्टर हड़ताल पर चले गए. अब हड़ताल खत्म होने का इंतजार कर रहे है.

विनोद मुर्मू

बद्री दास

अजय सिंह

दर्द की दवा खाकर रह रहे हैं: बद्री

अस्पताल में भर्ती निरसा के खुदिया निवासी बद्री दास ने बताया कि 16 अगस्त को अस्पताल पहुंचे थे. लेकिन अब तक इलाज नहीं हो पाया है. उन्होंने बताया कि उनके जांघ की हड्डी टूट गई है. काफी दर्द होता है. दर्द के समय दवाई ले लेते हैं, तब दर्द से तो छुटकारा मिल जाता है. लेकिन कब तक इस तरह चलेगा. यह समझ नहीं आ रहा है. सरकार से मांग करते हैं कि डॉक्टरों की हड़ताल को समाप्त कराया जाए. जिससे हमारे इलाज हो सके. वहीं झरिया निवासी अजय सिंह ने बताया कि 28 जुलाई को भर्ती हुआ था. लेकिन अब तक ऑपरेशन नहीं हो पाया है. गरीब होने के कारण किसी निजी अस्पताल में भी ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे हैं.

डॉक्टर का हड़ताल छठे दिन भी जारी रहा

कोलकाता में जूनियर डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या के विरोध में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में जूनियर डॉक्टरों की हड़ताल छठे दिन भी जारी है, जिससे मरीजों की परेशानी लगातार बनी हुई है. ओपीडी सेवा ठप होने से मरीजों को परेशानी हो रही है. ओपीडी में अब तक लगभग 5000 मरीज बिना इलाज कराए वापस लौट गए. वहीं करीब 50 मरीजों की ऑपरेशन नहीं हो पा रही है. अस्पताल प्रशासन और जूनियर डॉक्टरों के बीच बातचीत के प्रयास जारी हैं, खबर लिखे जाने तक कोई समाधान नहीं निकल पाया.

तेतुलमारी में ग्रामीण व आउटसोर्सिंग समर्थक आमने-सामने, बम बरामद

संवाददाता। तेतुलमारी

बुधवार को बीसीसीएल सिजुआ क्षेत्र अंतर्गत बेलदरीया बस्ती के समीप आउटसोर्सिंग का कैंप बनाने को लेकर बेलदरिया बस्ती के ग्रामीण और आउटसोर्सिंग समर्थक आमने-सामने हो गए. दोनोa के बीच नोक झोंक के बाद माहौल गर्म हो गया. दोनों पक्ष के दूसरे से दो-दो हाथ करने पर उतारू थे. खबर पाकर तेतुलमारी पुलिस मौके पर पहुंची.दोनों पक्षों को समझा बुझाकर शांत करवा कर वार्ता के लिए थाना बुलाया. पुलिस ने घटनास्थल से एक जिंदा बम बरामद किया है .बताते चलें कि बिलदरिया बस्ती को विस्थापित करने की बात को लेकर कई वर्षों से चल रही थी. आज तक यहां के लोगों को विस्थापित नहीं किया गया और बीसीसीएल द्वारा आउटसोर्सिंग कैंप की तैयारी करने लगे, इसी बात को लेकर दो पक्षों में विवाद उत्पन्न हो गया.

निरसा में कोयला लोड एक ट्रैक्टर, दो बाइक जब्त

मैथन : अवैध कोयला चोरी की सूचना पर निरसा पुलिस ने बुधवार की सुबह ताबड़तोड़ छापेमारी कर दो कोयला लोड बाइक, एक ट्रैक्टर सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया. छापेमारी का नेतृत्व निरसा थाना प्रभारी मंजीत कुमार दलबल के साथ कर रहे थे. छापेमारी टीम में पुलिस बल के साथ सीआईएसएफ जवान भी मौजूद थे. निरसा पुलिस ने भालुकसुधा निवासी विजय यादव एवं रविंद्र महतो के खिलाफ प्राथमिक की दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया. पुलिस की छापेमारी के बाद कोयला चोरों में हड़कंप मचा है. निरसा थाना प्रभारी मंजीत कुमार ने कहा कि सूचना मिली थी कि ग्रामीण क्षेत्रों का लाभ उठाकर कुछ लोग अवैध कोयला तस्करी का काम कर रहे हैं. सूचना मिलते ही संयुक्त टीम का गठन कर छापेमारी अभियान चलाया गया. मुगमा मोड़ जीटी रोड पर छापेमारी कर लगभग साढ़े तीन टन कोयला

लोड ट्रैक्टर को जब्त किया गया जबकि बेनागोड़िया मोड़ के समीप छापेमारी कर कोयला लोड दो बाइक को जब्त करते हुए दो लोगों को गिरफ्तार किया गया. निरसा पुलिस ने ट्रैक्टर एवं बाइक मालिक एवं संचालक के साथ-साथ कोयला चोरी में शामिल दो लोगों के खिलाफ प्राथमिक दर्ज कर गिरफ्तार दोनों आरोपी को जेल भेज दिया. कहा कि कोयला चोरी रोकने के लिए पुलिस आगे भी छापेमारी अभियान चलाएगी. किसी भी परिस्थिति में निरसा क्षेत्र में अवैध उत्खनन तथा कोयला चोरी को बर्दाश्त नहीं की जाएगी.

मुर्गा-मुर्गी ढोने वाले वाहन से अवैध शराब की बोतलें जब्त

संवाददाता। धनबाद

एसएसपी धनबाद एचपी जनार्दन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस की छापेमारी टीम ने वाहन चेकिंग अभियान चलाकर पूर्वी टुण्डी थाना अंतर्गत ग्राम लटानी के पास एक मुर्गा-मुर्गी ढोने वाले वाहन (जेएच 11 एएम 9251) से अवैध शराब की बोतलें जब्त की. बोतलों को वाहन के निचले हिस्से में छिपाकर रखा गया था. वाहन चालक अंधेरे का फायदा उठाकर मौक़े से फरार हो गया. वाहन को पकड़ने के लिए एसएसपी के निर्देश पर पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय-2 के नेतृत्व में छापेमारी टीम गठित की गई थी. टीम ने वाहन चेकिंग अभियान चलाकर शराब की बोतलें जब्त कर ली. पुलिस झारखण्ड उत्पाद शुल्क अधिनियम के तहत वाहन के मालिक और चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है. फरार वाहन चालक की तलाश जारी है. पुलिस जब्त वाहन थाना ले आई.

उपेन्द्र हत्याकांड : जमानत पर पूरक केस डायरी तलब

धनबाद : रिकवरी एजेंट उपेंद्र सिंह की हत्या करवाने के नामजद आरोपी गैंग्स ऑफ़ वासेपुर के बंटी खान एवं गोडविन खान की नियमित जमानत याचिका पर सुनवाई बुधवार को जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुजीत कुमार सिंह की अदालत में हुई. बचाव पक्ष से अधिवक्ता उदय कुमार भट्ट ने बहस की. वहीं लोक अभियोजक अवधेश कुमार ने पुलिस से पूरक केस डायरी मांगने का आग्रह किया.अदालत ने उभय पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पुलिस को केस डायरी सौंपने का निर्देश दिया है. बताते चलें कि ट्रायल कोर्ट ने 31 जुलाई 2024 को दोनों की जमानत याचिका खारिज कर दी थी. एक फरवरी 2023 को पीके राय मेमोरियल कॉलेज के पास अपराधियों द्वारा गोली मारकर कर उपेंद्र सिंह की हत्या कर दी गई थी.

घूस लेने के आरोप में वीएलई पर मुकदमा

ऑनलाइन प्रक्रिया के नाम पर दो सौ रुपये मांग रहा था वीएलई

मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना

संवाददाता। गोड्डा

मेहरमा प्रखंड अंतर्गत ढोढ़ा पंचायत के वीएलई द्वारा झारखण्ड मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना में लाभुकों से अवैध राशि लिए जाने की शिकायत पर कार्रवाई करते हुए बीडीओ द्वारा थाना में मामला दर्ज कराया गया है. प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचल अधिकारी मेहरमा अभिनव कुमार के पास यह शिकायत पहुंची कि राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना में मेहरमा प्रखंड के ग्राम पंचायत ढोढ़ा में लाभुकों की ऑनलाइन एंट्री करने को लेकर वीएलई द्वारा अवैध रूप से राशि ली जा रही है. इस शिकायत कर प्रभारी पंचायत सचिव देवीलाल सोरेन द्वारा गठित जांच कमिटी द्वारा शिकायत की जांच की गई.जांच के क्रम में लाभुकों से राशि की मांग करने का आरोप सही पाया गया. जांच टीम के समक्ष लाभुकों ने बताया कि ग्राम पंचायत ढोढ़ा के लाभुकों से ढोढ़ा पंचायत के वीएलई अमरजीत मंडल पिता नारायण मंडल ग्राम पंचायत ढोढ़ा, पोस्ट मड़पा थाना बलबड्डा प्रखंड मेहरमा, गोड्डा द्वारा यह बोला गया है कि मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना का ऑनलाइन आवेदन करने के लिए ऑनलाइन फीस के तौर पर प्रत्येक लाभुक से 200 रुपये लिए जाएंगे तथा प्रथम किस्त का जो एक हजार रुपया खाता में आएगा, वह भी देना होगा. रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद बीडीओ मेहरमा द्वारा दोषी वीएलई के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराते हुए आगे की कार्रवाई की जा रही है. इस घटना के बाद जिला प्रशासन द्वारा वासियों से अपील की गई. योजना पूरी तरह से निशुल्क है. इसमें किसी को कोई रकम नहीं दें. आवेदन प्रक्रिया के दौरान कोई ओटीपी आदि नहीं मांगी जाती है. उन्होंने सभी से अपील की है कि कोई भी झांसे में न आएं, अगर किसी व्यक्ति (बिचौलिया) द्वारा योजना के संबंध में लाभुक से पैसे की मांग की जाती है, तो वे जिला प्रशासन गोड्डा को इसकी सूचना अविलंब दें, ताकि बिचौलिया पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जा सके.

धनबाद में भी बिचौलिए सक्रिय

धनबाद में भी इस तरह की शिकायतों की चर्चा है. कई स्थानों पर इस तरह के मामले उठे लेकिन प्रशासन के खौफ से शिकायतों को दबा लिया गया. हालांकि बिचौलिए आवेदकों से रकम ठगने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं.ऑन लाइन के साथ-साथ रकम आने पर आधी रकम बिचौलिए द्वारा मांगे जाने की शिकायतें सुनी जा रही हैं. ऐसे में आवेदकों को जागरुक करने की आवश्यक्ता है ताकि कोई शातिर इनसे ठगी न कर सके और सरकारी योजना का पूरा लाभ इन्हें मिल सके.

मरहम कई महीनों से थे एसएनएनएमसीएच में इलाजरत, नहीं था कोई अपना

चार अनाथ वृद्धों को डालसा ने दिया नया जीवन

▪ अस्पताल से ले गए वृद्धाश्रम

संवाददाता। धनबाद

अकेले नहीं हैं आप... योजना के तहत बुधवार को वर्ल्ड सीनियर सिटीजन डे पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राम शर्मा के निर्देश पर डालसा की टीम ने एसएनएनएमसीएच से चार वृद्ध माला देवी (चितरंजन),रूपा देवी,(तेतुलमारी) ,प्रभू भूईया (तिसरा),उदय कुमार दिक्षित (चास) को रेस्क्यू कर उन्हें वृद्ध आश्रम में भर्ती कराया. चारों वृद्ध कई माह से एसएनएनएमसीएच लावारिस वार्ड में इलाजरत थे. इनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं था. एसएनएनएमसीएच के सुपरिंटेंडेंट डॉक्टर ज्योति रंजन ने इस बाबत सूचना डालसा को दी.

इसके बाद डालसा के अध्यक्ष प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राम शर्मा ने सचिव डालसा राकेश रोशन के नेतृत्व मे रेस्क्यू टीम में एलडीसीएस के डिप्टी चीफ अजय कुमार भट्ट ,सहायक अरुण कुमार, सौरव सरकार, राजेश सिंह, संध्या देवी शामिल थे.सबलपुर स्थित लालमणि वृद्ध आश्रम में सभी वृद्धों के बीच न्यायाधीश रोशन, अधिवक्ता मीना सिन्हा, एलएडीसीएस डिप्टी चीफ अजय कुमार भट्ट , नौशाद गद्दी, एसएस हाजरा ने साड़ी ,कपड़ा, चादर और खाने की सामग्रियां वितरित की. न्यायाधीश रोशन ने कहा कि 21 अगस्त को हर साल विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस मनाया जाता है. इस दिन को मनाने का उद्देश्य समाज में वरिष्ठ नागरिकों को उनके अधिकारों और जरूरतों के प्रति जागरूकता फैलाना है.

बताया कि भारत सरकार ने 2007 में माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण तथा कल्याण अधिनियम पारित किया था। इन कानूनों की मदद से बुजुर्ग अपनी मदद खुद कर सकते हैं।कानून के मुताबिक बुजुर्गों के अधिकार अगर बुजुर्गों की देखरेख उनके बच्चे या संबंधी नहीं कर रहे हैं. तो वे एसडीएम कोर्ट में शिकायत कर सकते हैं. प्रार्थना पत्र स्वयं या किसी एनजीओ के जरिए दे सकते हैं. ऐसे मामलों में ट्रिब्यूनल खुद संज्ञान ले सकता है.अंतरिम गुजारा भत्ते की राशि ट्रिब्यूनल 10 हजार रुपए तक तय कर सकता है. भत्ता नहीं देने पर बच्चों को जेल भी हो सकती है.

भौंरा के जंगल से बरामद बच्चा अस्पताल से डिस्चार्ज

▪ पुरुलिया पुलिस पहुंची धनबाद, सीडब्लूसी ने बच्चे को भेजा आद्रा बाल गृह

संवाददाता। धनबाद

भौंरा के जंगल से ज़ख़्मी हालत में बरामद छह वर्षीय बच्चा बुधवार को एसएनएमएमसीएच अस्पताल से रिलीज़ हो गया. उसे आज सीडब्लूसी में प्रस्तुत किया गया. सीडब्लूसी ने केस विवरणी के साथ मामले को पुरुलिया ट्रांसफ़र कर दिया है. पुरुलिया सीडब्लूसी ने फ़िलहाल बच्चे को आद्रा बाल गृह में आश्रित किया है. पुरुलिया से दो महिला पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व में एक दल धनबाद पहुँचा था. दल ने घटनास्थल के अलावा सरायढेला थाना व अस्पताल जाकर जांच पड़ताल की. बाद में यह दल सीडब्लूसी अध्यक्ष उत्तम मुखर्जी से भी बातचीत की. सीडब्लूसी अध्यक्ष ने बताया कि बच्चा अब स्वस्थ है. धनबाद से दो आउटरीच स्टाफ अमन कुमार व रुपेश कुमार महतो ने पुलिस एस्कॉर्ट में उसे सीडब्लूसी पुरुलिया पहुंचाया. पुरुलिया में उसे आद्रा होम में फ़िलहाल रखा गया है. मुखर्जी ने बताया जेजे एक्ट के तहत केस को ट्रांसफ़र किया गया है. केस विवरणी, मेडिकल फाइल, एसआईआर, सीडब्लूसी का आकलन आदि भी भेजा गया है. धनबाद सीडब्लूसी ने पुरुलिया पुलिस को बच्चे का हैंडओवर करने से इंकार कर दिया तथा सीडब्लूसी पुरुलिया को केस सौंप दिया है.

ब्रीफ खबरें

वाहन की चपेट में आकर बाइक सवार घायल

महुदा। धनबाद बोकारो मुख्य मार्ग फोर लेन में भुरूंगिया ओभरब्रीज के समीप सड़क दुर्घटना में एक मोटरसाइकिल सवार गंभीर रूप से घायल हो गया. लहूलुहान हालत में जमीन पर पड़े घायल को आनन फानन में स्थानीय लोगों ने एंबुलेंस बुलाकर अस्पताल भेजा. नागदा निवासी बैकुंठ महतो अपने मोटरसाइकिल से महुदा बाजार से अपने घर जा रहे थे. भुरूंगिया ओभरब्रीज के समीप सड़क पार करने के दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार एक कार ने टक्कर मार दी. वे गंभीर रूप से घायल हो गए, मोटरसाइकिल भी क्षतिग्रस्त हो गई. लोगो के सहयोग से एंबुलेंस बुलाकर घायल को एसएनएमएमसीएच भेजा गया. महुदा पुलिस क्षतिग्रस्त बाइक को थाना ले आई.

तोपचांची में भाजपाइयों का मशाल जुलूस

तोपचांची। प्रखंड के हटिया मैदान से तोपचांची सुभाष चौक तक बुधवार को झारखंड सरकार के वादा खिलाफी के खिलाफ भाजपाइयों ने मशाल जुलूस निकाला. झारखंड सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी किया गया. मितेन्द्र दुबे, रणवीर चौबे, सरोज महतो, टीपी सिंह, शिव पुजन उपाध्याय, वासुदेव पाल, दिलीप दास , रुद्र कांत दुबे, पप्पू तिवारी, छोटन साव, राकेश दास , बीरू शर्मा , दिनेश महतो, श्याम महतो सहित अन्य उपस्थित थे.

दुर्गा पूजा कमेटी का गठन

चिरकुंडा। आगामी दुर्गा पूजा को लेकर तालडांगा आवासीय कालोनी स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में सर्वोजनीन दुर्गा पूजा कमिटी द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया. पिछले वर्ष हुए दुर्गा पूजा,काली पूजा,लखि पूजा और छठ पूजा में हुए ख़र्च का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया. तालडांगा आवासीय कालोनी के लोगों के उपस्थिति में बैठक में सर्वप्रथम पुरानी कमेटी को भंग किया गया. इस वर्ष दुर्गा पूजा के हर्षोल्लास और शांतिपूर्ण आयोजन के लिए नई कमेटी का गठन किया गया.

मासस-माले का एकीकरण को लेकर निरसा में पार्टी कार्यालय में कार्यकर्ता सम्मेलन

राजनीति में एक नये अध्याय की शुरुआत होगी : अरूप चटर्जी

संवाददाता। निरसा

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत बुधवार को निरसा गुरुदास भवन मासस पार्टी कार्यालय में मासस की ओर से कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन का नेतृत्व पूर्व विधायक अरुप चटर्जी ने किया. सम्मेलन में सैकड़ों की संख्या में निरसा विधानसभा के तीनों प्रखण्ड कलियांसोल, एगयरकुण्ड, निरसा एवं नगर परिषद चिरकुंडा क्षेत्र के कार्यकर्ता उपस्थित हुए.
बतातें चले कि झारखंड में लेफ्ट की दो बड़ी ताकतें एक हो जाने से गठबंधन को मजबूती मिलेगी. पिछले 25 जुलाई को ही रांची में दोनों दलों के नेताओं के बीच एकीकरण को लेकर बनी सहमति ने अब आकार ले लिया है. निरसा के पूर्व विधायक अरूप चटर्जी ने दोनों दलों के एकीकरण चार्टर्ड पर अपनी सहमति दे दी है. इस एकीकरण की आधिकारिक घोषणा जनता के बीच 09 सितंबर को धनबाद के गोल्फ ग्राउंड में होने वाली महारैली में की जाएगी. सीपीआई माले और मासस के इस एकीकरण का प्रभाव राज्य की राजनीति पर पड़ेगा क्योंकि बगोदर, राजधनवार, निरसा, सिंदरी, जमुआ जैसे कुछ विधानसभा सीटें ऐसी हैं. जहां सीपीआई माले और मासस का अच्छा प्रभाव और संगठन है. चटर्जी ने कहा कि इस विलय से झारखंड के विधानसभा चुनाव में कॉरपोरेट परस्त एवं सांप्रदायिक ताकतों की हार निश्चित करेगा. मेहनतकशों की एकता और जीत से राज्य की राजनीति में एक नये अध्याय की शुरुआत होगी. सम्मेलन की अध्यक्षता टूटून मुखर्जी तथा संचालन जिप सदस्य बादलचंद्र बाउरी और मुमताज अंसारी ने किया. संबोधित करने वालों में गोपाल दास, संतु चटर्जी, रामजी यादव, लालू ओझा, विश्वजीत मेहता, अमन खान, मानिक राय, मनोज राउत, कल्याण राय, स्वप्न बाउरी, कृष्ण रजक, मणि शंकर सेन, विश्वनाथ बाउरी, गणेश बाउरी, भक्ति पद मोदी, अमित मुखर्जी, कार्तिक मंडल, साधन मंडल, भारती बाउरी, बबलू दास, बोलाई महतो, अमरीश चक्रवर्ती, न नानटू गोस्वामी, राजू अंसारी, जियाउद्दीन अंसारी, मोहम्मद अख्तर, उत्तम कर, विनय सिंह, अंजू चटर्जी, रमाकांत भंडारी, शंकर सिंह, रविलाल, सुखलाल मरांडी, सूरज दास, मिथिला सोरेन, मुन्ना यादव, मधु दास, मकसूद अंसारी, तापस चटर्जी, वरुण गोस्वामी, निरंजन गोराई इत्यादि प्रमुख हैं.

तोपचांची में दो दिवसीय खेलो झारखंड प्रतियोगिता शुरू

विधायक ने कहा, युवाओं की खेल प्रतिभा निखार रही हेमंत सरकार

संवाददाता। तोपचांची

टेकलाल महतो स्टेडियम मदैयडीह में बुधवार को दो दिवसीय खेलो झारखंड प्रतियोगिता का शुभारंभ टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो और अन्य ने दीप प्रज्वलित कर किया. मौके पर उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार युवाओं को खेल के प्रति जागरूक बनाने के लिए पूरे राज्य में खेल प्रतियोगिता आयोजित कर रही है. प्रतियोगिता में युवाओं की खेल प्रतिभा को निखारा जा रहा है. साथ ही बेहतर खिलाड़ियों को खेल नीति के तहत नियोजन भी दिया जा रहा है.
इस प्रतियोगिता में तोपचांची प्रखंड क्षेत्र के सभी विद्यालयों के बच्चे भाग लेरहे हैं. खेलो झारखंड प्रतियोगिता में अंडर 11 से 14 और 17 से 19 आयु वर्ग के प्रतिभागी भाग लेंगे. प्रतिभागियों में छात्र और छात्राएं शामिल हैं. प्रतियोगिता में फुटबॉल, वॉलीबॉल, कबड्डी, एथलेटिक्स समेत विभिन्न खेल खेले जाएंगे. मौके पर विधायक प्रतिनिधि जगदीश चौधरी, तोपचांची अंचलाधिकारी डॉ संजय कुमार सिंह, तोपचांची थाना प्रभारी डोमन रजक, मुरारी चौधरी सहित अन्य उपस्थित थे.

24 को रांची में झाआंसं मोर्चा की संकल्प सभा

गोमो। आगामी 24 अगस्त को झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा (झाआंसं) के बैनर तले रांची के मोरहाबादी मैदान स्थित बापू वाटिका के समक्ष संकल्प सभा का आयोजन किया गया है. सभा के मुख्य वक्ता मोर्चा के संस्थापक एवं प्रधान सचिव पुष्कर महतो होंगे. सभा में झारखंड आंदोलनकारियों के संवैधानिक अधिकारों एवं अलग राज्य मूल्यों की रक्षा का संकल्प लिया जाएगा. यह जानकारी झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के केंद्रीय संयोजक गोपाल रवानी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी. कहा कि झारखंड अलग राज्य बनने के बाद झारखंड आंदोलनकारियों के मसले को गंभीरता से नहीं लिया गया. इस वजह से आंदोलनकारी संवैधानिक अधिकार, राजकीय मान सम्मान और रोजी रोजगार व नियोजन समेत अन्य सुविधाओं से वंचित हैं. 24 अगस्त को झारखंड के सभी जिलों से आंदोलनकारी रांची जाएंगे तथा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा और झारखंड को बेहतर राज्य बनाने का संकल्प लेंगे.

जन आक्रोश रैली में शामिल होंगे 10 हजार कार्यकर्ता : रागिनी सिंह

संवाददाता। झरिया

हेमंत सरकार की वादा खिलाफी व भ्रष्टाचार के विरुद्ध 23 अगस्त को आक्रोश रैली कार्यक्रम को लेकर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रागिनी सिंह के नेतृत्व में भाजपा कार्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई. भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष, वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे.इस दौरान आंदोलन को सफल बनाने की योजना पर विचार किया गया. तय हुआ कि हेमंत सरकार के कथित वादा खिलाफी, कुशासन, अराजकता व भ्रष्टाचार के मुद्दे को मुहल्ले तक ले जाना है ताकि आक्रोश रैली में जन भागीदारी को सुनिश्चित की जा सके. रागिनी सिंह ने रैली के विभिन्न पहलुओं और उसके आयोजन की रणनीति पर विस्तार से विचार-विमर्श किया. कहा कि झरिया विधानसभा से दस हजार की संख्या में युवा जन आक्रोश रैली के तहत रांची पहुचेंगे. बेरोज़गारी भत्ता नहीं तो सीएम से इस्तीफे की मांग करेंगे. संचालन शैलेश सिंह चंद्रवंशी ने किया. संतोष सिंह, सत्यदेव सिंह, उमेश यादव, अरुण साव, सुजीत सिन्हा,राजाराम पासवान, संतोष शर्मा, अभिषेक पांडेय, मयूरी त्रिवेदी, निर्मला पासवान, अर्जुन निषाद, तरुण राय, अवधेश साव, बच्चा गिरी, अजय दास मौजूद रहे.

झींझी पहाड़ी में शिलापट तोड़ने से आक्रोशित ग्रामीण धरना पर बैठे

झींझी पहाड़ी पंचायत का मामला, पुलिस को कार्रवाई को लेकर दिया पत्र

संवाददाता। कतरास

झींझी पहाड़ी पंचायत के बूढ़ा बाबा शिव मंदिर के समीप जिला परिषद निधि से सड़क निर्माण को लेकर लगे शिलापट को असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़े जाने पर बुधवार को आक्रोशित ग्रामीण धरना पर बैठ गए. इस दौरान ग्रामीणों ने नारेबाजी कर दोषियों को चिन्हित कर उनके खिलाफ पुलिस से कार्रवाई की मांग रखी.मामले को लेकर ग्रामीणों ने सामूहिक हस्ताक्षर युक्त पत्र रामकनाली ओपी पुलिस को दे कर कार्रवाई की मांग की है. धरना का नेतृत्व कर रहे पूर्व मुखिया सुरेश कुमार महतो व पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि अर्जुन महतो ने बताया कि लंबे समय बाद जर्जर सड़क की निर्माण को लेकर बूढ़ा बाबा शिव मंदिर से लेकर केशलपुर तक एक हजार मीटर लम्बी सड़क का निर्माण जिला परिषद के निधि से होने जा रहा है. निर्माण को लेकर शिलापट लगाई गई थी लेकिन गांव की कुछ असामाजिक तत्वों के लोगों द्वारा उसे तोड़फोड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया गया है. हम पुलिस प्रशासन से मांग करते हैं कि ऐसे गलत मानसिकता रखने वाले लोगों को चिन्हित कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए. मौके पर गुड्डू दास किशोर महतो रूपेश महतो भोला मोदक बिरु दास सहित अन्य मौजूद थे.

युवाओं को नौकरी-बेरोजगारी भत्ता का झूठा वादा : पासवान

संवाददाता। धनबाद

भारतीय जनता पार्टी ने धनबाद में कार्यक्रम आयोजित कर धनबाद विधानसभा के सातों नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों को सम्मानित किया. झारखंड विधानसभा के प्रभारी सुनील पासवान ने कहा कि हेमंत सरकार ने अवैध कारोबार के रिकॉर्ड बनाए हैं. युवाओं को नौकरी और बेरोजगारी भत्ता का झूठा वादा किया है. भाजपा झारखंड के युवाओं के साथ खड़ी है और 23 अगस्त को रांची में युवा आक्रोश रैली आयोजित करेगी. युवा आक्रोश रैली झारखंड की निकम्मी सरकार के ताबूत में आखिरी कील साबित होगी. धनबाद विधायक राज सिन्हा ने कहा कि धनबाद के कार्यकर्ताओं का इतिहास रहा है कि उन्होंने जो प्रण लिया उसे संकल्प से सिद्धि की ओर ले जाते हैं. निश्चित रूप से आगामी 23 अगस्त को रांची में आयोजित युवा संकल्प रैली में धनबाद के हजारों कार्यकर्ता कूच करेंगे. महानगर जिला अध्यक्ष श्रवण राय ने कहा कि झारखंड की हर मोर्चे पर विफल हेमंत सरकार ने युवा, किसान, महिला सभी को ठगने का कार्य किया. पूरे राज्य में ग्राम सभा को कमजोर कर इन्होंने जनता को न्याय से भी वंचित करने का कार्य किया है. कार्यक्रम में भाजयुमो जिला अध्यक्ष नित्यानंद मंडल, जिला महामन्त्री मानस प्रसून, जिला उपाध्यक्ष वीरेंद्र हाँसदा, जिला मंत्री पंकज सिन्हा, रीता प्रसाद, महिला मोर्चा अध्यक्ष बिभा रानी सिंह सहित कई पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे.

आसनसोल

कुल्टी बाइकर्स ग्रुप ने आरजीकर की घटना को लेकर निकाली बाइक रैली

महिला चिकित्सक की हत्या के विरोध में किया प्रदर्शन

खास बातें

- महिला सुरक्षा की मांग की गई

संवाददाता। बराकर

आरजीकर मेडिकल कॉलेज अस्पताल के एक महिला चिकित्सक से दुष्कर्म एवं हत्या की घटना को लेकर कुल्टी बाइकर्स ग्रुप की ओर से बाइक रैली निकाल कर विरोध प्रदर्शन किया. इस संगठन में शामिल सैकडों छात्रों एवं युवकों ने कुल्टी क्लब के समीप तिरंगा झंडा फहराया. मृतक चिकित्सक के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित किया. बाइकर्स ग्रुप में शामिल छात्रों ने बताया कि आरजी कर अस्पताल में हुयी घटना बेहद शर्मनाक है. उन्होंने बताया कि इस घटना की जांच की जाय और घटना में शामिल लोगों को फांसी की सजा दी जाय, इस रैली में शामिल छात्राओं ने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं की सुरक्षा को लेकर कड़े कानून बनाये. उन्होंने कहा कि जिस देश मे महिलाएं सुरक्षित नही होगी. तब तक उस देश का उत्थान नही हो सकता है. बाइकर्स ग्रुप की रैली को देखते हुये कुल्टी पुलिस की ओर से ट्रैफिक व्यवस्था की गयी. इस रैली में सैकड़ों की संख्या में छात्र छात्राओं के अलावा बाइकर्स ग्रुप के सदस्य शामिल थे.

सड़क पर उतरे छात्र

सालानपुर। आरजीकर की घटना के विरोध में सालानपुर ब्लॉक के छात्र–छात्राएं सड़क पर उतरे और आरजीकर कॉलेज की मेडिकल छात्रा के साथ दुष्कर्म और हत्या के मामले में न्याय की मांग करते हुए दोषी को फांसी देने की मांग की . इस दौरान स्कूली छात्रों ने रूपनारायणपुर डीएवी स्कूल से रूपनारायणपुर बस स्टैंड तक विरोध मार्च निकाला . जुलूस के अंत में छात्रों ने रूपनारायणपुर बस स्टैंड के पास आसनसोल चित्तरंजन रोड को जाम कर दिया और दोषियों को सजा देने की मांग की . सड़क जाम करीब दस मिनट तक चला . हालांकि, सालानपुर ब्लॉक के छात्र जिला तृणमूल कांग्रेस के छात्र अभिनव मुखर्जी के साथ चलते दिखे .

कारखाने के जहरीले पानी से गायों की मौत

सालानपुर। बाराबनी थाना क्षेत्र के काशीडांगा गांव के आदिवासियों ने आरोप लगाया है कि नोपाडा स्थित ब्लैक डायमंड एक्ससुलिव प्राइवेट कारखाने से निकले जहरीला रासायनिक पानी पीने से कई गायों की मौत हो गयी है. ग्रामीणों ने गायों की मौत के बाद मुआवजे की मांग पर कारखाने के सामने विरोध प्रदर्शन किया. इस दौरान ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि कारखाने से निकले जहरीले पानी खेतों में जा रहा है और उस पानी को पीने के बाद गायों की मौत हो गई है. इसलिए उन्होंने मुआवजे की मांग को लेकर कारखाने के गेट के सामने प्रदर्शन किया. इसकी सूचना पाकर पहुँची बाराबनी पुलिस ने मामला शांत कराया और मृत गायों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया.

उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में उभरा रानीगंज डीएवी पब्लिक स्कूल

संवाददाता। रानीगंज

रानीगंज डीएवी पब्लिक स्कूल दस अगस्त को साउथ सिटी इंटरनेशनल स्कूल ऑडिटोरियम, कोलकाता में आयोजित द टेलीग्राफ स्कूल अवार्ड फॉर एक्सीलेंस 2024 में एक बार फिर सुर्खियों में रहा. स्कूल कई प्रशंसाएं हासिल करते हुए उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में उभरा है, क्योंकि इस साल फिर से संस्था को द टेलीग्राफ एजुकेशन फाऊंडेशन, कोलकाता द्वारा दो अलग-अलग श्रेणियों में सम्मानित प्रतिष्ठित टेलीग्राफ स्कूल अवार्ड्स का प्राप्तकर्ता मिला हैः स्कूल श्रेणी में निम्न सम्मान प्रमाण-पत्र के साथ सम्मानित किया गया है. पाठयक्रम गतिविधियों में उत्कृष्टता, रखरखाव और पर्यावरण अनुकूल पहल में उत्कृष्टता के लिए योग्यता प्रमाण-पत्र और सामाजिक सेवा के लिए योग्यता प्रमाण-पत्र भी शामिल है. व्यक्तिगत श्रेणी में कक्षा 10 के दीप्तारको माइती को उत्कृष्ट प्रतिभा (निबंध, पेंटिंग और क्विज में) के लिए सम्मान प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया. नवम श्रेणी के अरिजीत दास को संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभा के लिए सम्मान प्रमाण पत्र दिया गया. खेल क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभा के लिए वरुण झा को योग्यता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया. कक्षा 11वीं की श्रेया मुखर्जी को सर्वांगीण उत्कृष्टता के लिए योग्यता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया. इस प्रकार पुरस्कार एक ऐसा प्रमाण है जो असाधारण उपलब्धियों के लिए शैक्षिक मोर्चे पर स्कूल, उल्लेखनीय छात्रों की उपलब्धियाँ और सभी शिक्षक कर्मचारियों का अनुकरणीय योगदान है.

न्याय की मांग को लेकर 74 वर्षीय महिला का धरना

संवाददाता। बराकर

बराकर. सैल के अधिनिस्त रामनगर कोलियरी द्वारा 15 वर्षों पहले रामनगर की एक वृद्ध 74 वर्षीय विधवा छबि पाल की जमीन से कोयला का उत्पादन किया गया, लेकिन इसके बदले में न तो जमीन का मुआवजा मिला और न ही उसके एकमात्र पुत्र को नौकरी. वृद्ध छबि पाल को धरने पर बैठने के लिए मजबूर होना पड़ा, क्योंकि उन्हें उपयुक्त कार्यवाही नहीं मिली. बुधवार की सुबह, छबि पाल ने धरना शुरू किया. इस दौरान, कुल्टी ब्लॉक तृणमूल कांग्रेस के अधिकांश नेता धरना स्थल पर उनके समर्थन में बैठे दिखाई दिए. तृणमूल कांग्रेस के पूर्व विधायक चेयरमैन उज्ज्वल चटर्जी, कुल्टी ब्लॉक तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष कंचन राय, और जमीहारा कमिटी के नेता सुभाशीष मुखर्जी शामिल थे. वृद्ध छबि पाल ने बताया कि प्रबंधन ने लगातार टालमटोल कर उन्हें ठगने का कार्य किया है. उनके पुत्र पिनाकी ने कहा कि वर्षों पहले उनकी जमीन से कोयला का उत्पादन किया गया, लेकिन प्रबंधन ने वादा तोड़ दिया है. उन्होंने कहा कि जब तक उन्हें न्याय नहीं मिलेगा, आंदोलन जारी रहेगा. इस दौरान पार्टी के सुब्रतो भादुड़ी, सुब्रतो सिन्हा, पिगलू घोष सहित बड़ी संख्या में पार्टी सदस्य शामिल थे.

नितुरिया प्रखंड में 4500 फलदार पौधे का वितरण

नितुरिया। नितुरिया प्रखंड द्वारा बुधवार को पौधारोपण के लिए प्रखंड के सातों ग्राम पंचायतों को करीब 4500 फलदार पौधे वितरित किए गए. मौके पर नितुरिया पंचायत समिति अध्यक्ष शांतिभूषण प्रसाद यादव, हॉर्टिकल्चर अधिकारी कार्तिक, पंचायत समिति कर्माध्यक्ष याकुद अंसारी, पंचायत समिति कर्माध्यक्ष सरस्वती टुडू सोरेन, उज्जवलता हांसदा, सरबड़ी ग्राम पंचायत प्रधान प्रशांत राय, दीघा ग्राम पंचायत की प्रधान सावित्री गोराईं, राय बांध ग्राम पंचायत प्रधान उमारानी महतो सहित अन्य पंचायतों के प्रधान भी उपस्थित थे. शांतिभूषण प्रसाद यादव ने कहा कि आज के मौसम की बदलती करवट को देखते हुए पौधारोपण की बेहद आवश्यकता है. यह समय इसके लिए अनुकूल है. अतः सभी को पौधरोपण करना चाहिए और उसकी देखभाल भी करनी चाहिए. इसे देखते हुए प्रखंड द्वारा फलदार पौधे वितरित किए गए जिससे की वातावरण की भी रक्षा हो और लोगों को फल भी प्राप्त हो.

भाजपा पार्षद ललन मेहरा के नेतृत्व में दामागोड़िया कोलियरी में प्रदर्शन

युवाओं को रोजगार देने की मांग की

खास बातें

- दामागोड़िया कोलियरी में भारी मात्रा में कोयला का भंडार : मेहरा

संवाददाता। बराकर

स्थानीय लोगो को रोजगार देने की मांग पर बुधवार को बीसीसीएल सीबी एरिया के दामागोड़िया कोलियरी प्रोजेक्ट में वार्ड 17 के भाजपा पार्षद ललन मेहरा के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन किया, इस दौरान भाजपा पार्षद ललन मेहरा ने दामागोड़िया के प्रोजेक्ट प्रबंधक ए.आर.पिल्लई को ज्ञापन दिया, उन्होंने प्रोजेक्ट प्रबंधक से दामागोड़िया कोलियरी के नये प्रोजेक्ट में स्थानीय युवाओं को रोजगार देने की मांग की. वहीं प्रोजेक्ट प्रबंधक ने स्थानीय पार्षद से प्रोजेक्ट चालु करने में सहयोग करने की अपील की,उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट को चालु होने से काफी मात्रा में कोयला का उत्पादन होगा.
इसके अलावा स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा. पार्षद ललन मेहरा ने कहा कि दामागोड़िया कोलियरी में भारी मात्रा में कोयला का भंडार. इस प्रॉजेक्ट को चालु करने के लिये ग्रीन सिग्नल मिल चुका है. जिसे लेकर युद्द स्तर पर कार्य किया जा रहा है. इस प्रोजेक्ट में लगभग हजारों लोगों को रोजगार मिलने का अवसर प्राप्त होगा. यही कारण है कि दामागोड़िया कोलियरी इलाके के कई पार्षद स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने को लेकर आंदोलन करने में लगे हुये है. इस अवसर पर काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं के अलावा आस पास के क्षेत्र के युवकों ने भाग लिया.

आड़रा ग्राम पंचायत में सड़क निर्माण कार्य शुरू

खास बातें

- लोगों को मिलेगी राहत

संवाददाता। रघुनाथपुर

पुरुलिया जिले के रघुनाथपुर नंबर 1 ब्लॉक की आड़रा ग्राम पंचायत आखिरकार स्थानीय निवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांगों को पूरा करने के लिए आगे आई. ग्राम पंचायत से सटे क्षेत्र में खस्ताहाल सड़क का निर्माण कार्य शुरू हो गया है. आड़रा गांव बेना तालाब से नगर निगम हाई स्कूल रोड तक वर्षों से जर्जर पड़ी सड़क का निर्माण कार्य बुधवार से विधिवत शुरू हो गया.
आड़रा ग्राम पंचायत प्रधान तुफान कुमार राय ने स्थानीय निवासियों की उपस्थिति में फीता काटकर और नारियल तोड़कर सड़क का निर्माण कार्य औपचारिक रूप से शुरू किया. उन्होंने बताया कि ढलाई रोड का निर्माण पंद्रहवें वित्त के तहत करीब 13 लाख 53 हजार रुपये की लागत से कराया जा रहा है. इसके निर्माण की मांग क्षेत्रीय स्थानीय लोगों द्वारा काफी दिनों से की जा रही थी. इसके बन जाने से लोगों को काफी सुविधाएं होंगी. इस मौके पर पुरुलिया जिला परिषद सदस्य सरस्वती बाउरी, रघुनाथपुर पंचायत समिति कर्माध्यक्ष डी मनोज कुमार और ग्राम पंचायत के अन्य सदस्य उपस्थित थे.

भारत बंद को ले सड़क पर उतरे झामुमो, कांग्रेस व भाकपा माले समर्थक

पूरे गिरिडीह जिले में बंद रहा असरदार, बंद समर्थकों ने गिरिडीह-मधुपुर पैसेंजर ट्रेन को रोका

संवाददाता। गिरिडीह

एसटी-एससी आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ बुलाए गए भारत बंद का गिरिडीह में असर देखा जा रहा है. जिले के सभी प्रखंडों में बंद समर्थक सड़क पर उतर गये थे.

बंद समर्थकों ने बीच सड़क पर आगजनी कर कोर्ट के फैसले का विरोध किया. वहीं बंद समर्थकों ने झामुमो जिलाध्यक्ष संजय सिंह के नेतृत्व में गिरिडीह-मधुपुर पैसेंजर ट्रेन को भी रोक दिया. बंद समर्थन काफी देर तक पटरी पर डटे रहे. भारत बंद के कारण लंबी दूरी के वाहनों का परिचालन पूरी तरह से ठप रहा. गिरिडीह से रांची, कलकत्ता, दुमका, बोकारो, आसनसोल, हजारीबाग, नवादा, गोड्डा, जमुई सहित कई शहरों के लिए जाने वाली बसें बस स्टैंड में ही खड़ी रहीं. दुकानें भी अन्य दिनों की अपेक्षा काफी कम खुली. गिरिडीह-रांची मुख्य मार्ग को बदडीहा के पास, गिरिडीह-कोडरमा पथ को कृष्णानगर के पास, गिरिडीह-दुमका पथ को बेंगाबाद में, गिरिडीह-जामताड़ा मुख्य मार्ग को गांडेय में जाम कर दिया था.

बंद समर्थन अपनी मांगों के समर्थन में जम कर नारेबाजी की. शहरी क्षेत्र के अलावा जिले के बेंगाबाद, गांडेय, जमुआ, गावां, तिसरी, देवरी, धनवार, सरिया, बिरनी, बगोदर, डुमरी, पीरटांड़ प्रखंड में भी बंद का असर देखा गया. शहर में कांग्रेस और झामुमो समर्थकों ने बीच सड़क पर टायर जलाकर विरोध प्रदर्शन किया.

मौके पर झामुमो जिलाध्यक्ष संजय सिंह ने कहा कि एसटी-एससी आरक्षण में वर्गीकरण के खिलाफ भारत बंद बुलाया गया है. इस बंद का कई राजनीतिक दल और सामाजिक संगठनों ने समर्थन किया है. भारत बंद पूरी तरह सफल रहा. उन्होंने कहा कि मूल आरक्षण को बरकरार रखने की जरूरत है.

कांग्रेस के कार्यकारी जिलाध्यक्ष सतीश केडिया ने कहा कि एसटी-एससी को जो आरक्षण मिला हुआ है, उसमें कोई भी बदलाव अनुचित है. भारत बंद का कांग्रेस पूर्ण रूपेण समर्थन कर रही है.

बंद समर्थकों में प्रमिला मेहरा, अजित कुमार पप्पू, शाहनवाज अंसारी, दिलीप मंडल, नुनुराम किस्कु, कृष्ण मुरारी शर्मा, जाकीर हुसैन, नीलकंठ मंडल, भैरव वर्मा, बैजनाथ राणा सहित कई अन्य लोग शामिल थे.

बेरमो में बंद का मिला जुला असर

कथारा (बोकारो)। अनुसूचित जाति व जनजाति में आरक्षण को लेकर क्रीमीलेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ बुधवार को आहूत भारत बंद का बेरमो अनुमंडल क्षेत्र में मिला-जुला असर देखा गया. दलित शोषित मुक्ति मंच के बैनर तले बंद समर्थक बेरमो चार नंबर मोड़ पर भगतसिंह की प्रतिमा के समक्ष जुटे और सड़क जाम कर दी. बंद के समर्थन में जमकर नारेबाजी भी की. मंच के मनोज पासवान ने कहा कि आरक्षण में कोटा के ऊपर कोटा नहीं चलेगा. उधर, जारंगडीह में बंद का कोई असर नहीं दिखा. बाजार की दुकानें आम दिनों की तरह खुलीं और सड़कों पर वाहन भी चले. कथारा मोड़ क्षेत्र में सुबह 8 बजे के बाद बंद का मिलाजुला असर देखने को मिला. कथारा में दोपहर करीब 12 बजे बंद समर्थक बाइक जुलूस की शक्ल में पहुंचे और दुकानों को बंद कराया. हालांकि ज्यादातर दुकानें रोज की तरह खुली रहीं.

बोकारो में बंद समर्थकों ने किया रोड जाम

संवाददाता। बोकारो

एसटी एससी के आरक्षण में क्रीमीलेयर को लेकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में चास, बोकारो, जैनामोड़, पेटरवार समेत एनएच में भारत बंद के दौरान बंद समर्थकों ने जगह-जगह रोड जाम कर विरोध प्रदर्शन किया. इस दौरान चास प्रखंड के बांधगोड़ा में झारखंड मुक्ति मोर्चा के चास प्रखंड सचिव सुशांत मुंडा, महिला नेत्री शांति सोरेन, मटुकलाल किस्कू, उपाध्यक्ष फिरोज अंसारी, खेल प्रकोष्ठ के प्रखंड अध्यक्ष भीम सेन सोरेन, नबी हेम्ब्रम, हफीजुल अंसारी, भरत पांडेय, नरसिंह बिरुआ, अशोक बास्के, टीकाराम मुर्मू, चिमलु खलको, विनोद पंडिया, अनुज मिंज के नेतृत्व में रोड जाम कर सड़क में लगभग पांच से छह घंटे आवागमन बाधित किया गया. वहीं उकरिद मोड़ में झामुमो बुद्धिजीवी मंच के फारुख अब्दुल्ला, अख्तर हुसैन, असलम अंसारी, कुदूस अंसारी, मस्तान अंसारी, फैयाज आलम, कलाम अंसारी, बाबू अंसारी के नेतृत्व में सड़क जाम कर बंद का समर्थन किया गया. इसके अलावा जरीडीह प्रखंड के जैनामोड़ में झामुमो जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी, जिला उपाध्यक्ष मोहन मुर्मू, झारखंड श्रमिक संघ जिला उपाध्यक्ष आजाद अंसारी, पंकज मरांडी, अजय किस्कू, शंकर मरांडी, अशोक मुर्मू, बिनोद महतो, राजेश सिंह, सफीक अंसारी, तबरेज अंसारी ने रोड जाम कर विरोध प्रदर्शन किया. इस दौरान बंद समर्थकों ने बोकारो बिरसा चौक, सेक्टर 12 से लेकर चास मेन रोड तक विशाल जुलूस निकाल कर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जमकर विरोध करते हुए इसे जन विरोधी कदम बताया. इस दौरान मेन रोड में सभी दुकानों को बंद समर्थकों ने बंद करवाया. झामुमो जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी ने सभी जगह जाकर सड़क जाम एवं बंद का जायजा लिया.

ब्रीफ खबरें

उपायुक्त ने जागरुकता रथ को किया रवाना

बोकारो। समाहरणालय परिसर से उपायुक्त विजया जाधव एवं जिला सहकारिता पदाधिकारी श्वेता गुड़िया ने बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (बी-पीएमएफबीवाई) खरीफ 2024 में जिले के शत प्रतिशत किसानों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए 02 जागरुकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. यह रथ जिले के दोनों अनुमंडल क्षेत्र चास एवं बेरमो के विभिन्न प्रखंडों, पंचायत क्षेत्रों का भ्रमण कर किसानों को बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ एवं उद्देश्य के प्रति जागरूक करेगी.

30 सितम्बर से गृह रक्षकों का बुनियादी प्रशिक्षण

बोकारो। बोकारो जिले में सीधी भर्ती के आधार पर नव नामांकित गृह रक्षकों का बुनियादी प्रशिक्षण आगामी 30 सितंबर से शुरू होगा. इस बाबत समादेष्टा गृह रक्षा वाहिनी एवं अग्निशमन सेवाएं, झारखंड ने प्रशिक्षण कैलेंडर जारी कर दिया है. बोकारो जिले से संबंधित गृह रक्षकों का प्रशिक्षण केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान, धुर्वा, राँची एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, दुमका में होगा. प्रशिक्षण में 247 महिला गृह रक्षक एवं 267 पुरूष गृह रक्षक शामिल होंगें. जानकारी हो कि, प्रशिक्षण को लेकर पिछले दिनों उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी विजया जाधव ने समादेष्टा गृह रक्षा वाहिनी एवं अग्निशमन सेवाएं, झारखंड को प्रस्ताव भेजा था, जिस पर समादेष्टा ने सहमति जताते हुए प्रशिक्षण कैलेंडर जारी किया है. जिले से संबंधित गृह रक्षकों का प्रशिक्षण दो चरण में होगा.

थाना दिवस पर कई मामलों का निष्पादन

जमुआ (गिरिडीह)। थाना दिवस को लेकर बुधवार को जमुआ सीओ की अध्यक्षता में जमीन संबंधित विवाद का निराकरण किया गया. इस दौरान अंचलाधिकारी जमुआ, अंचल निरीक्षक जमुआ एवं थाना प्रभारी जमुआ की उपस्थिति में कुल 17 मामले को देखा गया. जिसमें 03 मामले निष्पादित किए गए एवं 2 मामले को अंचल निरीक्षक को जांच हेतु सौंपा गया. वहीं 12 मामले को अगले थाना दिवस में आने को आदेशित किया गया. थाना दिवस में थाना क्षेत्र के विभिन्न गावों से दर्जनों लोग पहुंचे थे.

देवघर में भी दिखा भारत बंद का असर

देवघर। उच्च न्यायालय के द्वारा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति में क्रिमी लेयर एवं उप वर्गीकरण फेसले के विरोध में दलित नेता जिला संयोजक राजेश दास एवं गोपाल दास के नेतृत्व में एससी, एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक संघर्ष मोर्चा, देवघर के बैनर तले पूरे देवघर एवं आसपास में संपूर्ण बंदी का असर देखा गया. जिसमें शहर एवं शहर के आसपास में रोड जाम, दुकान, होटल, मॉल, बाजार, स्कूल इत्यादि पूरी तरह से बंद रहा. इस बंदी का एससी, एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक समुदाय के साथ-साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस पार्टी, भीम आर्मी, आजाद समाज पार्टी, बहुजन समाज पार्टी के अलावे दर्जनों पार्टियां एवं सामाजिक संगठनों ने समर्थन दिया.

डायरिया से आधा दर्जन से अधिक लोग पीड़ित

स्वास्थ्य विभाग ने कैम्प लगाकर किया इलाज, 2 लोग सदर अस्पताल रेफर

- पुराने कुएँ का दूषित पानी पीने से बीमार होने की आशंका

संवाददाता। तिसरी (गिरिडीह)

तिसरी प्रखंड के जोड़ासिमर गांव में डायरिया के प्रकोप से अब तक आधे दर्जन से अधिक लोग बीमार हो चुके हैं. सभी का प्राथमिक इलाज किया गया, जिसमें 2 लोगों को बेहतर इलाज के लिये सदर अस्पताल गिरिडीह रेफर कर दिया गया . प्रखंड के गुमगी पंचायत अंतर्गत सुदूरवर्ती जोड़ासिमर गांव में अचानक डायरिया फैलने से एक ही परिवार के 5 लोग बुरी तरह बीमार हो गए. इसके अलावे गांव के ही 2 अन्य लोग भी बीमार बताये जा रहे हैं.

मामले की जानकारी पर तिसरी स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा गांव में विशेष कैम्प का आयोजन किया गया. डॉ. अनिता टोप्पो के नेतृत्व में जीएनएम अनूप कुमार और लखन कुमार एम्बुलेंस के साथ मंगलवार को जोड़ासिमर गांव पहुंचे. जिसके बाद डायरिया से ग्रसित लोगों का तत्काल उपचार कर उन्हें एम्बुलेंस से स्वास्थ्य केंद्र तिसरी लाया गया. जहां से 2 लोगों को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल गिरिडीह रेफर कर दिया गया. वहीं इलाज के पश्चात बाकी लोगों को वापस घर भेज दिया गया.

तिसरी के जोड़ासिमर गांव का है मामला

बताया जाता है कि वे लोग गांव स्थित एक पुराने कुएं से पानी पिया करते थे. कुएँ का पानी काफ़ी दूषित था, जिसके कारण वे लोग डायरिया के शिकार हुए.

पीरटांड़ में मनाया गया परिवार कल्याण दिवस

पीरटांड (गिरिडीह)। पीरटांड़ में स्वास्थ्य विभाग द्वारा बुधवार को पीरटांड़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में परिवार कल्याण दिवस मनाया गया. इस दौरान आयुष्मान आरोग्य केंद्र बरियारपुर, बिशनपुर, हरलाडीह, खेताडाबर एवं अन्य पंचायतों में आयुष्मान आरोग्य शिविर और परिवार कल्याण दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजित किया गया. जहां स्वास्थ्य विभाग के कर्मियों द्वारा लाभार्थियों को परिवार नियोजन, नव दंपती और अन्य प्रजनन वर्ग के योग्य दंपतियों के लिए परिवार नियोजन, मातृत्व व शिशु स्वास्थ्य, परिवार नियोजन के स्थाई, अस्थाई नियोजन विधियों, प्रसव के तुरंत बाद और 24 घंटे बाद टीका लगवाना एक सुरक्षित और असरदार उपाय, अनचाहा गर्भ से बचाव के विभिन्न विधियों के बारे में जानकारी दी गई. साथ ही इस संबंध में कई अन्य विषयों पर चर्चा की गई. मौके पर स्वास्थ्य विभाग के एएनएम सहिया, सेविका के अलावे संबंधित कर्मी एवं ग्रामीणों उपस्थित थे.

बंद समर्थकों ने तीन मुहानी चौक किया जाम, आवागमन ठप

साहिबगंज। एसटी-एससी के आरक्षण को लेकर बुधवार को आहूत भारत बंद का साहिबगंज जिले में मिश्रित असर रहा. बंद के समर्थन में झामुमो कार्यकर्ताओं ने बोरियो के तीन मुहानी चौक पर बांस लगाकर मुख्य सड़क जाम कर दी. इसके चलते आवागमन पूरी तरह ठप हो गया. आम लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा. बंद के समर्थन में कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी भी की. जाम स्थल पर पहुंचकर पार्टी नेता स्टीफन मुर्मू ने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया. उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति में उपवर्गीकरण और क्रीमीलेयर को लेकर दिए निर्णय के विरोध में आहूत भारत बंद का झामुमो पूरजोर समर्थन करता है. अनुसूचित जाति, जनजाति में उपवर्गीकरण कर समाज को तोड़ने की सोच को कभी सफल नहीं होने दिया जाएगा. मौके पर नजरूल इस्लाम, रिजवान अंसारी, मंडल मरांडी, अर्जुन रजक, लखीराम मुर्मू, बाबूलाल हेंब्रम, शकील अहमद, मो. एजाज अंसारी, मिट्ठू कुमार दत्ता, हेमलाल हेंब्रम, मौलवी इम्तियाज, मरंग बेसरा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे.

बंद के समर्थन में जेएमएम कार्यकर्ता सड़क पर उतरे

गोड्डा। सुप्रीम कोर्ट द्वारा एससी एसटी कोटा में सामर्थ्यवान को आरक्षण की परिधि से बाहर कर उसी समुदाय के जरूरतमंद को आरक्षण का लाभ देने से संबंधित दिए गए फैसले के खिलाफ एसटी मोर्चा द्वारा बुलाए गए भारत बंद को विपक्षी दलों द्वारा समर्थन दिया गया है. बंदी को सफल बनाने को लेकर सुबह-सुबह जेएमएम के दर्जन भर कार्यकर्ता सरकार विरोधी नारे लगाते हुए कारगिल चौक पर पहुंचे और वाहनों को आड़े तिरछे खड़ी करके चौक पर आवागमन को बाधित कर दिया. जिससे चौक के चारों ओर गाड़ियों की कतारें लग गई. बंदी को देखते हुए एहतियातन सभी स्कूलों को पहले ही बंद रखने का आदेश जारी कर दिया था. बंदी को लेकर एसडीपीओ नगर थाना प्रभारी की टीम चौक पर मौजूद थी लेकिन पुलिस कर्मियों द्वारा बंद समर्थकों को किसी प्रकार का रोकटोक नहीं था. शहर के मुख्य बस स्टैंड पर बंद का कोई असर नहीं दिखा. सामान्य दिनों की तरह चहल पहल बनी हुई थी. लोकल ऑटो समेत यात्री बस अपने गंतव्य पर निकल रही थी लेकिन यात्रियों का भीड़ भाड़ आम दिनों की भांति नहीं था.

गोमिया में भारत बंद का दिखा व्यापक असर

कथारा। एससी एसटी के आरक्षण में क्रीमीलेयर को लेकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में गोमिया, साड़म, होसिर, स्वांग, कर्माटांड़, ललपनिया समेत अन्य इलाकों में पूर्ण रूप से बंदी का असर दिखा. क्षेत्र में बंद समर्थकों ने सड़कों पर वाहनों का आवागमन पूर्ण रूप से रोक दिया. सभी छोटे बड़े दुकानें समेत बड़े प्रतिष्ठान, पेट्रोल पंप, बैंक, स्कूल, कॉरपोरेट ऑफिस बंद रहे. बंद समर्थक व प्रदर्शनकारियों ने गोमिया मोड, होसिर पुल, कर्माटांड़ सहित अन्य इलाकों में बैरिकेडिंग लगा दिया. जिससे वाहनों की आवाजाही पूरा बंद रहा. बंद समर्थकों ने गोमिया प्रखंड मुख्यालय में बीडीओ महादेव कुमार महतो को सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को वापस लेने संबंधी स्मार पत्र सौंपा. इस दौरान सड़कों पर चौक चौराहों में पुलिसकर्मी मुस्तैद थे.

कसमार: पिता ने पुत्र पर लगाया जानलेवा हमला करने का आरोप

संवाददाता। कसमार

कसमार थाना क्षेत्र के मधुकरपुर निवासी राजेंद्र स्वर्णकार ने जानलेवा हमला करने, उनकी गैस एजेंसी से पैसा लूटने व नशाखुरानी कर जबरन पागल घोषित करवाने की कोशिश करने को लेकर कसमार थाना में मामला दर्ज कराया है. उन्होंने कसमार थाना प्रभारी को दिए आवेदन में बताया है कि उनके पुत्र चंद्रशेखर स्वर्णकार व जैनामोड़ दास टोला के अन्य सहयोगी शंभु कुमार महतो (पिता लखन महतो) व जैना सिंह टोला निवासी सुचन सिंह उर्फ छोटू (पिता बीघा सिंह) समेत एक महिला व अन्य लोग 17 अगस्त की रात अचानक आए और उन्हें पकड़ कर नाक में नशीला पदार्थ सूंघाकर बेहोश कर दिया. जब उसे होश आया तो देखा कि उनके माथे से खून बह रहा है एवं गैस एजेंसी के काउंटर से 61 हजार रुपये वे लोग चोरी कर भाग गए. उन्होंने आवेदन में यह भी बताया है कि इससे पहले भी उनका पुत्र उनके ऊपर जानलेवा हमला कर चुका है. बीते 27 जुलाई को भी उनके पुत्र चंद्रशेखर स्वर्णकार उर्फ बिट्टू ने उन्हें नशीला पदार्थ सूंघाकर

जबरन इलाज करवाने रामगढ़ ले गया था, जहां वे बार-बार पागल घोषित करवाने की बात डॉक्टर से कह रहे थे.

उन्होंने आवेदन में बताया है कि उनका पुत्र उन्हें जबरन पागल घोषित करवाकर जमीन बेचने का दबाव बना रहे हैं. उन्हें थाना प्रभारी से कहा है कि उनका पुत्र उनकी जान मारना चाहता है. उन्होंने पुत्र चंद्रशेखर स्वर्णकार समेत उनके सहयोगी साथियों पर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है. कसमार थाना प्रभारी भजनलाल महतो ने बताया कि पुलिस मामले की अनुसंधान कर रही है.

एक चिकित्सक दो क्लिनिकों में कर सकते हैं प्रैक्टिस : उपायुक्त

संवाददाता। बोकारो

समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में बुधवार को उपायुक्त विजया जाधव ने पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (पीसीपीएनडीटी) एक्ट अंतर्गत जिला सलाहकार समिति की बैठक की. मौके पर उप विकास आयुक्त गिरजा शंकर प्रसाद, सिविल सर्जन डा. ए बी प्रसाद, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी शसाकेत कुमार पांडेय, सदर अस्पताल उपाधीक्षक डा. अरविंद कुमार, नोडल पदाधिकारी शक्ति कुमार, कार्यपालक दंडाधिकारी कुमार कनिष्क, स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. सेलिना टुडू, डा. एन पी सिंह, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह, जिला डाटा प्रबंधक कंचन कुमारी समेत गैर सरकारी संस्था के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे.

समीक्षा क्रम में उपायुक्त ने अल्ट्रासाउण्ड क्लीनिक से प्राप्त फार्म- एफ का स्क्रूटनी करने, जांच के क्रम में त्रुटि/कमी मिलने पर संबंधित क्लिनिक को नोटिस करने का निर्देश दिया. सुनिश्चित करें की फार्म में सभी जानकारी स्पष्ट रूप से उल्लेखित हो. उन्होंने एक चिकित्सक किसी दो क्लिनिक में ही प्रैक्टिस कर सकते हैं, इसे टीम को सुनिश्चित करने को कहा. वहीं, दोनों क्लिनिक के बीच की दूरी 08 -10 किमी ही हो. साथ ही, उन्होंने जिले में संचालित सभी क्लिनिक संचालकों को पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत वर्णित सभी नियमों का अक्षरशः अनुपालन करने को कहा, नहीं तो जांच के क्रम में एक्ट का उल्लंघन पाएं जाने पर क्लिनिक संचालकों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी.

यूनियनों ने दुगदा में शहीद मजदूरों को दी श्रद्धांजलि

चंद्रपुरा (बोकारो)। सीसीएल दुगदा क्षेत्र में संयुक्त यूनियनों ने शहीद कोयला मजदूरों को बुधवार को श्रद्धांजलि दी. दुगदा कोल वाशरी के प्रशासनिक कार्यालय के समीप शहीद वेदी पर दिवंगत मजदूर किसुन मांझी, रामदेव महतो, प्रमोद महतो, राम अवतार प्रजापति, कोकिल चंद महतो व बुधन मांझी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई. उनकी आत्मा की शांति के लिए एक मिनट मौन रख कर ईश्वर से प्रार्थना की गई. समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सीटू के बोकारो जिला अध्यक्ष बीडी प्रसाद ने कहा कि इन छह शहीद मजदूरों ने कोयला मजदूरों के हक के लिए हुए आंदोलन में अपनी कुर्बानी दी थी. ये वैसे लोग थे, जो मजदूर आंदोलन के साथ-साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों, शोषण, जुल्म को समाप्त करने के लिए संघर्षरत थे. उनके संघर्षों को गांव-गांव तक पहुंचाने की जरूरत है. कार्यक्रम की अध्यक्षता बीसीकेयू दुगदा शाखा के अध्यक्ष धानेश्वर सोरेन व संचालन सत्यनारायण महतो ने किया. मौके पर माकपा के जिला सचिव भागीरथ शर्मा, सीटू के जिला सहायक सचिव दौलत महतो, धनेश्वर महतो, ज्योति टुडू, सीताराम कर्मकार, जगमोहन महतो, हीरामन महतो, साहेब राम मांझी, कैलाश प्रसाद महतो समेत बड़ी संख्या में यूनियन प्रतिनिधि मौजूद थे.

केन्द्रीय विद्यालय में स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

बच्चों में अवसाद का मुख्य कारण है मोबाइल : डॉ ठाकुर

संवाददाता। बोकारो

रोटरी क्लब ऑफ बोकारो मिडटाउन कपल तथा आईएमए के संयुक्त तत्वावधान में केंद्रीय विद्यालय न० 1, सेक्टर 4 में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया.

इस जागरुकता शिविर के अंतर्गत बच्चों को मानसिक स्वास्थ एवं सफाई और स्वच्छता पर जानकारी दी गई.

मानसिक रोग विशेषज्ञ डा. के ऐन ठाकुर ने मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला. इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसके महत्व के बारे में शिक्षित करना था. उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की, जैसे कि तनाव प्रबंधन, अवसाद, और चिंता. उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को समझाने के लिए विभिन्न उदाहरणों एवं अनुभवों का उपयोग किया. उन्होंने कहा कि आज के समय में अधिक मोबाइल का उपयोग ही बच्चों में अवसाद का मुख्य कारण है. शिशु रोग विशेषज्ञ डा. त्रिवेणी ने स्वच्छता से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की. जैसे कि हाथ धोने का महत्व, साफ-सफाई का महत्व और स्वच्छ पेयजल का महत्व. उन्होंने स्वच्छता के महत्व को समझाते हुए कहा कि स्वच्छता से ही स्वस्थ शरीर का निर्माण होता है.

इस कार्यक्रम में 500 बच्चों ने भाग लिया और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अपने सवालों के जवाब प्राप्त किए. रोटरी के अध्यक्ष रंजन गुप्ता ने मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरुकता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया और लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए और अधिक कार्यक्रम आयोजित करने का वादा किया.

इस शिविर का मार्ग दर्शन बोकारो जनरल हॉस्पिटल के सीएमओ इंचार्ज डॉ. विभूति भूषण करूणामय ने किया. इस कार्यक्रम में आईएमए अध्यक्ष डॉ. आर.के. मिश्रा और आईएमए सचिव डॉ. गौरव विशाल भी उपस्थित थे.

केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य मनोज कुमार और शिक्षक जय कुमार ने कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई. रोटरी प्रवक्ता अनूप अग्रवाल ने कहा कि स्वस्थ मस्तिष्क में ही एक अच्छे नागरिक का निर्माण हो सकता है, इसलिए बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य बहुत ही जरूरी है.

कार्यक्रम का संचालन मिनी कपूर ने किया. इस कार्यक्रम में रोटरी के पुनीत जोहर, साजन कपूर, अनूप अग्रवाल, अमीषा अग्रवाल, सुभाष जैन, दिलीप गुप्ता, जुली, अनुपम गर्ग, शिव अग्रवाल, मनीष आदि ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया.

अभिभावक एकता मंच का अनिश्चितकालीन धरना शुरू

डुमरी (गिरिडीह)। अभिभावक एकता मंच डुमरी के तत्वावधान में बुधवार को डुमरी अनुमंडल कार्यालय प्रांगण में तीन सूत्री मांगों के समर्थन में अनिश्चितकालीन धरना शुरू हुआ. अध्यक्षता मंच के प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर महतो ने किया. जबकि इस दौरान पूर्व मुखिया फलजीत महतो, सदीक खान, राजेश शर्मा, घनश्याम महतो, टेकोचन्द महतो, चंद्रदेव बर्णवाल आदि उपस्थित थे. वहीं मंच के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जिला स्थानांतरण के तहत प्रखंड से 53 शिक्षक अन्य जिलों में स्थानांतरित हो गये. जबकि अन्य जिलों से मात्र 3 शिक्षक स्थानांतरित होकर डुमरी प्रखंड आये, जिससे प्रखंड में शिक्षण व्यवस्था पूरी तब से बिगड गया है. कहा कि प्रखड के सरकारी विद्यालयों में वर्षों से एक शिक्षक के द्वारा संचालित विद्यालयों में विषयवार शिक्षक की व्यवस्था नहीं रहने से शिक्षण व्यवस्था प्रभावित हो गया है. कहा कि जब तक जिला में पर्याप्त शिक्षक नहीं आयेंगे तबतक धरना जारी रहेगा.

नर्मदेश्वर मंदिर में महाप्रबंधक ने की पूजा अर्चना

कथारा। सीसीएल कथारा क्षेत्र के महाप्रबंधक श्री श्री 108 नर्मदेश्वर मंदिर में पूरे टीम के साथ पहुंच कर पूजा अर्चन कर सुख शांति और समृद्धि की मंगल कामना करते हुए कोलियरी के विस्तार उत्पादन में बढ़ोतरी और श्रमिकों के वेलफेयर की प्राथमिकता सुनिश्चित करते हुए भोले बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया. पूजा के बाद महाप्रबंधक ने कहा कि पूजा पाठ से मन में शांति की अनुभूति प्राप्त होती है. जब मन शांत हो तो कुछ सत्कर्म के लिए मन प्रेरित होता है. तब कहीं अच्छे सोच के कार्य को लेकर इंसान आगे बढ़ता है. धर्म कर्म से सत्कर्म की प्राप्ति होती है और सत्कर्म निष्ठा को आगे बढ़ता है. इस कड़ी में पूजा अर्चन कर क्षेत्र के समग्र विकास, लोगों में सुख शांति और समृद्धि के विकास हो इस सोच के तहत हम लोगों को कार्य करना चाहिए. मंदिर के पुरोहित रवि पांडे एवं सोनू पांडे ने पूरे वैदिक मंत्र से पूजा अर्चन कराया. इस अवसर पर मुख्य रूप से सीसीएल अधिकारी चंदन कुमार, आरके सिंह, रत्नेश कुमार, गौरव कुमार, गुरु प्रसाद मंडल सहित मंदिर समिति के सचिव अजय कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष चंद्रशेखर प्रसाद, उपाध्यक्ष देवेंद्र यादव, तपेश्वर चौहान, सहायक सचिव एम एन सिंह, सहायक सचिव विजय यादव, आशीष चक्रवर्ती, वेदव्यास चौबे, सुजीत मिश्रा, सुरेश ठाकुर, विजय नायक, रवि कुमार, हेमंत कुमार, सुरेश महतो, जितेंद्र नोनिया, उदय नाग, शशि कुमार, विक्की कुमार, रामकुमार मिश्र, बिंदु चंद हेंब्रम, प्रधान सेवक गंगा धनेश्वर यादव, छोटू रजक सहित अन्य शामिल थे.

अलविदा लैटरल इंट्री

सामाजिक न्याय आंदोलन का दबाव लगातार अपना असर दिखा रहा है. लैटरल इंट्री के मामले में चौतरफा विरोध को देखते हुए उसके वापस लेने की पहल कर दी गयी है. लैटरल इंट्री के मामले में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने तीखा विरोध एक्स पोस्ट के माध्यम से जताया था. राहुल गांधी ने संविधान पर इसे हमला बताया था. बसपा सुप्रीमो मायावती और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी जोरदार विरोध जताया. केंद्र सरकार के भीतर से भी विरोध के स्वर को मंत्री चिराग पासवान से स्वर दिया. इसके साथ देश भर के दर्जनों आदिवासी, दलित और पिछडे संगठनों, उसके बुद्धिजीवियों ने केंद्र सरकार पर आरक्षण को खत्म करने का अरोप लगाया. इसके साथ ही आदिवासियों और दलितों के आरक्षण में राज्यों को दिए गए वर्गीकरण के अधिकार और क्रिमी लेयर के मुद्दे का भी भारी विरोध हो रहा है. केंद्र सरकार पर इसका दबाव साफ नजर आ रहा है. आरक्षण का सवाल एक संवेनशील मुद्दा है. लोकसभा चुनाव के समय भी संविधान और आरक्षण के साथ जाति जनगणना के मुद्दे ने अपना असर दिखाया था. इस समय सामाजिक न्याय के सवाल पर राजनीतिक दलों के बीच चैंपियन होने की प्रतिस्पर्धा जारी है. इस बात को समझने की जरूरत है कि किसी भी निर्णय को थोपने का सामाजिक प्रतिकार अश्वयंभावी है. ऐसे हालात में एक सर्वसम्मत राय बनाने की जरूरत है. भारत के संविधान में भारत के 140 करोड़ लोगों की आत्मा बसती है. इसके साथ ही संविधान प्रदत्त अधिकारों के प्रति भी जागरूकता बढ़ी है. केंद्र सरकार को इस तथ्य को समझने की जरूरत है. लैटरल इंट्री बैकडोर से कारपोरेट समर्थकों को प्रवेश दिलाने की पहल के रूप में अपनी पहचान बना चुका है. देश ने देखा है कि आर्थिक मामलों की निगरानी करने वाली एक संस्था प्रमुख के रूप में हुई नियुक्ति को ले कर किस तरह विदेशी संस्थाएं रिपोर्ट दे रही हैं. सरकारी पदों पर सामाजिक विविधता की गारंटी केवल यूपीएससी की नियुक्ति प्रक्रिया से ही संभव है. जरूरत है कि उच्च पदों पर सामाजिक बहुलता और विविधता का पूरा ध्यान रखा जाए ताकि देश की नीतियों के निर्माण में समावेशी निर्णय का माहौल परिपक्व हो. ऐसा नहीं दिखना चाहिए कि कुछ चुनिंदा लोग ही देश की नीतियों के निर्धारण में प्रमुखता से हावी हैं. इस तथ्य को भी समझने की जरूरत है कि सामाजिक संतुलन का माहौल अब तेजी से बदला है. इसे स्वीकार करते हुए ही सरकार को निर्णय लेना चाहिए. 2024 के जनादेश के संदेशों का सबक भी यही है. भागीदारी का मतलब केवल प्रतिनिधित्व मात्र नहीं है, बल्कि उसे ज्यादा व्यापक धरातल प्रदान करने की अनिवार्यता है. आजादी के बाद देश में जिस तरह की सामाजिक शक्तियों का संतुलन बना है, उसे भी गंभीरता से समझने की जरूरत है. भारत के वंचित समूहों की ताकत उनकी एकता और भागीदारी की प्रक्रिया में ही अंतरनिहित है. लैटरल इंट्री यानी परीक्षा-प्रतियोगिता और संवैधानिक प्रावधानों के बगैर भारतीय प्रशासन में संयुक्त सचिव से लेकर निदेशक जैसे पदों पर निजी क्षेत्र के कथित प्रोफेशनल्स को मनमर्जी नियुक्त करने की पॉलिसी ! इस पॉलिसी के तहत 45 लोगों की होने जा रहीं नियुक्तियों की प्रक्रिया रद्द करनी पड़ी.

> सरकारी पदों पर सामाजिक विविधता की गारंटी केवल यूपीएससी की नियुक्ति प्रक्रिया से ही संभव है. जरूरत है कि उच्च पदों पर सामाजिक बहुलता और विविधता का पूरा ध्यान रखा जाए, ताकि देश की नीतियों के निर्माण में समावेशी निर्णय का माहौल परिपक्व हो.

सुभाषित

कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम्।
बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरेजनाः।।

विवाह के समय कन्या सुन्दर पति चाहती है. उसकी माताजी सधन जमाई चाहती है. उसके पिताजी ज्ञानी जमाई चाहते हैं तथा उसके बन्धु अच्छे परिवार से नाता जोड़ना चाहते हैं, परन्तु बाकी सभी लोग केवल अच्छा खाना चाहते हैं.

रात के अंधेरे पर स्त्रियों का धावा

पीड़िता एक बेहद होनहार छात्रा थी. परिवार की गरीबी उसकी प्रगति में बाधा नहीं बन सकी. उसके माता पिता दर्जी का काम करते थे. लेकिन उसने एमबीबीएस प्रवेश परीक्षा और आईआईटी जेईई दोनों एक साथ क्वालीफाई किया. पर उसने डॉक्टर बनने का फैसला किया. उसके परिवार की स्थिति सुधरने लगी थी. पिता दर्जी का काम छोड़कर गारमेंट का व्यापार करने लगे थे. वह पूरे मोहल्ले की प्यारी लड़की थी. लेकिन इस घटना ने स्त्री स्वाधीनता के हजारों स्वतंत्रता सेनानी पैदा कर दिए.

• देश-काल

अरुण कुमार त्रिपाठी

इस बार का पंद्रह अगस्त कुछ अलग था. अलग इसलिए नहीं कि एक दिन पहले अपने संबोधन में राष्ट्रपति महोदया ने विभाजन विभीषिका को याद किया. अलग इसलिए नहीं कि प्रधानमंत्री ने लाल किले के प्राचीर से सांप्रदायिक सिविल कोड को हटाकर सेक्यूलर सिविल कोड लाने की बात की. अलग इसलिए नहीं कि पिछली बार की तरह उन्होंने एक बार फिर महिलाओं की सुरक्षा की बात की. अलग इसलिए कि 14/15 की आधी रात को देश की तमाम महिलाएं अपने घरों में बैठकर टीवी नहीं देख रही थीं. वे अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कोलकाता से लेकर दिल्ली और देश के दूसरे शहरों में सड़कों पर उतर आई थीं. उनके हाथों में मशालें थीं और जुबान पर नारे थे और दिल में दुख और आक्रोश था. वे 'रिक्लेम द नाइट' के आंदोलन के साथ रात के अंधेरे को चीर रही थीं और मांग कर रही थीं कि हर सार्वजनिक स्थल पर महिलाओं को रात में भी उतनी ही सुरक्षा मिलनी चाहिए जितनी दिन में होती है. वे आधी आबादी के लिए अंधेरे और उजाले के बारे में इस फर्क को मिटा देना चाहती थीं और जवाब दे रही थीं उस मानस को जो बलात्कार और हत्या होने के बाद भी स्त्री को ही दोषी ठहराते हुए कहता है कि आखिर वे वहां गई क्यों थीं.

वे महिलाएं कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में नौ अगस्त की रात को पीजी मेडिकल पाठ्यक्रम की छात्रा और जूनियर डॉक्टर के साथ हुए बलात्कार के बाद उसकी हत्या का प्रतिरोध कर रही थीं. वैसे तो देश भर में हुए इस प्रतिरोध की भावना को मीडिया ने अलग अलग तरीके से दर्शाया लेकिन सबसे विशेष प्रस्तुति थी 'द टेलीग्राफ' की. उस अखबार ने स्वतंत्रता दिवस वाले दिन के अपने पहले पेज को पूरी तरह से काला कर दिया और उस पर रात में हो रहे महिलाओं के प्रदर्शन के साथ खबर का शीर्षक दिया----इन द डार्कनेस, डिफाइंस(अंधेरे में, प्रचंड प्रतिरोध). अखबार ने उस प्रदर्शन में आईं युवतियों से लेकर अस्सी नब्बे साल तक की महिलाओं से बात की. उन सबका जज्बा देखने और सुनने लायक था. एक बूढ़ी औरत कह रही थी कि वह डॉक्टर लड़की हम सबकी सेवा कर रही थी. मेरी भी ऐसी ही तीन पोतियां हैं. आज हम उनके लिए नहीं खड़े होंगे तो कब खड़े होंगे.

पीड़िता एक बेहद होनहार छात्रा थी. परिवार की गरीबी उसकी प्रगति में बाधा नहीं बन सकी. उसके माता पिता दर्जी का काम करते थे. लेकिन उसने एमबीबीएस प्रवेश परीक्षा और आईआईटी जेईई दोनों एक साथ क्वालीफाई किया. पर उसने डॉक्टर बनने का फैसला किया. उसके परिवार की स्थिति सुधरने लगी थी. पिता दर्जी का काम छोड़कर गारमेंट का व्यापार करने लगे थे. वह पूरे मोहल्ले की प्यारी लड़की थी. लेकिन इस घटना ने स्त्री स्वाधीनता के हजारों स्वतंत्रता सेनानी पैदा कर दिए. उन्होंने उम्र की सीमाएं तोड़ दीं और दिन और रात का अंतर मिटा दिया. कोलकाता से जिस तरह की खबरें आईं उससे लग रहा था कि जैसे 1947 में लोग आजादी का जश्न मनाने रात को सड़कों पर निकल पड़े थे वैसे ही इस बार वे स्त्रियों की आजादी की रक्षा के लिए बाहर आ गए थे.

रिक्लेम द नाइट' नाम के इस आंदोलन के लिए लोगों को जगाया एक 26 साल की समाजशास्त्र की छात्रा रिमझिम सिन्हा ने. उसकी फेसबुक पोस्ट ने लोगों को झकझोर दिया. हालांकि उसे यकीन नहीं था कि लोग इस तरह से निकलेंगे. उसे ज्यादा से ज्यादा सौ पचास लोगों के बाहर आने और रात के अंधेरे पर धावा बोलने की उम्मीद थी. लेकिन कॉलेज स्ट्रीट पर इतने लोग उतर आए कि सड़कों पर सिर ही सिर दिखाई पड़ रहे थे. कोई शंख बजा रहा था कोई नारा लगा रहा था, कोई मोबाइल जलाए था. इस आंदोलन की भारत में पहली प्रभावी झलक 2021 में निर्भया की बलात्कार-हत्या के बाद दिखी थी. उस समय दिल्ली का इंडिया गेट निर्भया को न्याय दिए जाने की मांग से गूंज उठा था. हालांकि इस आंदोलन का इतिहास अमेरिका के नारीवादी आंदोलन से शुरू होता है. जब 1975 में आफिस से घर लौटते समय सुसान अलेक्जेंडर की रास्ते में हत्या कर दी गई थी. बाद में इसी तरह का आंदोलन 1977 में इंग्लैंड में लीड्स में हुआ. उसी साल ऐसा ही आंदोलन जर्मनी में भी हुआ. धीरे धीरे यह आंदोलन रेडिकल फेमनिस्ट आंदोलन की रणनीति बन चुका है. जाहिर तौर पर हर सामाजिक आंदोलन का राजनीतिक पक्ष होता है और उससे राजनीति निकलती है.

एक ओर कहा जा रहा है कि इंटर्न डॉक्टर के साथ जो कुछ हुआ उसके लिए तृणमूल कांग्रेस के गुंडे जिम्मेदार हैं. अगर ऐसा न होता तो अभियुक्त तुरंत गिरफ्तार होता और कॉलेज के प्रिंसिपल पर कठोर कार्रवाई होती. बात तो यहां तक हो रही है कि वह इंटर्न कॉलेज के कई गहरे राज से परिचित हो गई थी और इसीलिए उसे सबक सिखाने के लिए ऐसा किया गया या करवाया गया. इसलिए इस मामले में बड़े लोगों का हाथ होने से इंकार नहीं किया जा सकता. अब चूंकि हाई कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद सीबीआई जांच कर रही तो देखना है कि कौन कौन सी साजिशें सामने आती हैं. लेकिन दूसरी ओर ममता बनर्जी जो कि प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री, गृहमंत्री होने के साथ मुख्यमंत्री भी हैं वे भी सड़क पर उतर आई हैं और अपराधी को एक हफ्ते में सजा दिलाकर फांसी दिए जाने की मांग कर रही हैं. ध्यान रहे कि ममता स्वयं एक स्त्री भी हैं. लेकिन इस राजनीतिक पैंतरेबाजी से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है स्त्रियों के भीतर पैदा हुआ स्वाधीनता का जज्बा. सवाल यह है कि 15 अगस्त की रात को 'रिक्लेम द नाइट' के आह्वान से शुरू हुआ यह आंदोलन क्या आरजी कर मेडिकल कॉलेज के अभियुक्त को सजा दिलाकर समाप्त हो जाएगा?

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

• बोधि-वृक्ष | सुज्ञ

मनोवृत्ति पर प्रभाव

परिवेश में जो कुछ भी होता है, उसका प्रभाव तो मनुष्य की मनोवृत्ति पर पड़ता ही, लेकिन उसमें खान-पान विशेष कारक होता है. कहावत है जैसा अन्न, वैसा मन. जैसा आहार, वैसा व्यवहार. अशुद्ध आहार से शुद्ध व्यवहार की अपेक्षा करना किसी बड़ी मूर्खता से कम नहीं है. इसका विलोम यह है-घर में हमेशा हमें बच्चों के सामने गालियों का प्रयोग करना चाहिये, ऐसे थोडा ही है कि बच्चे गालियां ही सीखेंगे? न भी सीखें और अच्छे शब्द ही अपनाए. या फ़िर उन्हीं का अधिकार होना चाहिए वे क्या सीखें, क्या बोलें. बच्चों के समक्ष ही टीवी पर थोडे बहुत अश्लील हिंसक फ़िल्म-कार्यक्रम देखने चाहिए, कोई देखने सुनने मात्र से थोडे ही ऐसी हरकते करने लगेंगे? और उन्हे क्या देखना क्या सुनना उनका अधिकार है जब बडे होंगे तो स्वतः ही निर्णय कर लेंगे क्या करना है और क्या नहीं, यह उनका अधिकार होना चाहिए. फ़िर भला हिंसक कृत्यों व मंतव्यो से ही उत्पन्न, मांसाहार से मन में हिंसक विचारों का प्रस्फुटन क्यों नहीं हो सकता? यह तर्क निर्थक हो जाता है कि 'जरूरी नहीं मांसाहारी क्रूर प्रकृति के ही हों.' न भी हों, किन्तु क्रूर प्रकृति के पनपने की संभावनाएं अधिक ही हो जाती है. विवेकशीलता इसी में है कि हमें परिणामो से पूर्व ही सम्भावनाओं से बचने के उपाय कर लेने चाहिए. किसी जीव की हिंसा किये बिना मांस प्राप्त करना असंभव है. हिंसा से विरत हुए बिना अहिंसा-भाव को ह्रदय में जगाना असम्भव है, अतः अहिंसा-भाव के अभाव में, दया, करूणा, प्रेम, अनुकम्पा, वात्सल्य दिखावे के शब्द मात्र रह जाते है. जीवों के प्रति करूणा लाए बिना, अहिंसा की मनोवृति प्रबल नहीं हो सकती. यह कुतर्क विषय से भ्रमित करने के लिए है कि 'पहले मानव के प्रति हिंसा समाप्त की जाय उसके बाद ही जानवरों पर दया के बारे में सोचा जाय.' मानव के साथ तो होने वाली हिंसाएं उसी के द्वेष और क्रोध का परिणाम होती है, और मानव के लिये द्वेष और क्रोध पर पूर्ण जीत हासिल करना आज तो सम्भव नहीं है. और निरिह निर्दोष जीव के साथ हमारे सम्बंध इस प्रकार क्रोध - द्वेष के साथ नहीं बिगडते, फ़िर इन निरपराधी ईश्वर की संतानों को क्यों दंड दिया जाय. अतः मै समझता हू मानव के कोमल भावों की अभिवृद्धि के लिये भी अहिंसा, जीवों से ही प्रारंभ की जानी चाहिए. वही विस्तृत होकर, परस्पर मानव सम्बंधो से भी क्रूरता दूर करने की प्रेरक बनती है. वस्तुतः समुचित अहिंसा के विचार ही हमें मानवों के प्रति भी सहिष्णु बनाते है. सर्वभूतों से सम्पूर्ण, सम्यक प्रेम ही, निष्पक्ष अहिंसा की मनोवृति को दृढ़भूत कर सकता है.

पदक चाहिए तो बदलनी होगी पूरी खेल नीति

• खेल जगत

जगमति सांगवान

पेरिस ओलंपिक में छह अगस्त को भारतीय खिलाड़ी विनेश फोगाट ने जिस प्रकार एक के बाद एक तीन बाऊट जीती और खास तौर पर अजेय मानी जाने वाली जापानी सुसाकी को हराया, उससे देश में उत्साह और आह्लाद पैदा हुआ. उसने महिला कुश्ती में पहली बार कोई गोल्ड मेडल जीतने की आस जगाई थी. लेकिन सात अगस्त की सुबह सौ ग्राम ओवरवेट होने की वजह से विनेश के डिसक्वालीफाई होने की खबर आते ही देशवासियों का वह आह्लाद विनेश के प्रति भारी हमदर्दी में बदलने लगा. बहरहाल, इस प्रकरण से कुछ लोगों में खेल सिस्टम के खिलाफ अविश्वास भी गहराया. कई फिल्मी हस्तियों व खिलाड़ियों की बयानबाजी, ओलंपिक डेलिगेशन द्वारा सही समय पर अधिकृत बयान न देने, तथा खेल मंत्री द्वारा संसद में पूरे प्रकरण को सिर्फ विनेश की ट्रेनिंग पर खर्च के हिसाब तक सिकोड़ देने का अच्छा संकेत नहीं गया.इसी प्रकार सेमीफाइनल के उपरांत एकदम विनेश के वेट में अचानक वृद्धि व अन्य कई सवालों का जवाब नहीं मिल रहा. इन निर्णायक क्षणों में आईओए, कुश्ती फेडरेशन, उसके कोच, फिजिशियन की भूमिका पर भी सवाल हैं. ऐसे में सरकारी तंत्र व खेल मंत्रालय को एक श्वेत पत्र के माध्यम से जनता से मुखातिब होना चाहिए. उतना ही जरूरी है हमारी खेल नीति में लिंग संवेदी बदलाव. पेरिस के वकीलों ने ओलंपिक अधिशासी कोर्ट के स्तर पर विनेश की ओर से उसकी कांस्य पदक साझा करने की अपील दर्ज करवा कर एक स्वागतयोग्य पहल की.जनता को विश्वास में लेने के लिए सरकारी तंत्र द्वारा यथासंभव तत्काल समुचित प्रयास करना इसलिए भी अति आवश्यक है क्योंकि इस पूरे प्रकरण की अपनी एक त्रासदीपूर्ण पृष्ठभूमि है. जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती. पिछले दिनों चाहे वह हरियाणा के पूर्व खेल मंत्री पर लगे यौनहिंसा के आरोप हों, कुश्ती संघ के तत्कालीन अध्यक्ष व भाजपा के शक्तिशाली पूर्व सांसद बृजभूषण पर विनेश समेत अन्य ओलंपियन खिलाड़ियों द्वारा यौन दुर्व्यवहार के खिलाफ जंतर-मंतर पर लड़ा गया अभूतपूर्व संघर्ष हो, जनता की नजर में सरकार की डीलिंग चुनावी कंसीडरेशन से संचालित रही है. यह कवायद महिला खिलाड़ियों को न्याय देने वाली नहीं थी. जिसके नकारात्मक असर खेल जगत पर पड़े हैं.यहां सवाल स्वाभाविक है कि न्याय के लिए आवाज उठाने वाली वह हरियाणा की ओलंपियन एथलीट जूनियर कोच हो या महिला ओलंपिक कुश्ती में देश के लिए पहली मेडल विजेता साक्षी मलिक और अब विनेश फोगाट. इन सभी को आखिर खेल ही क्यों छोड़ना पड़ा है? उनके मनोबल को पितृसत्तात्मक सिस्टम के ठेकेदार कब तक तोड़ते रहेंगे? सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बगैर तो एफआईआर तक दर्ज नहीं हुई.जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों को क्या इस चीज का अंदाजा नहीं है कि उनके संवेदनहीन व भेदभाव पूर्ण व्यवहार ने इन खिलाड़ियों व राष्ट्रीय गरिमा को कितनी ठेस पहुंचाई है? इन निहित स्वार्थी तत्वों के क्रियाकलापों के कारण कितनी बेटियों को उनके माता-पिता द्वारा खेल से दूर किया गया है? इस आधुनिक युग में भी जिन असंख्य एकलव्यों के अंगूठे कलम किये जा रहे हैं, वक्त उनका हिसाब लेगा.हकीकत में तो पूरे खेल जगत के प्रति ही सरकार का रवैया उपेक्षा पूर्ण नजर आता है. हाल का खेल बजट भी इसकी एक नजीर हो सकता है. इसमें खेलों के लिए बड़े बदलाव की उम्मीद नहीं जगती. जो खिलाड़ी इस बार पेरिस ओलंपिक में खेले हैं, उनकी अगर केस स्टडी की जाए तो पता लगेगा कि उनके संघर्ष के दौर में तो उनके परिवारों ने ही अपना बजट निचोड़ कर उनके खेल करियर निर्माण पर लगाया है. सरकारें तो मेडल जीतने के बाद ही जो पुरस्कृत करने की होड़ लगाती हैं उसकी आड़ में तो वे अपने ही राजनीतिक स्वार्थ साधते हैं. अपनी इमेज बिल्डिंग करते हैं. राजनीति को चमकाने के लिए इन खिलाड़ियों की उपलब्धियों को भुनाने को लालायित रहते हैं. अभी भी जो लोग खेलों में अपना कैरियर बना रहे हैं, वे वही हैं जिनके परिवारों के पास उनके ऊपर खर्च करने के लिए कुछ सामर्थ्य है. खास तौर पर महिला खिलाड़ी बनने की आकांक्षा रखने वाली साधारण परिवारों की बेटियों के सपने तो संसाधनों के अभाव में अभी भी आए दिन चूर-चूर हो रहे हैं. **(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

> पेरिस के वकीलों ने ओलंपिक अधिशासी कोर्ट के स्तर पर विनेश की ओर से उसकी कांस्य पदक साझा करने की अपील दर्ज करवा कर एक स्वागतयोग्य पहल की.जनता को विश्वास में लेने के लिए सरकारी तंत्र द्वारा यथासंभव तत्काल समुचित प्रयास करना इसलिए भी अति आवश्यक है क्योंकि इस पूरे प्रकरण की अपनी एक त्रासदीपूर्ण पृष्ठभूमि है.

तब पीने योग्य नहीं रह जाएगा भूजल

• जलवायु

मुकुल व्यास

दुनिया में लगभग हर चार में से एक व्यक्ति जीवित रहने के लिए पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद जलाशयों पर निर्भर है क्योंकि साफ पानी की झीलों, नदियों और बांधों तक सभी लोगों की पहुंच नहीं है. वैज्ञानिकों ने चेताया है कि सदी के अंत तक लाखों लोग पानी की इस मामूली आपूर्ति से भी वंचित हो सकते हैं क्योंकि बढ़ते तापमान के कारण उथले भूजल के विषाक्त होने का खतरा है. शोधकर्ताओं की एक अंतर्राष्ट्रीय टीम ने वैश्विक तापमान वृद्धि के विभिन्न परिदृश्यों के तहत दुनिया भर में भूजल स्रोतों के तापमान परिवर्तनों को सटीक संख्या में बताने के लिए ऊष्मा परिवहन का एक विश्व-स्तरीय मॉडल विकसित किया है. सबसे खराब स्थिति में, 2100 में लगभग 59 करोड़ लोग ऐसे जल स्रोतों पर निर्भर हो सकते हैं जो पीने योग्य पानी के लिए सबसे कड़े मानकों को पूरा नहीं करते हैं. इस समय गर्मी की लहरें, बर्फ की पिघलती हुई टोपियां और समुद्रों का बढ़ता स्तर नियमित रूप से सुर्खियां बटोर रहे हैं. लेकिन हमारा ध्यान भूमि पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों की तरफ नहीं जाता.जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करते हुए हमारा फोकस मौसम की घटनाओं और पानी की उपलब्धता पर रहता है. लेकिन हमें भूजल पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में अधिक व्यापक रूप से सोचने की आवश्यकता है. यह सच है कि हमारे पैरों के नीचे की चट्टान और मिट्टी की परतें समुद्री जल की गर्मी को अवशोषित करने की क्षमता से मेल नहीं खाती हैं. फिर भी,यह आश्चर्यजनक है कि भूजल के गर्म होने के परिणामों पर इतना कम ध्यान दिया गया है, खासकर जब पानी की कमी और रिचार्ज (पुनर्भरण) दर पर इतनी अधिक चर्चा होती है. सतह के ठीक नीचे छिद्रपूर्ण चट्टानों के भीतर फंसा पानी घुले हुए खनिजों, प्रदूषकों और संभावित रोगजनकों से भरा हो सकता है. लेकिन बहुत बड़ी आबादी के समक्ष इस प्रदूषित जल पर निर्भर रहने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है. इन भूमिगत जलाशयों को सिर्फ़ एक या दो डिग्री गर्म करने से परिणाम भयावह हो सकते हैं. इससे पर्यावरण में ऑक्सीजन की कमी हो सकती है और खतरनाक बैक्टीरिया के विकास को बढ़ावा मिल सकता है,या आर्सेनिक और मैंगनीज जैसी भारी धातुओं की अत्यधिक मात्रा पानी मे घुल सकती है.जलवायु परिवर्तन से संबंधित एक अन्य अध्ययन में वैज्ञानिकों ने दुनिया में मीथेन उत्सर्जन में वृद्धि पर चिंता व्यक्त की है. रिकॉर्ड तोड़ गर्मी, लोगों की गिरती सेहत, गायब होती बर्फ की चादरों और अप्रत्याशित मौसम के रूप में जलवायु परिवर्तन की बड़ी चेतावनियां हमें लगातार मिल रही हैं. फिर भी हम वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती मात्रा को उत्सर्जित कर रहे हैं. इससे हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है. विशेषज्ञों की एक अंतर्राष्ट्रीय टीम द्वारा किए गए एक नए अध्ययन में बताया गया है कि 2006 से वैश्विक मीथेन उत्सर्जन बढ़ रहा है. 2020 से इसमें तेजी आई है. यदि हम बहुत जल्द कुछ कठोर कदम नहीं उठाएंगे तो उत्सर्जन की यह प्रवृत्ति जारी रहेगी.नए अध्ययन के शोधकर्ताओं ने मीथेन उत्सर्जन रोकने के लिए रणनीतियां तैयार की हैं जिनका उपयोग विभिन्न देश उचित कार्रवाई करने के लिए कर सकते हैं. इसमें मदद करने के लिए उन्होंने एक ऑनलाइन टूल भी विकसित किया है. शोधकर्ताओं का कहना है कि मीथेन उत्सर्जन में यह निरंतर वृद्धि मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के लगातार उपयोग के कारण है. मीथेन सीधे तेल,गैस और कोयले की ड्रिलिंग और प्रोसेसिंग द्वारा उत्पादित होती है. अब एक नई बात यह है कि गर्म जलवायु के कारण प्राकृतिक आर्द्रभूमि से मीथेन का बढ़ता उत्सर्जन ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि कर रहे हैं. लैंडफिल, पिघलते हुए पर्माफ्रॉस्ट (स्थायी तुषार भूमि) और पशुधन से भी मीथेन का उत्पादन होता है. अमेरिका में ड्यूक विश्वविद्यालय के जलवायु विशेषज्ञ ड्रू शिंडेल का कहना है कि फिलहाल इन स्रोतों से उत्सर्जन में योगदान मामूली है. हालांकि इन पर भी बारीकी से नज़र रखने की ज़रूरत है.अध्ययन में पाया गया है कि इन सभी मीथेन स्रोतों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है. कार्बन डाइऑक्साइड में कमी लाने के लक्ष्यों के साथ-साथ मीथेन में कमी के लक्ष्यों को भी लागू किया जाना चाहिए. **(ये लेखक के निजी विचार हैं)**

> जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करते हुए हमारा फोकस मौसम की घटनाओं और पानी की उपलब्धता पर रहता है. लेकिन हमें भूजल पर पड़ने वाले जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के बारे में अधिक व्यापक रूप से सोचने की आवश्यकता है. यह सच है कि हमारे पैरों के नीचे की चट्टान और मिट्टी की परतें समुद्री जल की गर्मी को अवशोषित करने की क्षमता से मेल नहीं खाती हैं.

मीडिया में अन्यत्र

मॉलिवुड पर जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट

जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट में मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं के खिलाफ 17 प्रकार के शोषण का उल्लेख है. रिपोर्ट को सार्वजनिक करने में पांच साल लगे. इस रिपोर्ट में यौन उत्पीड़न रोकने वाले कानूनों की सीमाओं और ताकतवर लॉबी के प्रभाव का भी वर्णन है. रिपोर्ट में महिलाओं की असुरक्षा पर जोर दिया गया है. मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं की स्थिति को जाहिर करने वाली जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट आखिर सोमवार को सार्वजनिक हो गई. रिपोर्ट में दी गई बातें हैरान तो करती ही हैं, इस रिपोर्ट को सामने लाने के लिए जिस तरह की मशक्कत करनी पड़ी, वह भी अपने आप में बहुत कुछ कहती है. कमेटी का गठन 2017 में मलयालम फिल्मों की जानी-मानी अभिनेत्री के अपहरण और सेक्शुअल असॉल्ट की घटना के बाद किया गया था. कमेटी ने 2019 में अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी थी. लेकिन रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया गया. सूचना के अधिकार (RTI) के तहत किए गए आवेदनों के जरिए पांच साल के लंबे और कठिन संघर्ष के बाद यह रिपोर्ट पब्लिक डोमेन में लाई जा सकी. रिपोर्ट का कंटेंट देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों वहां की ताकतवर लॉबी इसे सार्वजनिक किए जाने के खिलाफ थी और क्यों उसने इसे लोगों की नजरों से छुपाए रखने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी थी. रिपोर्ट में कम से कम 17 तरह के शोषण गिनाए गए हैं, जिनसे केरल फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रही महिलाओं को गुजरना पड़ता है. इनमें लेडीज टॉयलेट और चेंजिंग रूम जैसी सुविधाओं की कमी और पारिश्रमिक में भेदभाव से लेकर काम के बदले में सेक्स की डिमांड तक तमाम तरह के शोषण शामिल हैं. रिपोर्ट में ठीक ही कहा गया है कि सेक्शुअल हैरासमेंट ऑफ विमिन एट वर्कप्लेस (प्रिवेंशन, प्रॉहिबिशन एंड रिड्रेसल) एक्ट 2013 जैसे कानून और इसके तहत अनिवार्य बताए गए इंटरनल कमेटी गठित करने जैसे प्रावधान इन मामलों में ज्यादा मदद नहीं करते. इसकी एक वजह यह है कि ये वर्कप्लेस पर हैरासमेंट की बात करते हैं जबकि फिल्म इंडस्ट्री में शोषण अक्सर काम मिलने से पहले ही शुरू हो जाता है. दूसरी बात यह कि शोषण करने वाले लोगों की लॉबी इतनी ताकतवर है कि शिकायत करने की हिम्मत दिखाने पर भी करिअर खत्म हो जाता है. भले जस्टिस हेमा कमेटी की यह रिपोर्ट सिर्फ केरल फिल्म इंडस्ट्री की बात करती हो, अन्य फिल्म इंडस्ट्री को लेकर भी ऐसे आरोप लगते रहे हैं. इजिस समय यह रिपोर्ट सार्वजनिक हुई है, कोलकाता में एक डॉक्टर के रेप और मर्डर की घटना को लेकर पूरा देश उद्वेलित है. **(एनबीटी)**

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

जान/पहचान

हिंदी फिल्मों के गानों में दशकों पूर्व अजीबोगरीब शब्दों का प्रयोग कर अद्भुत भाव उकेर दिये जाते थे. उदाहरण के लिए किशोर कुमार का गाया यह गीत तो आपने सुना ही होगा-अजनबी, तुम जाने पहचाने से लगते हो. भाव महसूस कीजिए, कोई या तो अजनबी होगा या जाना-पहचाना होगा. अगर जान-पहचान हो गयी तो फिर कोई अजनबी कैसे रह सकता है. यानी विरोधाभास अलंकार. दूसरा गाना रफी साहब की आवाज में प्रसिद्ध हुआ-तुमने किसी की जान को जाते हुए देखा है? देखो वो मुझसे रूठ कर मेरी जान जा रही है. जान निकलने के बाद तो बेजान हो जाना स्वाभाविक है, लेकिन फिल्मों का नायक जान जाने के बाद भी गाना गा रहा है. यानी विरोधाभास के साथ वक्रोक्ति. यह तो हुई मनोरंजन की बात. जान-पहचान शब्द हिंदी भाषा में बहु प्रचलित शब्द है. इसका प्रयोग अनपढ़ से लेकर विद्वान तक करते रहते हैं. जान शब्द के दो रूप हैं. एक तद्भव और दूसरा फारसी मूल. जान संज्ञा स्त्रीलिंग शब्द है. इसका मतलब है जानकारी, ज्ञान, समझ, परिचय, अनुमान, खयाल, राय. जान-पहचान का जान इसी वर्ग का शब्द है. फारसी मूल में भी जान संज्ञा स्त्रीलिंग ही है. इसका मतलब है किसी प्राणी या वस्तु को गतिमान या संचालित करनेवाला तत्व या शक्ति, प्राणशक्ति, शारीरिक क्षमता, जीवन, प्राण, जीवंतता, प्रेरणा, स्फूर्ति, शक्ति, बल, सामर्थ्य, दम, बूता, आधारभूत गुण, सौंदर्य या लालित्य, रस का गुण, किसी प्रिय के लिए किया जानेवाला संबोधन, जां के रूप में समासांत में भी प्रयुक्त, प्रेयसी, प्रिय, प्रेमी, पत्नी, बहुत प्यारी चीज, किसी वस्तु या कृति आदि की शोभा बढ़ाने वाला तत्व, सार-तत्व. फिल्म शोले का यह डायलॉग आपको याद होगा-बड़ी जान है तेरे इन हाथों में ठाकुर. पहचान भी संज्ञा स्त्रीलिंग शब्द है. इसका मतलब है पहचानने की क्रिया या भाव, किसी का गुण या मूल्य जानने की योग्यता, परख, निश्चित पहचान का चिह्न, परिचय, भेदक अभिलक्षण चिह्न, गुण-दोष के आधार पर वस्तु को परखने की शक्ति.

आनी चाहिए फीता काटने की कला

• तीर-तुक्का

रवि प्रकाश

फीता काटना एक कला है. जब कोई दस-बीस जगह जाकर तरह-तरह के लोगों को फीता काटते हुए देखता है और केवल देखता ही नहीं है, गहराई से उसका निरीक्षण करता है तथा अपना सारा चिंतन फीता काटने में लगा देता है, तब उसे फीता काटने के वास्तविक महात्म्य का पता चलता है. अन्यथा ज्यादातर लोग फीता काटने के लिए जाते हैं और कैंची हाथ में जैसे ही उन्हें पकड़ाई जाती है, फीता काट देते हैं. जबकि यह इतनी सरल और सीधी-सादी प्रक्रिया नहीं होती है. फीता काटने से पहले आदमी को चारों तरफ गर्व से सिर उठाकर देखना चाहिए. एक नजर फीते की ओर, दूसरी नजर चारों तरफ उपस्थित भीड़ की ओर. अगल-बगल-पीछे सबको देखने के बाद उसे कैंची हाथ में लेने की प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए अर्थात कैंची को बहुत नाजुक तरीके से हाथ में उठाना होता है. इसमें कभी भी अपनी उतावलेपन की भावना को प्रकट नहीं होने देना चाहिए. वरना मामला बिगड़ जाता है. भीतर भले ही कैंची को झटपट प्लेट से उठाकर फीता काटने की आंधियां चल रही हों, लेकिन व्यक्ति की कलात्मकता इसी में है कि वह मंद मंद मुस्कुराते हुए धीरे-धीरे कैंची को प्लेट से उठाए और हल्के-हल्के फीते तक ले जाए. बस यहां आकर थोड़ा-सा रुकने की जरूरत है. अभी आपको फीता नहीं काटना है. कुछ लोग इसी समय अपना हाथ आपकी कैंची की तरफ बढ़ाने के उत्सुक होंगे. उन्हें जबरन पीछे धकेलने की कला आपको आनी चाहिए. यह बात सुनिश्चित कर लीजिए कि कैंची अकेले आपके हाथों में ही सुशोभित होनी चाहिए. अगर अगल-बगल के दो लोगों ने भी कैंची को स्पर्श कर लिया, तो समझ लीजिए कि आपका श्रेय एक तिहाई रह जाएगा. कल को जब इतिहास लिखा जाएगा, तब फोटो को सबूत के तौर पर कोई भी प्रस्तुत करके यह कह सकता है कि फीता तीन लोगों ने काटा है. तब आप क्या करेंगे? सिवाय हाथ मलने के कुछ नहीं बचेगा? इसलिए कैंची को अपने शरीर के बीचो-बीच बिल्कुल सुरक्षित पोजीशन में रखिए. कैमरे की तरफ ध्यान अवश्य दें, लेकिन कैंची को चिंतन की धारा से बाहर न जाने दें. परोक्ष रूप से ध्यान पूर्णतः फीते पर ही रहना चाहिए. जरा सोचिए ! कितने उखाड़-पछाड़ के बाद फीता काटने का सौभाग्य जीवन में आता है! कितने पापड़ बेले! कितनी सिफारिशें पड़वाईं ! क्या-क्या सौदे नहीं किए! न जाने कितने वायदों के बाद फीता काटने की मंजूरी मिल पाती है! फीता काटने की दौड़ में अनेक प्रतियोगी लगे रहते हैं. एक अनार, सौ बीमार. जिसे फीता काटने का सौभाग्य मिल जाता है, सचमुच अपने आप को धन्य मानता है. दौड़ में एक को ही विजयश्री प्राप्त होती है. बाकी मन-मसोसकर रह जाते हैं कि यह जो फीता काटने का सौभाग्य अमुक को मिला है, काश हमें मिल जाता! अगर दांव लग जाता तो हम भी फीता काट रहे होते!

लाइफ लाइन

डॉ दीपक चंद्रा प्रकाश
न्यूरोलॉजिस्ट,मेडिका हॉस्पिटल और रांची न्यूरोलॉजी क्लीनिक

एमपॉक्स

डरिए नहीं, बस सर्तक रहिए

कोविड 19 वायरस से हम बमुश्किल अभी अभी तो उबरे हैं कि एक अन्य वायरस एमपॉक्स ने आतंक फैलाना शुरू कर दिया है. डब्ल्यूएचओ ने इसे ग्लोबल पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी करार दिया है. एमपॉक्स वायरस जानवरों से मनुष्यों में फैलता है. इसके लक्षणों में दाने निकलना, फफोले बनना, बुखार शामिल है. इसके लक्षण चेचक के समान होते हैं, हालांकि चिकित्सकीय रूप से यह कम गंभीर होता है. सामान्यतया, इसके लक्षण दो से चार सप्ताह तक रहते हैं.

एमपॉक्स क्या है?

एमपॉक्स एक वायरल बीमारी है जो मंकीपॉक्स वायरस के कारण होती है, जो ऑर्थोपॉक्सवायरस जीनस की एक प्रजाति है. एमपॉक्स को पहले मंकीपॉक्स के नाम से जाना जाता था. इस वायरस की पहचान वैज्ञानिकों ने पहली बार 1958 में की थी जब बंदरों में 'पॉक्स जैसी' बीमारी का प्रकोप हुआ था. एमपॉक्स वायरस के उसी परिवार 9से संबंधित है, जिसमें चेचक होता है.

यह कैसे फैलता है?

एमपॉक्स वायरल संक्रमण है. आमतौर पर संक्रमित व्यक्ति या जानवर के साथ संपर्क में आने से फैलता है. दो इंसान के बीच संक्रामक त्वचा या मुंह या जननांगों जैसे अन्य घावों के सीधे संपर्क के माध्यम से फैल सकता है. हालांकि विशेषज्ञ बताते हैं कि यह संक्रमण कपड़ों, टैटू की शॉप, पार्लर या अन्य पब्लिक जगहों पर यूज होने वाली कॉमन चीजों से भी फैल सकता है. जब संक्रमित पशु किसी इंसान को काटता है, खरोंचता है, चाटता है या ऐसी ही दूसरी गतिविधि करता है तो भी यह वायरस जानवरों से मनुष्यों में फैल सकता है.

पहचानिए लक्षण

एमपॉक्स के लक्षण वायरस के संपर्क में आने के 21 दिनों के अंदर दिखना शुरू होते हैं. एमपॉक्स से संक्रमित पीड़ित के शरीर पर आमतौर पर सबसे पहले दाने नजर आते हैं. ये दाने हाथ, पैर, छाती, चेहरे या मुंह या जननांगों के आसपास हो सकते हैं. कुछ दिनों बाद इन दानों में मवाद बन जाते हैं जो बाद में पपड़ी के रूप में तब्दील हो जाते हैं. बुखार, सिरदर्द और मांसपेशियों में दर्द आदि एमपॉक्स के अन्य लक्षण हो सकते हैं. वायरस से लड़ने की कोशिश करते समय लिम्फ नोड्स भी सूज सकते हैं. आम तौर पर ये लक्षण तीन दिन से तीन हफ्ते तक रह सकते हैं.

उपचार

हालांकि अब तक एमपॉक्स का अभी तक कोई खास इलाज नहीं है, लेकिन जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सुझाव दिया है, इसके लक्षणों पर दर्द और बुखार की दवा चिकित्सक देते हैं. कई बार मजबूत रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता होने पर और त्वचा संबंधी अधिक अगर किसी मरीज की इम्यूनिटी अच्छी है और उसे स्किन संबंधी लक्षण अधिक नहीं उभरे हों तो बिना किसी विशेष उपचार के भी वह ठीक हो सकता है. बस उसे देखभाल की जरूरत होगी.

इनको खतरा कम

मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक, जिन लोगों को छोटी चेचक या चिकनपॉक्स हो चुका है या इससे संबंधित टीका (वैक्सीन) लग चुका है, उनमें इस बीमारी के होने का खतरा नहीं के बराबर है.

झारखंड के औषधीय वृक्ष

वात, पित, दाह, रुधिरविकार, क्षय, नाशक होता है अमड़ा

आमड़ा या अमड़ा झारखंड में सर्वत्र मिलने वाला लोकप्रिय फल है जिसकी पहचान आचार और चटनी के लिए है. हिंदी और बंगला में आमड़ा नाम से पुकारते हैं तो अंग्रेजी में स्पौन्डियस मिनट और लैटिन में स्पौन्डियस मैंगिफेरा कहते हैं. यह एक ग्राम औषधीय वृक्ष हैं. चालीस पचास साल पहले यह झारखंड के वन प्रदेश में देखने को मिल जाता था. पर अब वन प्रदेश से विलुप्त हो गया है. लातेहार जिला के वन विभाग से रिटायर्ड और औषधीय वृक्ष के ज्ञाता स्व. एन. के. मिश्रा जी के अनुसार आजादी के बाद वन प्रदेश से वृक्षों की कटाई की नीलामी अर्थात निविदा प्रक्रिया के चलते और ग्रामीण द्वारा संरक्षण विहिन फल का दोहन के चलते विलुप्त हो गया है. जंगलों में अमरा के वृक्ष अब देखने को नहीं मिलते हैं.

अनिल कुमार पाठक
पारंपरिक चिकित्सक

कच्चा अमड़ा के फल खट्टे होते हैं और वात नाशक, रुचिकर, गरम, दस्तावर होता है और पके अमडा फल स्वदिष्ट, पाक में शीतल, तृप्तिकारक, कफकारी, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, भारी, वात, पित, दाह, क्षय, रुधिरविकारनाशक होता है.

अमड़ा के वृक्ष ऊंचे होते हैं. काण्ड स्थूल, त्वचा अर्थात वृक्ष की उपरी सतह का रंग श्वेत वर्ण का होता है. पत्र पीले चिकने और एक विशेष ढंग से छोटे छोटे पत्र आपस में जुड़े हुए रहते हैं और अग्रभाग में एक फुट पत्र होता है अर्थात एक प्यारा सा पता जुड़ा रहता है, बसंत ॠतु में मंजूरी आता है और जिसका रंग स्वर्ण वर्ण का होता है. देखने में मनभावन लगता है. फल का आकार बेर से थोड़ा सा बड़ा और अंडाकार होता है जिसे पूर्ण गोलाकार नहीं कह सकते हैं. ग्रीष्म ॠतु के अंत तक झारखंड के ग्रामीण इलाके के बाजार में उपलब्ध होने लगता है और ग्रामीण इलाकों से यह फल झारखंड की राजधानी रांची में बिकने के लिए आ जाते हैं. इस वृक्ष का छाल, फल, गोंद का उपयोग में लाया जाता है.

इस देहाती फल और वृक्ष को बहुत ही ज्यादा संरक्षण की आवश्यकता है और राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड रांची को वृक्षारोपण कार्यक्रम में इसे शामिल करना चाहिए.

(औषधीय पौधा की खेती एवं संवर्धन संरक्षण के जानकार)

सभी तस्वीर : अनिल कुमार पाठक

विटामिन बी 12 की कमी से हो सकती हाथ-पैरों की झुनझुनी

डॉ मनीषा घई
सीनियर कंसल्टेंट डाइटीशियन

विभिन्न तरह के विटामिन और मिनरल ऐसे पोषक तत्त्व हैं, जो शरीर के विभिन्न कार्यों में भूमिका निभाते हैं. इन्हें भोजन या सप्लीमेंट्स से लिया जाता है. इनके अभाव में शरीर में कई तरह की परेशानियां उभरने लगती है. ऐसा ही एक पोषक तत्व है विटामिन बी 12. विटामिन बी 12 हमारे शरीर के लिए काफी जरूरी होता है. यह वेजिटेरियन फूड्स की अपेक्षा नॉन-वेजिटेरियन फूड्स में अधिक पाया जाता है. विटामिन बी 12 की कमी के हाथ-पैर में कुछ संकेत दिखते हैं. आइए जानें कि विटामिन 12 किन खाद्य पदार्थों में पाया जाता है, इसकी कमी से क्या समस्या होती है आदि...

क्या है विटामिन बी 12

विटामिन बी12 एक आवश्यक पोषक तत्व है जो नॉनवेज, पनीर और अंडे जैसे एनीमल प्रोडक्ट्स में अधिक मात्रा में पाया जाता है. लाल रक्त कोशिकाओं के बिना शरीर ऑक्सीजन भी शरीर के अंगों तक नहीं ले जा सकता और विटामिन बी इन्हीं लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में भी मदद करता है. विटामिन बी की कमी कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है. विटामिन बी12 की कमी का आमतौर पर आसानी से इलाज किया जाता है लेकिन जब तक आप लक्षणों को पहचान नहीं लेते, तब तक वह आपके डेली रूटीन को मुश्किल बना सकता है. विटामिन बी की कमी के गंभीर मामलों में हार्ट फेल, डायबिटीज, गठिया और कैंसर का जोखिम हो सकता है.

क्या हैं इसके लक्षण

विटामिन बी12 की कमी विभिन्न तरीकों से सामने आ सकती है. सबसे आम लक्षणों में थकान, सुस्ती, सिरदर्द, बेहोशी महसूस होना या सांस लेने में मुश्किल होना है. हाथ और पैरों में झुनझुनी या सुन्नता भी विटामिन बी की कमी का संकेत है. दरअसल विटामिन बी 12 नर्व्स के स्वास्थ्य को सही रखने के लिए जरूरी है क्योंकि यह माइलिन के प्रोडक्शन में अहम भूमिका निभाता है जो नर्व्स के चारों ओर एक प्रोटेक्शन लेयर है. जब विटामिन बी12 कम होता है तो यह प्रोटेक्शन कमजोर हो सकती है जिससे नर्व की लेयर डैमेज हो जाती है जिससे हाथ-पैर में झुनझुनी होने लगती है. इससे अपच, दस्त, भूख में कमी, धड़कन, आंखों की समस्याएं, घाव या लाल जीभ, मुंह में छाले, मांसपेशियों में कमजोरी, डिमेंशिया आदि लक्षण भी विटामिन बी 12 की कमी के संकेत हो सकते हैं.

बचाव के लिए क्या करें

हमारा शरीर विटामिन बी 12 नहीं बनाता है. इसलिए इसे खाद्य पदार्थों और सप्लीमेंट से लिया जाता है. लेकिन अच्छी बात यह है कि यह हमारे शरीर में स्टोर रहता है. यानी दूसरे अन्य कई विटामिन की तरह फ्लश आउट नहीं होता. यदि आप शाकाहारी या वीगन हैं तो यह मुश्किल हो सकता है क्योंकि बी12 रेड मीट, मटन के लिवर, अंडे की पीले हिस्से, सी फूड आदि में पाया जाता है. मशरूम में भी इसकी अच्छी मात्रा होती है. कुछ मात्रा में इसे दूध, दही, पनीर, दालों आदि से भी पाया जा सकता है लेकिन नॉनवेज की तुलना में यह बेहद कम है. इसलिए शाकाहारियों में इसकी कमी होने पर ऐसे लोगों को विटामिन बी 12 सप्लीमेंट दिया जाता है.

इन्हें पड़ती अधिक जरूरत

उम्र के साथ शरीर की विटामिन्स को अवशोषित करने की क्षमता कम हो जाती है. इसलिए बुजुर्गों में इसकी अधिक जरुरत होती है. इसी तरह विटामिन बी9 (फोलिक एसिड) गर्भस्थ शिशु के विकास के लिए जरूरी है. गर्भवती महिलाओं को फोलिक एसिड की उचित मात्रा सुनिश्चित करनी चाहिए. चूंकि विटामिन बी12 मुख्य रूप से पशु उत्पादों में पाया जाता है. इसलिए शाकाहारी लोगों को इस विटामिन की कमी का सामना करना पड़ सकता है. तनाव, अवसाद जैसी समस्याओं के लिए विटामिन बी6 और बी12 अहम होते हैं. इसलिए मनोरोगियों के आहार में विटामिन बी 12 की उपलब्धता के लिए आश्वस्त हों.

दवाओं के साइड इफेक्ट से पायरिया!

डॉ आकांक्षा चौधरी
एमडीएस (मसूढ़ों एवं इंप्लांट सर्जरी विशेषज्ञ)

पायरिया या पीरियोडोंटाइटिस मसूड़ों का गंभीर संक्रमण है. यह एक आम बीमारी है जिससे दुनिया में 90 प्रतिशत लोग जूझ रहे हैं. यह अधिकतर ग्राम नेगेटिव, स्पाइरोकीट, बैसिलस बैक्टीरिया आदि के कारण होता है. इसमें जबड़े और मसूड़ों की हड्डी को नुकसान होता है. समय रहते इस बीमारी पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह बढ़कर इतना फैल जाती है कि दांत हिलना शुरू हो जाते हैं. हड्डी और दांतों के डैमेज को रोकने के लिए मौखिक स्वच्छता बनाए रखना जरूरी है.

पायरिया के लक्षण

मसूढ़ों से खून आना इसका सबसे प्रमुख लक्षण है. यह प्रायः टूथ ब्रश करने के दौरान होता है. दो दांतों के बीच की दूरी बढ़ने लगती है. दांतों का टूट कर गिरना इसके अन्य लक्षण हैं. मसूढ़े लाल हो जाते हैं. मसूढ़ों में सूजन की शिकायत होती है. सांसों से बदबू आती है और रोज ब्रश करने के बाद भी इससे पीड़ित शख्स के करीब आप कई बार नहीं जा पाते.

ये हैं कारण

1. **धूम्रपान करना :** मसूड़ों की बीमारी के लिए धूम्रपान को सबसे महत्वपूर्ण जोखिम कारक माना जाता है. तंबाकू के इस्तेमाल से मसूड़ों की बीमारी होती है. दरअसल, धूम्रपान और तंबाकू मुंह में हानिकारक बैक्टीरिया को पनपने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाते हैं. धूम्रपान न करने वाले लोगों के मुकाबले धूम्रपान करने वाले लोगों में ट्रीटमेंट का प्रभाव देरी से होता है.

2. **आनुवंशिकता :** कई बार सब कुछ ठीक तरीके से करते रहने के बाद भी मसूढों की बीमारी हो जाती है. आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा मसूढों की समस्याओं से ग्रस्त है और ये ओरल हेल्थ समस्याएं उन्हें आनुवंशिकता में मिली हैं.

3. **दवाएं :** एंटीडिप्रेसेंट दवाएं, एंटीहिस्टामिन जैसी दवाओं में ऐसे तत्व होते हैं, जो मुंह में लार बनने की क्रिया को धीमा करते हैं. लार दांतों को साफ रखने में मदद करती है, जिससे बैक्टीरिया की वृद्धि में रोकथाम होती है. इसलिए, लार की मात्रा कम होने से प्लैक और दांत में मैल जमा होने लगता है.

4. **डायबिटीज :** डायबिटीज होने की वजह से शरीर में कई तरह के और संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है. इनमें मसूढ़ों का इंफेक्शन भी शामिल है. मसूढ़ों में सूजन और पायरिया ये दोनों इंन्सुलिन इस्तेमाल करने की क्षमता को बिगाड़ देते हैं, जिससे शुगर को कंट्रोल करना मुश्किल हो जाता है.

5. **पोषण में कमी :** यदि आहार में विटामिन बी और सी, कैल्शियम आदि पोषक तत्व न हों, तो यह स्थिति मसूढ़ों के रोगों को बढ़ावा दे सकती है. कैल्शियम बहुत जरूरी होता है, क्योंकि यह हड्डियों को मजबूत रखता है इनमें दांतों को सहारा प्रदान करने वाली हड्डियां भी शामिल हैं. विटामिन सी संयोजी ऊतकों की मजबूती को बनाए रखने में मदद करता है.

6. **हार्मोन में बदलाव :** गर्भावस्था, मेनोपॉज और यहां तक कि मासिक धर्म के दौरान होने वाले हार्मोन में बदलाव मसूढ़ों को पायरिया होने के प्रति अतिसंवेदनशील बना देते हैं. इससे पायरिया की आशंका बढ़ जाती है.

पायरिया से बचाव

दांतों को स्वस्थ बनाने के लिए ओरल हाइजीन जरूरी है.

- सुबह उठने के बाद और रात को सोने से पहले ब्रश अवश्य करें.
- ब्रश करने की तरह फ्लॉसिंग करने की भी आदत डालें इससे दांतों की सफाई सही तरीके से होगी.
- सिगरेट या तंबाकू जैसी चीजों का सेवन बंद कर दें.

पायरिया से बचने के लिए कुछ आवश्यक खाद्य पदार्थ

1. पोषक तत्व और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर क्रेनबेरी दांतों और मसूढ़ों के लिए अच्छा स्रोत है.
2. अदरक और लहसुन के सेवन से दांतों और मसूढ़ों की परेशानी कम होती है.
3. दिन में एक से दो कप ग्रीन टी सेहत को स्वस्थ रखने के साथ दांतों को भी स्वस्थ रखता है.
4. सोयाबीन में मौजूद पर्याप्त विटामिन और मिनरल फायदेमंद होता है.
5. आहार में ब्रोकली के सेवन से भी फायदा मिलता है.
6. स्वस्थ मुंह के लिए चुइंगम चबाने की आदत डालें लेकिन ध्यान रहे इसे बहुत देर तक चबाते ना रहें.
7. गाजर और पालक का रस पीने से फायदा होता है.
8. सेंधा नमक या अनार के छिलके का पाउडर बना कर नियमित दांतों पर मसाज करना.
10. खाने के बाद ठीक तरह से कुल्ला करने से दांतों को सफाई हो जाती है.

पांव पसार रही हैं ये बीमारियां

बरसात में मच्छरों का प्रकोप बढ़ जाता है. इसके साथ ही बढ़ जाती है मच्छरों से होने वाली बीमारियों की आशंका. आइए आज हम मच्छरों से होने वाली कुछ आम बीमारियों और उसके लक्षणों की करें चर्चा ...

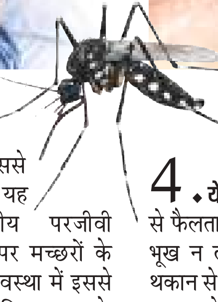

1. **मलेरिया** – मच्छर जनित बीमारियों में मलेरिया सबसे चर्चित है. झारखंड समेत पूरे देश में इससे हर साल लाखों लोग प्रभावित होते हैं. यह प्लास्मोडियम जीनस के एककोशिकीय परजीवी के कारण होता है. परजीवी आमतौर पर मच्छरों के काटने से मनुष्यों में फैलता है. गंभीर अवस्था में इससे श्वसन संबंधी समस्याएं और ऑर्गन फेलियर तक के लक्षण नजर आ सकते हैं और समुचित इलाज के अभाव में यह जानलेवा भी हो सकता है.

2. **डेंगू** - डेंगू फैलाने के लिए एडीज मच्छर जिम्मेदार माना जाता है. यह रुके हुए पानी में होता है. कूलर, नाली, निर्माण स्थलों, गर्म पानी की टंकियों, स्विमिंग पूल, गमलों, कूड़े-कचरों में मच्छर की यह प्रजाति पनप सकती है. तेज बुखार, जोड़ों और मांसपेशियों में गंभीर दर्द, आंखों में परेशानी और गंभीर मामलों में ब्लीडिंग बुखार या शॉक सिंड्रोम जैसे लक्षण हो सकते हैं. ये लक्षण एक हफ्ते या अधिक समय तक बने रहते हैं. गंभीर अवस्था में यह भी जानलेवा हो सकता है.

3. **जापानी एन्सेफलाइटिस** - जापानी एन्सेफलाइटिस एक वायरल दिमाग संक्रमण है जो क्यूलेक्स मच्छरों से फैलता है. इसके गंभीर मामलों में दिमाग में सूजन हो सकती है और कोमा या मृत्यु हो सकती है.

4. **येलो फीवर या पीला बुखार** - यह भी एडीज मच्छर से फैलता है. यह वायरल है. हल्का बुखार, ठंड लगना, भूख न लगना, मतली, पीठ में परेशानी, सिरदर्द और थकान से लेकर गंभीर पीलिया और आंतरिक ब्लीडिंग जैसे लक्षण हो सकते हैं. आमतौर पर पांच दिनों के अंदर ये समस्या ठीक हो जाती है. भारत में इसकी आशंका नहीं है.

5. **चिकनगुनिया** - बुखार, जोड़ों में परेशानी और सूजन, मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द और दाने आदि लक्षण चिकनगुनिया में उभर सकते हैं. आमतौर पर इन लक्षणों से हफ्ते भर के भीतर राहत मिल जाती है. हालांकि, इस बीमारी से हुई जोड़ों की परेशानी महीनों या सालों तक रह सकती है.

6. **जीका वायरस** - एडीज मच्छरों से फैलने वाले जीका वायरस में डेंगू जैसे लक्षण उभर सकते हैं. बुखार, सिरदर्द, दाने, जोड़ों में दर्द और लाल आंखें आदि. गर्भवती महिलाओं और गर्भधारण की योजना बना रही महिलाओं को इस बीमारी से सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

भारत की स्टार क्रिकेटर स्मृति मंधाना टॉप-3 में पहुंचीं, हरमनप्रीत नौवें स्थान पर

हरमनप्रीत कौर

आईसीसी ने जारी की महिला वनडे रैंकिंग

एजेंसी। दुबई

भारत की स्टार खिलाड़ी और उप-कप्तान स्मृति मंधाना महिलाओं की आईसीसी (इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल) वनडे रैंकिंग में एक पायदान के सुधार के साथ तीसरे स्थान पर पहुंच गयी हैं. मंधाना के नाम 738 रेटिंग अंक है और वह वनडे प्रारूप में भारत की शीर्ष रैंकिंग वाली बल्लेबाज है. कप्तान हरमनप्रीत कौर ने इस सूची में अपना नौवां स्थान बरकरार रखा है. श्रीलंका की दिग्गज बल्लेबाज चमारी अट्टापट्टू तीसरे से चौथे स्थान पर खिसक गई जबकि टीम की उनकी साथी बल्लेबाज नीलाक्षिका डी सिल्वा (तीन पायदान ऊपर 32वें), हर्षिता समरविक्रमा (आठ स्थान के सुधार के साथ 44वें) और कविशा दिलहारी (चार स्थान के सुधार के साथ 50वें पायदान) ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया. मंधाना टी20 इंटरनेशनल रैंकिंग में अपने चौथे स्थान का बचाव करने में सफल रही. समरविक्रमा और आयरलैंड की सलामी बल्लेबाज गैबी लुईस करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग हासिल करने में सफल रहे.श्रीलंका और आयरलैंड के बीच खेले गये दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय में 44 गेंद में 65 रन बनाने वाली समरविक्रमा तीन स्थान के सुधार के साथ 13वें तो वहीं 75 गेंद में 119 रन की मैच जिताऊ पारी खेलने वाली लुईस चार स्थान के सुधार के साथ 21 स्थान पर पहुंच गयी. लुईस इससे पहले जुलाई 2022 में इस रैंकिंग पर पहुंची थी.

आरसीबी को बनाया था चैंपियन

आईपीएल में जो काम रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की टीम नहीं कर सकी उसे वुमेंस प्रीमियर लीग में स्मृति मंधाना की अगुआई वाली टीम ने कर दिखाया था. मंधाना की कप्तानी में आरसीबी टीम पहली बार ट्रॉफी जीतने में सफल रही थी. स्मृति मंधाना ने साल 2016 में अपना पहला वनडे शतक बनाया था, जब उन्होंने होबार्ट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 109 गेंदों में 102 रन बनाए थे.

स्मृति मंधाना

ब्रीफ खबरें

सतीश जापान ओपन के प्री क्वार्टर फाइनल में

योकोहामा (जापान)। भारत के बैडमिंटन खिलाड़ी सतीश कुमार करुणाकरन ने बुधवार को यहां पहले दौर में डेनमार्क के एंडर्स एंटोनसन के मैच के बीच में चोटिल होने के कारण हटने पर जापान ओपन के पुरुष एकल के प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई. भारत के 23 साल के सतीश जब 6-1 से आगे चल रहे थे तब दुनिया के तीसरे नंबर के खिलाड़ी एंटोनसन ने योकोहामा एरेना में मुकाबले के तीसरे मिनट में ही हटने का फैसला किया. दुनिया के 47वें नंबर के खिलाड़ी सतीश प्री क्वार्टर फाइनल में थाईलैंड के केंटाफोन वैंगचेरोएन से भिड़ेंगे.

साउथ दिल्ली सुपर स्टार्स ने सेंट्रल दिल्ली को हराया

नयी दिल्ली। प्रियांश आर्य की 51 गेंदों में 82 रन की शानदार पारी की बदौलत साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स ने यहां दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) क्रिकेट टूर्नामेंट में सेंट्रल दिल्ली किंग्स को छह विकेट से हराया. सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने मंगलवार को खेले गए मैच में पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद ध्रुव कौशिक (56) और यश ढुल (52) के अर्धशतकों की मदद से सात विकेट पर 176 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया.

श्रीलंका ने लिया पहले बल्लेबाजी का फैसला

मैनचेस्टर। श्रीलंका ने इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला के पहले टेस्ट में बुधवार को यहां टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया. वेस्टइंडीज के खिलाफ 3-0 की जीत के बाद इस श्रृंखला में खेल रहा इंग्लैंड कप्तान बेन स्टोक्स के बिना उतरा है जिन्हें इस महीने घरेलू मैच के दौरान पैर की मांसपेशियों में चोट लग गई थी. ओली पोप कप्तान की भूमिका निभा रहे हैं जबकि डैन लॉरेंस को जैक क्राउली की जगह पारी का आगाज करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है.

एरिका एंड्रीवा ने डेनिएल कोलिन्स को हराया

मॉन्टेरी (मैक्सिको)। एरिका एंड्रीवा ने पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करते हुए शीर्ष वरीयता प्राप्त डेनिएल कोलिन्स को हराकर मॉन्टेरी डब्ल्यूटीए 500 हार्डकोर्ट टेनिस प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया. एंड्रीवा ने देर रात तक चले इस मैच में 1-6, 6-3, 6-3 से जीत दर्ज की. यह पहला अवसर है जबकि उन्होंने विश्व रैंकिंग में शीर्ष 20 में शामिल किसी खिलाड़ी को हराया. यही नहीं वह पहली बार किसी शीर्ष स्तरीय डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंची हैं.

एडम गिलक्रिस्ट दुनिया के तीन महान विकेटकीपर्स के नाम बताए

एडम गिलक्रिस्ट ने धौनी को बताया विकेटकीपर नंबर-2

महान क्रिकेटर रॉडनी मार्श को पहले स्थान पर रखा

एजेंसी। मेलबर्न

क्रिकेट की दुनिया के महान विकेटकीपर बल्लेबाजों में शुमार महान ऑस्ट्रेलियाई विकेटकीपर बल्लेबाज एडम गिलक्रिस्ट ने दुनिया के तीन महान विकेटकीपर चुने हैं. उन्होंने भारत के महान महेंद्र सिंह धोनी को तीन महानतम विकेटकीपर बल्लेबाजों में शामिल किया है. हालांकि, गिलक्रिस्ट ने धोनी को नंबर-2 पर रखा है. उन्होंने पहला नाम नाम अपने ही देश के दिग्गज क्रिकेटर का लिया. दूसरा नाम महेंद्र सिंह धोनी का लिया कर तीसरे नंबर पर श्रीलंका के एक दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज को शामिल किया है. गिलक्रिस्ट ने एमएस धौनी से पहले ऑस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर रॉडनी मार्श का नाम लिया. गिलक्रिस्ट ने कहा कि मार्श उनके आदर्श थे. 2003 और 2007 के वर्ल्ड कप विजेता गिलक्रिस्ट ने धौनी की कूलनेस की सराहना करते हुए उनका नाम लिया. आखिर में उन्होंने श्रीलंका के कुमार संगाकारा का नाम लिया.

एडम गिलक्रिस्ट

रॉडनी मार्श

एमएस धौनी

कुमार संगाकारा

तीनों विकेटकीपर के रिकॉर्ड इस प्रकार हैं

गिलक्रिस्ट ने जो तीन नाम चुने हैं उनके विकेटकीपिंग रिकॉर्ड पर नजर डालें तो रॉडनी मार्श ऑस्ट्रेलिया के लिए 96 टेस्ट मैचों में 343 कैच लपके और 12 स्टंप आउट भी किए. वहीं, वनडे में उन्होंने 92 मैच खेलते हुए 120 कैच लपके और 4 स्टंप किए. भारतीय दिग्गज विकेटकीपर धौनी ने 90 टेस्ट मैचों में 256 कैच लपके और 38 स्टंप किए. वहीं, वनडे में उन्होंने 350 मैच खेलते हुए कुल 321 कैच और स्टंप पूरे किए. टी20 इंटरनेशनल में धौनी के नाम 57 कैच और 34 स्टंप दर्ज हैं. यह उन्होंने 98 मैच खेलते हुए हासिल किए. कुमार संगाकारा ने 134 टेस्ट खेले, जिसमें 182 कैच और 20 स्टंप किए. वनडे में 404 मैच खेलते हुए 402 कैच और 99 स्टंप पूरे किए. टी20 इंटरनेशनल में इस दिग्गज ने 25 कैच और 20 स्टंप किए. यह उन्होंने 56 मैच खेलने के दौरान हासिल किया.

दोस्तों के साथ छुट्टी मनाते दिखे एमएस धौनी, सोशल मीडिया पर फोटो वायरल

रांची। महेंद्र सिंह धौनी इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं. वह अब सिर्फ आईपीएल में खेलते हुए नजर आते हैं. धौनी अपने परिवार के साथ रांची में ही रहते हैं. इस दौरान छुट्टियों पर घूमने के लिए वह बाहर भी निकलते हैं. सोशल मीडिया पर एक तस्वीर काफी तेजी से वायरल हुई. इसमें महेंद्र सिंह धोनी अपने दोस्तों के साथ बैठे हैं और पार्टी करते हुए नजर आ रहे हैं. यह तस्वीर झारखंड के रांची शहर की है. इसमें धौनी क्रिकेट से दूर अपने दोस्तों के साथ मौज मस्ती करते हुए दिखाई दिए. धौनी के साथ बैठे उनके दोस्त में से किसी को पहचान पाना मुश्किल है. इसका मतलब ये है कि यह उनके रांची के करीबी दोस्त हैं. धौनी को कुछ दिन पहले रांची के सड़कों पर बाइक चलाते हुए भी देखा गया था. धौनी के फैंस जानते हैं कि उन्हें बाइक चलाना कितना पसंद है.

आपको बता दें कि रांची के सिमलिया में स्थित धौनी का बंगला है. दौनी के बंगले में उनके पालतू डॉग के अलावा कई सारे पेट्स हैं, जिनके साथ धौनी समय गुजारते हुए नजर आते हैं. इसके अलावा रांची के सैंबो में धौनी का फार्म हाउस है. जहां कई एकड़ में धौनी खेती करते हैं. जब भी धौनी रांची दौरे पर आते हैं तो वह परिवार के साथ अपने फॉर्म हाउस आना नहीं भूलते. भारतीय टीम के पूर्व क्रिकेटर महेंद्र सिंह धौनी बेशक विश्व क्रिकेट के सबसे बेहतरीन कप्तानों में से एक थे. उनकी कप्तानी में भारत ने 3 आईसीसी ट्रॉफी जीतने का कारनामा किया है. धौनी की कप्तानी में भारत ने साल 2007 और साल 2011 का विश्व कप जीता था. 2011 के विश्व कप में धौनी ने छक्का लगाकर टीम को जीत दिलाई थी.

रौनक दहिया को अंडर-17 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में कांस्य पदक

भाषा। अम्मान (जॉर्डन)

भारत के रौनक दहिया ने यहां चल रही अंडर-17 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में ग्रीको रोमन शैली के 110 किग्रा भार वर्ग में कांस्य पदक जीता. अपने आयु वर्ग की रैंकिंग में दूसरे नंबर पर काबिज रौनक ने कांस्य पदक के प्लेऑफ में तुर्की के इमरुल्लाह कैपकन को आसानी से 6-1 से हराया. यह मौजूद चैंपियनशिप में भारत का पहला पदक है. इससे पहले रौनक सेमीफाइनल में हंगरी के रजत पदक विजेता ज़ोल्टन कज़ाको से हार गए थे. इस वर्ग में स्वर्ण पदक यूक्रेन के इवान यानकोवस्की ने जीता, जिन्होंने तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर कजाको को 13-4 से हराया. भारत के पास 51 किग्रा रेपेचेज में दूसरा पदक जीतने का मौका है लेकिन

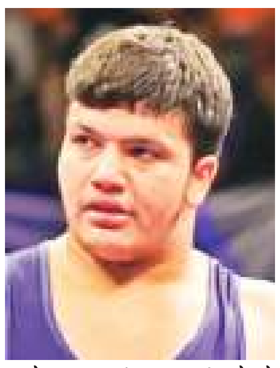

इसके लिए साईनाथ पारधी को दो मुकाबले जीतने होंगे. उनका पहला मुकाबला अमेरिका के डोमिनिक माइकल मुनारेटो से होगा. अगर वह यह मुकाबला जीत जाते हैं तो उन्हें कांस्य पदक के लिए आर्मेनिया के सर्गिस हारुत्युनन और जॉर्जिया के इउरी चैपिडेज के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ना होगा.

कियान नासिरी नया चेहरा

झिंगन संभावित खिलाड़ियों में नहीं

भाषा। नयी दिल्ली

सेंटर-बैक संदेश झिंगन को भारत के नए मुख्य कोच मनोलो मार्केज़ ने इंटरकॉन्टिनेंटल कप फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए बुधवार को चुनी गई 26 सदस्यीय संभावित टीम में नहीं लिया है जबकि ईस्ट बंगाल की तरफ से खेलने वाले ईरान के फुटबॉलर जमशेद नासिरी के बेटे और चेन्नईयिन एफसी के फॉरवर्ड कियान नासिरी के रूप में नया चेहरा टीम में शामिल किया गया है. मोहन बागान एसजी के राइट-बैक आशीष राय और ईस्ट बंगाल के गोलकीपर प्रभुसुखन सिंह गिल को भी तीन से नौ सितंबर तक हैदराबाद में होने वाले तीन देशों के टूर्नामेंट के लिए लगाए जाने वाले शिविर के लिए संभावित टीम में लिया गया है. जनवरी में सीरिया के खिलाफ भारत के एशियाई कप ग्रुप मैच के दौरान डिफेंडर झिंगन के दाहिने

घुटने में चोट लगी थी और माना जा रहा है कि वह अभी तक चोट से उबर नहीं पाए हैं.

यह 31 वर्षीय सेंट्रल डिफेंडर मई में कुवैत और कतर के खिलाफ फीफा विश्व कप 2026 प्रारंभिक संयुक्त क्वालीफिकेशन राउंड दो के मैचों में भी नहीं खेल पाया था. इंटरकॉन्टिनेंटल कप में भारत के अलावा सीरिया और मॉरीशस की टीम भाग लेंगी. भारत फीफा की नवीनतम विश्व रैंकिंग में 124वें जबकि सीरिया 93वें और मॉरीशस 179वें स्थान पर है. अभ्यास शिविर 31 अगस्त से हैदराबाद में शुरू होगा.

सिंकफील्ड कप : गुकेश ने नेपोमनियाचची से ड्रॉ खेला

भाषा। सेंट लुई (अमेरिका)

विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने सिंकफील्ड कप शतरंज टूर्नामेंट के दूसरे दौर में रूस के इयान नेपोमनियाचची के साथ रोमांचक ड्रॉ खेला, जिससे वह संयुक्त दूसरे स्थान पर बने हुए हैं. अपनी पहली बाजी में मौजूदा विश्व चैंपियन चीन के डिंग लिरेन के साथ अपेक्षाकृत आसान ड्रॉ खेलने के बाद गुकेश में यहां नेपोमनियाचची के खिलाफ रोमांचक मुकाबला खेला. भारतीय खिलाड़ी सफेद मोहरों से खेल रहा था और वह

कुछ बेहतर स्थिति में भी दिख रहा था, लेकिन रूस के खिलाड़ी ने उन्हें कोई मौका नहीं दिया. दोनों खिलाड़ी 60 चाल के बाद ड्रॉ पर सहमत हो गए. भारत के एक अन्य खिलाड़ी आर प्रज्ञाननंदा ने फ्रांस के मैक्सिम वाचिएर लाग्रेव के साथ ड्रॉ खेला.

शाह को दो अग्रणी टीमों ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड से समर्थन मिल चुका है!

आईसीसी के नए चेयरमैन बन सकते हैं जय शाह

- 27 अगस्त तक अगले अध्यक्ष के लिए नॉमिनेशन करना होगा

एजेंसी। नयी दिल्ली

जय शाह आईसीसी के नए चेयरमैन बन सकते हैं. वर्तमान अध्यक्ष ग्रेग बार्कले ने एक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की, जबकि शासी निकाय और इसके प्रमुख ब्रॉडकास्ट अधिकार धारक स्टार के बीच 4.46 बिलियन डॉलर का विवाद चल रहा है. ऐसे में नए चेयरमैन को लेकर जय शाह का

नाम उभरकर सामने आ रहा है. बीसीसीआई के महासचिव के तौर पर उनके कार्यकाल ने भारत को सबसे ताकतवर क्रिकेट बोर्ड के तौर पर अपनी पकड़ और मजबूत करने में मदद की है. द ऐज की रिपोर्ट के अनुसार, शाह को नॉमिनेशन के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की दो अग्रणी टीमों ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड से समर्थन प्राप्त हो चुका है. आईसीसी के प्रवक्ता ने बताया, आईसीसी के अध्यक्ष ग्रेग बार्कले ने बोर्ड को पुष्टि की है कि वह तीसरे कार्यकाल के लिए खड़े नहीं होंगे और नवंबर के अंत में अपना वर्तमान कार्यकाल समाप्त होने पर पद से हट जाएंगे. बार्कले को नवंबर 2020 में स्वतंत्र आईसीसी अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था, जिसके बाद उन्हें 2022 में फिर से चुना गया था. आईसीसी अधिकारी ने कहा, वर्तमान निदेशकों को अब 27 अगस्त, 2024 तक अगले अध्यक्ष के लिए नॉमिनेशन प्रस्तुत करना होगा, और यदि एक से अधिक उम्मीदवार हैं, तो चुनाव होगा.

डालमिया और पवार रह चुके हैं आईसीसी प्रमुख

जगमोहन डालमिया (1997 से 2000) और शरद पवार (2010-2012) केवल दो भारतीय हैं जिन्होंने अतीत में आईसीसी के प्रमुख का पद संभाला है. बीसीसीआई के महासचिव के रूप में शाह का कार्यकाल 2025 में समाप्त हो रहा है. इसके बाद वो एक नई भूमिका में नजर आ सकते हैं. किसी भी व्यक्ति को आईसीसी के अध्यक्ष के रूप में चुने जाने के लिए, उस व्यक्ति को 16 में से कम से कम नौ वोट प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, जो कि 51 प्रतिशत है.

टेस्ट मैच फीवर ऑस्ट्रेलिया 2014-15 के बाद से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी नहीं जीत पाया है

एशेज के समान महत्वपूर्ण है बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी: स्टार्क

भाषा। सिडनी

ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क का मानना है कि भारत के खिलाफ होने वाली बॉर्डर गावस्कर ट्राफी में तीन दशक में पहली बार पांच टेस्ट मैच खेले जाएंगे जिससे यह श्रृंखला उनकी टीम के लिए प्रतिष्ठित एशेज के समान महत्वपूर्ण हो गई है।

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच नवंबर में शुरू होने वाली महत्वपूर्ण श्रृंखला में 1991-92 के बाद पहली बार पांच टेस्ट मैच खेले जाएंगे. स्टार्क ने वाइड वर्ल्ड ऑफ स्पोर्ट्स से कहा,इस बार यह पांच मैच की श्रृंखला होगी, जिससे यह एशेज श्रृंखला के समान महत्वपूर्ण हो गई है. ऑस्ट्रेलिया 2014-15 के बाद से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी नहीं जीत पाया है जबकि भारत ने इस बीच लगातार चार श्रृंखला जीती हैं. भारत ने इस दौरान दो बार 2018-19 और 2020-21 में ऑस्ट्रेलिया को उसकी धरती पर हराया. स्टार्क न केवल श्रृंखला जीतने का इरादा रखते हैं, बल्कि वह चाहते हैं कि उनकी टीम क्लीन स्वीप करे, विशेष कर तब जबकि यह श्रृंखला विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का हिस्सा है. उन्होंने कहा, हम अपनी घरेलू धरती पर प्रत्येक मैच में जीत हासिल करना चाहते हैं और हम यह भी जानते हैं कि भारत की टीम काफी मजबूत है.

भारत विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की तालिका में अभी पहले जबकि ऑस्ट्रेलिया दूसरे स्थान पर है. स्टार्क ने कहा, भारत और ऑस्ट्रेलिया अभी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष पर काबिज हैं. इसलिए प्रशंसकों और निश्चित रूप से खिलाड़ियों के लिए एक बहुत ही रोमांचक श्रृंखला होने वाली है. उम्मीद है कि आठ जनवरी को ट्रॉफी हमारे हाथ में होगी. स्टार्क 100 टेस्ट मैच खेलने से केवल 11 मैच दूर हैं और बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज का अभी लंबी अवधि के प्रारूप से संन्यास लेने का कोई इरादा नहीं है. उन्होंने कहा, जब भी मुझे बैगी ग्रीन कैप पहनने का मौका मिलता है तो यह बहुत खास लगता है. उम्मीद है कि गर्मियों के सत्र में हम पांचों टेस्ट मैच जीतने में सफल रहेंगे. जहां तक 100 टेस्ट मैच खेलने का सवाल है तो निश्चित तौर पर यह बहुत खास होगा. स्टार्क अगले महीने सीमित ओवरों की श्रृंखला के लिए इंग्लैंड जाएंगे और इसके बाद बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी की तैयारी के लिए न्यू साउथ वेल्स की तरफ से घरेलू क्रिकेट में खेलेंगे. मेरे लिए टेस्ट क्रिकेट हमेशा प्राथमिकता में रहा है. आगामी सत्र में हमें सात टेस्ट मैच खेलने हैं. इनमें से पांच भारत और दो श्रीलंका के खिलाफ होंगे.

अंतिल की अगुआई में पहला जत्था पेरिस रवाना

पैरा एथलीटों की नजरें 12 पदक पर

भाषा। नयी दिल्ली

पांच स्वर्ण सहित एक दर्जन पदक जीतने की उम्मीद के साथ भारत के पैरालंपिक एथलीटों का पहला जत्था स्टार भाला फेंक खिलाड़ी सुमित अंतिल की अगुआई में पेरिस पैरालंपिक के लिए रवाना हो गया है. परिस्थितियों के अनुकूल खुद को ढालने के लिए पैरालंपिक खिलाड़ी समय से पहले रवाना हुए हैं. देश के 16 पैरा एथलीट उद्घाटन समारोह से तीन दिन पहले 25 अगस्त को खेल गांव में प्रवेश करेंगे और उससे पहले कुछ दिन पेरिस के होटलों में रुकेंगे. पैरालंपिक में अपने खिताब की रक्षा करने वाला पहला भारतीय बनने के लिए चुनौती पेश करने वाले अंतिल

सहित अन्य भारतीय खिलाड़ी फ्रांस की राजधानी के पास की सुविधाओं में प्रशिक्षण लेंगे ताकि वे वहां के मौसम के अनुकूल खुद को ढाल सकें. पैरा एथलेटिक्स स्पर्धाएं 30 अगस्त से पैरालंपिक के समापन दिवस आठ सितंबर तक 'स्टेड डी फ्रांस' में आयोजित की जाएंगी. इसी स्टेडियम में पेरिस ओलंपिक के दौरान सक्षम खिलाड़ियों ने प्रतिस्पर्धा की थी. पैरा एथलेटिक्स के मुख्य कोच सत्यनारायण ने पीटीआई को बताया, सुमित अंतिल और कुछ अन्य पैरा एथलीट खेल गांव में प्रवेश करने से पहले कुछ दिनों के लिए नेल्सन मंडेला खेल परिसर में प्रशिक्षण लेंगे. नेल्सन मंडेला खेल परिसर स्टेड डी फ्रांस से लगभग पांच किमी दूर है. इसमें एथलेटिक्स, रग्बी, टेनिस, व्हीलचेयर टेनिस और तैराकी के लिए अत्याधुनिक प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं. सत्यनारायाण ने कहा, कुछ लोग खेल गांव के पास के होटलों में रुकेंगे और वे दिन के समय वहां प्रशिक्षण सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष बारहवें भाव में चंद्रमा राहु का योग है. गलत खर्च और लोगों से बचें. धन के साथ-साथ प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. किसी खास चीज अच्छा लाभ का योग है. सहकर्मियों से मनमुटाव हो सकती है, इसलिए असावधानी न बरतें. हनुमानजी का पूजन ध्यान करें.

वृष गलत आय से बचें. वैसे आय के लिए दिन बहुत ही अच्छा है. दोपहर के बाद समय बहुत ही अनुकूल है. अन्य साथियों से आगे ले जायेगी. किसी करीबी दोस्त से धोखा मिल सकता है. आंखें बंद करके किसी पर विश्वास न करें. गौ माता का सेवा करें.

मिथुन समय अनुकूल है. आय भाव में चन्द्र है. सात्विक आय ज्यादा लाभकारी होगा. आर्थिक स्थिति पूरी तरह से सामान्य रहेगी, धन की आवक सामान्य तौर पर बनी रहेगी, वहीं खर्च भी बढ़ सकते हैं. अपना धन किसी को उधार न दें.

कर्क धर्म के प्रति मन उदासीन होगा. कोई बड़ा लाभ होगा. परिवार में सुख शांति भरपूर रहेगी. किसी शुभ कार्य के होने का संकेत भी सितारे दे रहे हैं. किसी विवाद में न पडें. धन आगमन से मन खुश होगा. हनुमान चालीसा का पाठ करें.

सिंह धर्म से भाग्य उदय होगा. कर्म के लिए दिन अच्छा है. मनोरंजक होगी. ससुराल से अच्छा लाभ का मौका दिख रहा है. जीवनसाथी से संबंध थोड़े बेहतर होंगे. कहीं पैसा फंसने का भी योग बन रहा है और कोई भी जोखिम भरा कार्य ना करें.

कन्या थोड़ा मानसिक तनाव होगा. पर भाग्य का साथ मिलेगा. आप कार्य में अपनी पसंदीदा चीजों की तरफ ध्यान देंगे. किसी करीबी से धोखा मिल सकता है, अतः आंखें बंद करके किसी पर विश्वास न करें. यात्रा का योग है.

तुला जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. कोई नया कार्य कर सकते हैं. शौक की तरफ रुझान रहेगा, जबकि स्पोर्ट्स, योग आपको तरोताजा होने में मदद करेंगे. कुछ गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचा सकते हैं. कोई बड़ा बदलाव होगा.

वृश्चिक समय सामान्य है. मानसिक उलझन वाला दिन होगा. एकाग्र होने में मदद मिलेगी और आप खुद को तरोताजा महसूस करेंगे. अपने रुझान में कूटनीतिक रहने की कोशिश करें और विवाद न करें. शिवलिंग पर दूध का अर्पण करें.

धनु समय सामान्य है. कार्य में बिलंब होने से मन खिन्न होगा. संतान के कार्य पर नज़र रखें. धर्म से सही मार्ग मिलेगा. मेहनत एवं अनुभव द्वारा कुछ नवीन स्थिति को पाएंगे. विषम परिस्थितियों में साहस न खोएं. काली वस्तु का दान करें.

मकर आपके प्रभाव से अच्छे लाभ का योग है. पर किसी से विवाद नहीं करें. माता और उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा. बिना बात के किसी से भी उलझना भरी पड़ सकता है. दुर्गा माता का ध्यान करें. जूता और अन्न का दान करें.

कुंभ भाई के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा. शिक्षा में बदलाव होगा. नयी जिम्मेदारी का भार भी आपके कंधों पर डाला जायेगा. नियमित जीवनचर्या एवं संयमित खानपान में कोताही न बरतें. स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें.

मीन लग्न में राहु का योग है, उदर विकार से बचें. किसी से विवाद होगा. पैतृक संपत्ति का लाभ होगा. अपने कामकाज को बढ़ाने में सफल होंगे. कार्य से सम्बंधित यात्राओं का लाभ मिलेगा. किसी वाद-विवाद के कारण किसी प्रकार के नुकसान से बचें.

एआईएमआईएम ने किया हल्ला बोल-पोल खोल कार्यक्रम

गढ़वा। एआईएमआईएम के तत्वावधान में जिले के चिनियां प्रखंड के चिनियां बाजार और भारतीय स्टेट बैंक के समीप हल्ला बोल पोल खोल कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस अवसर पर मुख्य रूप से एआईएमआईएम के पलामू प्रमंडल प्रभारी सह गढ़वा रंका विधान सभा के प्रत्याशी डॉ एमएन खान उपस्थित थे. मौके पर डॉ एमएन खान ने कहा कि सहायक अध्यापकों का वेतनमान की मांग एक ज्वलंत मुद्दा है. बावजूद इसके यहां के स्थानीय विधायक सह प्रदेश के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के द्वारा कोई पहल नहीं की जा रही है. आज सहायक अध्यापक दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं. सहायक अध्यापक कई बार अपनी मांगों को लेकर आंदोलन किया, लेकिन उन्हें लाठी और आश्वासन के सिवाय कुछ हासिल नहीं हुआ है. उन्होंने कहा कि पिछले दिनों प्रदेश के शिक्षा मंत्री बैधनाथ राम की अध्यक्षता में सहायक अध्यापक संघ के प्रतिनिधि मंडल के साथ बैठक हुई थी, लेकिन बैठक में शिक्षा मंत्री बैधनाथ राम के द्वारा सहायक अध्यापकों की मानदेय में सिर्फ दो हजार रुपए की बढ़ोतरी किए जाने की बात कही गई. मौके पर जिलाध्यक्ष सत्येंद्र कुमार रजक, संरक्षक अब्दुल शकूर अंसारी, उपाध्यक्ष आशिक मंसूरी, मौलाना मजहर हुसैन, मोजाहिम अंसारी, मुजाहिद अंसारी, साबिर अंसारी, रहीमुद्दीन अंसारी, हसनैन मंसूरी, विनय सिंह खरवार, दशरथ सिंह खरवार, सुनील यादव, जितेंद्र यादव, उपेंद्र यादव, गढ़वा प्रखंड मीडिया प्रभारी दाऊद इब्राहिम, जमीरउद्दीन अंसारी आदि उपस्थित थे.

मंईयां सम्मान योजना : गढ़वा में अब तक दो लाख से अधिक आवेदन हो चुके स्वीकृत

मंईयां सम्मान योजना ऐतिहासिक : मिथिलेश

संवाददाता। गढ़वा

गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने कहा है कि झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना देश का अब तक की ऐतिहासिक योजना है. इस योजना से राज्य की आधी आबादी एक साथ लाभान्वित हो रही है. मंत्री ने कहा कि झारखंड के इतिहास में अब तक किसी भी सरकार ने इतनी बड़ी जनकल्याणकारी योजना लागू नहीं की है, जिससे बहन बेटियों को स्वावलंबी बनने में मदद मिले. इस योजना से राज्य की सभी बहन बेटियों में आशा की नई किरण जगी है. मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि इस योजना से अब तक अकेले गढ़वा जिला में दो लाख से अधिक बहन-बेटी लाभान्वित हो चुकी हैं. उन्होंने बताया कि जिले में अब तक दो लाख 22 हजार 264 आवेदन प्राप्त हुए हैं. जांच के बाद इनमें 1726 आवेदन रिजेक्ट हो गया है, जबकि दो लाख छह हजार 414 आवेदन अप्रूव हुआ है, 14 हजार 124 आवेदन लंबित है. सभी के खाते में पैसा जाना शुरू हो गया है. प्रति माह 15 तारीख तक सभी के खाते में 1000 रुपये नियमित रूप से जमा हो जाएगा. इससे बहन-बेटियों को अपने कार्यों में बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त होगा. महिला स्वावलंबन की दिशा में झारखंड सरकार का बहुत बड़ी पहल है.

फर्जी कॉल से रहें सावधान, किसी को नहीं दें अकाउंट डिटेल : मंत्री

गढ़वा। झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने गढ़वा सहित पूरे राज्य की जनता से फर्जी कॉल से सावधान रहने की अपील की है. उन्होंने कहा है कि झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से संबंधित अपने अकाउंट डिटेल की जानकारी किसी को भी नहीं दें. मंत्री ने कहा है कि झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के संदर्भ में कई लाभुकों के मोबाइल नंबर पर योजना को लेकर कॉल आने की जानकारी मिल रही है, जो पूरी तरह से फर्जी है. इसलिए योजना के तहत निबंधित बहन - बेटियों

से आग्रह है कि योजना के संदर्भ में या राशि हस्तांतरण से संबंधित कॉल आने पर ओटीपी या अपने बैंक खाते से संबंधित जानकारी कॉल करने वाले के साथ कदापि साझा नहीं करें. झारखंड पुलिस ऐसे मामलों को लेकर सतर्क है.

एक्शन में फॉरेस्ट डिपार्टमेंट: विभागों से मांगी टेकन रिपोर्ट

प्रमुख संवाददाता। रांची

फॉरेस्ट डिपार्टमेंट ने सरकारी विभागों से एक्शन टेकन रिपोर्ट मांगी. केंद्र सरकार के निर्देश पर फॉरेस्ट डिपार्टमेंट ने राज्य के ग्रामीण विकास, नगर विकास, भवन निर्माण विभाग सहित अन्य कार्य विभागों से यह रिपोर्ट मांगी है. इसकी वजह यह है कि भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा क्लाइमेंट चेंज पर गाइडलाइन तैयार की जा रही है. इसको लेकर लोस सेक्रेट्रेरियट ने सभी सरकारों को पत्र भी लिखा है. इसमें इस बात का भी जिक्र किया गया है वायु प्रदूषण को रोकने के लिए अब तक राज्य सरकारों ने क्या-क्या उपाए किए हैं.

रिपोर्ट के आधार पर राज्यों को मिलेगा अनुदान : राज्यों की रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार अनुदान देगी, जिससे पर्यावरण और वायु प्रदूषण में सुधार के काम किए जाएंगे. इसके तहत, वृक्षारोपण, परिवहन, नागरिक सुविधा से जुड़े कार्य किये जाने हैं.

झारखंड में क्या है स्थिति : झारखंड में 32165 निजी भवन, मॉल और बैंक्वेट हॉल को पर्यावरण स्वीकृति नहीं मिली है. वहीं विस, कोर्ट सहित सभी सरकारी भवनों को पर्यावरण स्वीकृति मिल चुकी है. स्मार्ट सिटी, अटल वेंडर मार्केट, नगर निगम ऑफिस, कलेक्टेरियट सहित जिलों के सभी सरकारी भवनों को पर्यावरण स्वीकृति मिल चुकी है.

पूरे देश में कांग्रेस पार्टी ईडी ऑफिस के समक्ष विरोध जताएगी

कांग्रेस आज ईडी कार्यालय के समक्ष करेगी प्रदर्शन

विशेष संवाददाता। रांची

कांग्रेस अपने पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत झारखंड सहित पूरे देश में ईडी कार्यालयों के समक्ष 22 अगस्त को बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन आयोजित करेगी. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पिछले दिनों राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी की उपस्थिति में बैठक हुई थी. इसमें पहली बार हिंडनबर्ग रिपोर्ट में सामने आयी अडाणी महाघोटाला की जांच संसदीय समिति (जेपीसी) से कराने की मांग की है. इसको लेकर यह आंदोलन किया जाएगा. यह जानकारी देते हुए मीडिया विभाग के चेयरमैन सतीश पॉल मुंजीनी ने बताया कि हाल के खुलासों ने वित्तीय बाजार नियामक सेबी के गंभीर समझौते को और उजागर कर दिया है, जिसके लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है.हर दिन, इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर और अधिक खुलासे सामने आ रहे हैं, जो स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करते हैं. उन्होंने बताया कि उस बैठक में अडाणी महाघोटाला, देशव्यापी जाति जनगणना और भारत के संविधान अन्तर्गत निहित आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक न्याय के प्रावधानों के वास्तविक सम्मान की आवश्यकता सहित कई गंभीर मुद्दे शामिल रहेंगे.

आज रांची ईडी कार्यालय के समक्ष होगा प्रदर्शन

झारखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश निर्देशानुसार आगामी 22 अगस्त 2024 को सुबह 11.30 बजे हिनू रांची (एयरपोर्ट रोड) स्थिति ईडी कार्यालय के समक्ष विरोध प्रर्दशन होगा. जिसमें प्रदेश स्तर से लेकर जिला, महानगर स्तर के नेता एवं कार्यकर्ता हिस्सा लेंगे.

आज मीर संग रांची आएंगे केशव महतो

प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर एवं नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश 22 अगस्त को दिन के 12.15 बजे रांची आएंगे. बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा उनका भव्य स्वागत किया जायेगा. इसके बाद कर्पूरी ठाकुर चौक हिनू,भगवान बिरसा मुंडा चौक, वीर बुद्धू भगत अरगोड़ा,हरमू चौक में कार्तिक उरांव, हातमा में सिदो-कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए कांग्रेस

भवन पहुंचेंगे. कांग्रेस भवन में महतो राजेश ठाकुर से प्रभार ग्रहण करेंगे. इसके बाद उनका पार्टी नेताओं के द्वारा स्वागत एवं अभिनंदन किया जाएगा.

गिरिनाथ सिंह ने किया मेराल के गांवों का दौरा

संवाददाता। गढ़वा

परिवर्तन सह जनसंपर्क यात्रा के दौरान पूर्व मंत्री गिरिनाथ सिंह के नेतृत्व में मेराल प्रखंड के विभिन्न गांवों का दौरा किया गया. यात्रा ग्राम मेराल के मकुना टोला, छवनवा टोला ग्राम कुम्भी के सुकठवा टोला, चरका पत्थर टोला, अबादगंज में किया गया. मौके पर पूर्व मंत्री सिंह ने कहा कि अयूब मंसूरी की निर्मम हत्या कर दिया गया. वह एक समाजसेवी था लोगों की मदद करता था, इसीलिए उसे रास्ते से हटा दिया गया. लोग जब जांच की मांग करने गए तो मंत्री ने डांट कर भगा दिया. पूरे गढ़वा विस में गुंडागर्दी, माफियागिरी, भ्रष्टाचार चरम पर है. मंत्री अपने बिचौलियों के साथ गढ़वा को लूटने का काम कर रहे हैं. इसी क्रम में मेराल प्रखंड अंतर्गत ग्राम चिरौंजिया

वार्ड सदस्य नौशाद के घर के समीप भारतीय जनता पार्टी, झामुमो एवं अन्य दलों को छोड़ लगभग 200 लोगों को माला पहनाकर परिवर्तन यात्रा में शामिल किया एवं साथ चलने का संकल्प किया. टीम में शामिल होने वालों में नौशाद अली, संतोष ठाकुर, कासिम अंसारी, पिंटू चौधरी, महबूब अंसारी, समीर अंसारी, बब्लू ठाकुर, असगर अंसारी, मुख्तार अंसारी, बबलू महतो, डॉ सोनू, एजाज अंसारी, गुलाम फरीद, सरिता देवी, तसरीन बीबी, बब्लु ठाकुर, कांति देवी, सलीम अंसारी, सतेंद्र चौधरी, बीरेंद्र चौधरी, रामकुमार मेहता, गुड्डू मेहता आदि का नाम शामिल है. मौके पर बाबूल सिंह, पूर्व मुखिया प्रदीप साव, शिवनाथ चौधरी, अवध सिंह, सुनील चंद्रवंशी, प्रद्युमन, अल्मुद्दीन अंसारी सदर, ख़ुर्शीद, अहमद अंसारी, मुबारक अंसारी, यासिन अंसारी, यकीब अखतर, राम सागर महतो, रामदेव चौधरी आदि उपस्थित थे.

भीम आर्मी के सदस्यों ने किया धरना-प्रदर्शन

संवाददाता। मझिआंव

गढ़वा जिले के विभिन्न प्रखंड क्षेत्रों में विभिन्न संगठनों द्वारा बुधवार को धरना प्रदर्शन किया गया. भीम आर्मी भारत एकता मिशन जिला अध्यक्ष ललित राम की अध्यक्षता में मझिआंव में धरना प्रदर्शन किया गया. सभी सदस्यों ने सबसे पहले प्रखंड मुख्यालय के समीप तीन मुहान पर धरना प्रदर्शन किया. उसके बाद मझिआंव-गढ़वा मुख्य पथ को करीब तीन घंटे तक सड़क को

जाम कर धरना प्रदर्शन और केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की गई. वहीं मझिआंव में बंद का असर मिला जुला देखा गया.

इस संबंध में अध्यक्ष ललित राम ने कहा कि केंद्र सरकार का आरक्षण के खिलाफ गलत नियत है, जिसको लेकर महामहिम राष्ट्रपति महोदया भारत के नाम जिलाधिकारी को पत्र दिया जा रहा है. बीएसपी से सुनेश्वर राम, बिगु राम, सुदेश्वर राम, आजाद समाज पार्टी से बिचुन राम, उमेश राम, श्रीराम एवं विजय राम, युगल राम, सरवन राम, पिंटू राम, बबलू कुमार राम सहित अन्य लोगों ने हस्ताक्षर युक्त आवेदन दिया है। धरना प्रदर्शन के दौरान सैकड़ो की संख्या में लोग शामिल थे.

दिल्ली से लौटने के बाद छात्राओं को किया गया सम्मानित

संवाददाता। लातेहार

दिल्ली से लातेहार लौटने के बाद पीएमश्री कस्तूरबा विद्यालय, मनिका की छात्राओं को सम्मानित किया गया. जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रिंस कुमार व समग्र शिक्षा अभियान के एडीपीओ अनूप माइकल केरकेट्टा ने छात्राओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया. बता दें कि पीएमश्री कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय मनिका की पांच छात्राएं रक्षा बंधन के अवसर पर दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को राखियां बांधने के लिए चयनित की गयी थी. छात्रायें विद्यालय की शिक्षिका गीता कुमारी के संरक्षण में दिल्ली गयी थी. छात्राएं रक्षा बंधन के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति को राखियां बांधी और उन्हें झारखंड के सोहराय कला से संबंधित पेंटिंग सौंपी थी. राष्ट्रपति भवन में छात्राओं ने राष्ट्रपति के साथ ग्रुप फोटो भी खिंचवाई थी. छात्राओं को ग्रुप फोटो भी उपलब्ध कराया गया. जिला शिक्षा पदाधिकारी श्री कुमार ने छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं दी और छात्राओं से उनके अनुभव जाने. उन्होने छात्राओं को इस सुनहने पल को हमेशा याद कर आगे बढ़ने की सलाह दी. कहा कि ऐसे अवसर बहुत ही कम लोगों को मिलता है. इससे हमेशा प्रोत्साहित होना चाहिए.

विनोद जायसवाल फिर बने विहिप के खूंटी जिलाध्यक्ष, मिली बधाई

खूंटी। जिले के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता विनोद जायसवाल को फिर से विश्व हिंदू परिषद का खूंटी जिला बनाया गया है जबकि मुकेश जायसवाल को खूंटी नगर का अध्यक्ष बनाया गया है. कोडरमा में पिछले दिन विहिप की हुई प्रांत बैठक में विश्व हिन्दू परिषद में कुछ नये लोगों को भी दायित्व दिया गया है. इस आशय की जानकारी देते हुए अध्यक्ष विनोद जायसवाल ने बुधवार को कहा कि राजीव कुमार झा को जिला मंत्री बनाया गया है. जिला समरसता प्रमुख बिरेंद्र सोनी बनाये गये हैं. जिला कार्यकर्ता विशेष संपर्क प्रमुख सह नगर अध्यक्ष का दायित्व मुकेश जायसवाल को दिया गया है. इनके अलावा बजरंग दल जिला संयोजक अभिषेक कुमार, बजरंग दल जिला सह संयोजक मनीष कुमार, जिला उपाध्यक्ष शिव राज सिंह, अजय साहू और विकास मिश्रा बनाये गये हैं जबकि जिला कोषाध्यक्ष प्रवीण कुमार जायसवाल को बनाया गया है.

डीएसपी सत्येंद्र नारायण सिंह ने प्रेसवार्ता कर दी जानकारी

चोरी के सामान के साथ एक युवक को किया गिरफ्तार, भेजा गया जेल

संवाददाता। गढ़वा

धुरकी थाना के निकट राजकीयकृत 2 उच्च विद्यालय के अनुसूचित जाति के छात्रावास से हुई चोरी का खुलासा पुलिस ने कर लिया है. बुधवार को धुरकी थाना में डीएसपी सत्येंद्र नारायण सिंह ने प्रेसवार्ता कर जानकारी दी है. वहीं घटना में शामिल एक युवक को गिरफ्तार किया गया साथ ही चोरी की गई सामान को भी बरामद कर लिया गया.

डीएसपी ने बताया की विद्यालय के प्रधानाध्यापक दिनेश पाठक के द्वारा लिखित शिकायत मिली थी की 15 जून को अज्ञात चोरों ने छात्रावास से करीब 40 बेड, 80 फाइबर की कुर्सी एवं गद्दा की चोरी कर ली गई है. इस संबंध में धुरकी थाना में प्राथमिकी दर्ज करते हुए अनुसंधान

शुरू किया गया, जिसमें छापामारी दल में थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार, सब इंस्पेक्टर बिक्कू कुमार रजक, एएसआई शैलेंद्र कुमार, आरक्षी पिंकु कुमार सहित सशस्त्र बल के नेतृत्व में अनुसंधान के क्रम में संदेह के आधार पर अजय कुमार, ग्राम धुरकी को हिरासत में लेकर पूछताछ किया गया. पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपनी संलिप्तता स्वीकार कर लिया. वही आरोपी ने कांड में शामिल रोहित कुमार चंद्रवंशी की भी संलिप्तता बताई है. वही पुलिस ने आरोपी के निशानदेही पर विभिन्न जगहों से लोहे का बेड, 20 पीस गद्दा, 11 पीस प्लास्टिक की कुर्सी, 21 पीस बरामद किया गया है. डीएसपी ने बताया की आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है. वहीं एक फरार अभियुक्त की गिरफ्तारी के लिए छापामारी चलाई जा रही है. प्रेसवार्ता में पुलिस इंस्पेक्टर रतन कुमार सिंह, थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार, एएसआई शैलेंद्र कुमार मौजूद थे.

प्रशंसनीय सभी एफपीएस में इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट ऑफ सेल (ई-पॉस) डिवाइस लगाए गए हैं

राशन से पोषण तक : केंद्र का प्रयास खाद्य सुरक्षा प्रदान करना

संजीव चोपड़ा

चमन प्रकाश, एक उचित दर दुकान (एफपीएस) डीलर हैं, जो उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के प्रताप विहार ब्लॉक में पिछले 11 वर्षों से खाद्यान्न वितरित कर रहे हैं. इस क्षेत्र में एकमात्र एफपीएस डीलर होने के कारण वे 1,500 से अधिक परिवारों को सेवा प्रदान करते हैं. समुदाय में एक विश्वसनीय व्यक्ति के रूप में उनकी प्रतिष्ठा विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के कारण हुए व्यवधानों के दौरान और भी महत्वपूर्ण हो गई, जब लाभार्थी अपनी सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) से जुड़ी पात्रताओं पर बहुत अधिक निर्भर थे. प्रकाश, देश भर के उन 5.3 लाख डीलरों में से एक हैं, जो अंतिम छोर तक खाद्यान्न वितरण एजेंट के रूप में कार्य करते हैं और पीडीएस के माध्यम से 80 करोड़ से अधिक व्यक्तियों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं.

इन एफपीएस को राज्य सरकारों द्वारा लाइसेंस दिया जाता है और इनका प्रबंधन भी किया जाता है तथा डीलरों को अपनी दुकानों पर प्रति क्विंटल लेन-देन के आधार पर डीलर मार्जिन के माध्यम से मुआवजा मिलता है. तथापि, एफपीएस के माध्यम से खाद्यान्न वितरण प्रत्ये क माह 7-10 दिनों की अवधि में केंद्रित होता है. माह के शेष दिनों में, ये दुकानें कम उपयोग में रहती हैं, जिससे डीलरों को कोई अतिरिक्त आय का अवसर नहीं मिलता है. एफपीएस में भौतिक और आवश्यक अंतिम छोर तक वितरण नेटवर्क की आर्थिक व्यवहार्यता और स्थिरता को खतरा पहुंचता है.

एक अन्य गंभीर चुनौती लाभार्थियों की पोषण सुरक्षा रही है. वर्तमान में, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग केवल पीडीएस के माध्यम से ऊर्जा देने वाले (एनर्जी रिच) अनाज (चावल और गेहूं) प्रदान करता है, जबकि आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पोषण संबंधी कमियों का सामना कर रही है. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) के आंकड़े उच्च एनीमिया दरों को दर्शाते हैंः 6 से 59 महीने की आयु के बच्चों में 67.1%, 15 से 49 वर्ष की आयु की महिलाओं में 57% और 15 से 49 वर्ष की आयु के पुरुषों में 25%. इसके अतिरिक्त, पांच साल से कम उम्र के बच्चों में स्टंटिंग, वेस्टिंग और कम वजन के मुद्दे बने हुए हैं. अतः, एफपीएस डीलरों के लिए आय के अवसरों को बढ़ाने के साथ-साथ आहार विविधीकरण के माध्यम से जनसंख्या के पोषण संबंधी परिणामों में सुधार लाने जैसे दोहरे दृष्टि कोण (डुअल अप्रोच) की आवश्यकता है.

इन दो चुनौतियों पर काबू पाने के लिए, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने 60 एफपीएस-गाजियाबाद, जयपुर, अहमदाबाद और हैदराबाद प्रत्येक में 15 एफपीएस को 'जनपोषण केंद्र' (जेपीके) में परिवर्तित करने के लिए एक प्रायोगिक (पायलट) कार्यक्रम शुरू किया है. ये केंद्र, अन्य मदों के अलावा, खुले बाजार की तुलना में प्रतिस्पर्धी कीमतों पर पोषक तत्वों से भरपूर वस्तुओं जैसे मिलेट्स (श्री अन्न), दालें, खाद्य तेल और सोयाबीन की एक विविध रेंज पेश करेंगे. जेपीके का उद्देश्य लाभार्थियों और स्थानीय आबादी के बीच पोषण संबंधी अंतर को दूर करते हुए डीलरों के लिए अतिरिक्त राजस्व स्रोत और बेहतर मार्जिन प्रदान करना है.

एफपीएस का जेपीके में बदलाव चार प्रमुख स्तंभों पर निर्भर करता हैः 1. एफपीएस डीलरों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, 2.चालान वित्ततपोषण (इन्वॉइस फाइनैन्सिंग) के माध्यम से एफपीएस डीलरों के लिए कार्यशील पूंजी तक पहुंच, 3. बी2बी एग्रीगेटर्स के माध्यम से बाजार संपर्क, और 4. पोषण संबंधी साक्षरता को बढ़ावा देना.

एफपीएस डीलरों की क्षमता बढ़ाने के लिए, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, जो कौशल विकास मंत्रालय के तहत काम करता है. इस साझेदारी का उद्देश्य वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, पोषण संबंधी साक्षरता और व्यवसाय प्रबंधन पर केंद्रित कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करना है. प्रायोगिक (पायलट) कार्यक्रम में भाग लेने वाले एफपीएस डीलरों के लिए प्रशिक्षण सत्र मई और जून 2024 के दौरान दो बैचों में आयोजित किए गए थे.

इसके अतिरिक्त, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने 'एफपीएस-सहाय', एक मोबाइल एप्लिकेशन जो एफपीएस डीलरों को गैर-पीडीएस वस्तुओं की खरीद के लिए इन्वॉइस फाइनैन्सिंग की अनुमति देता है, को बनाने के लिए भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) के साथ एक और अन्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है. प्रमुख बी2बी एग्रीगेटर्स को इस प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लिए आमंत्रित किया गया है ताकि एफपीएस डीलरों के लिए आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चैन) लिंकेज स्थापित करने में सहायता की जा सके. इसके अलावा, एफपीएस डीलरों को पोषण मित्र के रूप में सेवा देने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो लाभार्थियों को पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों के सेवन और संतुलित भोजन बनाने के लाभों पर बुनियादी मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं. इस पहल के साथ, चमन प्रकाश का पेशेवर जीवन परिवर्तन के लिए तैयार है, जिससे उन्हें अपनी पेशकशों में विविधता लाने, अपनी आय बढ़ाने और समुदाय के पोषण स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सहायता मिलेगी.

(लेखक भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव हैं)

सरकारी शराब दुकान से 12 लाख की चोरी, मामला दर्ज

संवाददाता। पलामू

जिले के छतरपुर थाना से महज आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित सरकारी शराब दुकान से 12 लाख की चोरी का मामला सामने आया है. चोरों ने दुकान से 9.50 लाख की शराब एवं ढाई लाख नगद की चोरी कर ली है. घटना को तीन चोरों ने अंजाम दिया. उनकी तस्वीर सीसीटीवी कैमरे में सामने आई है. शराब और नगद चोरी करने के बाद चोर अल्टो कार से निकल गए. घटना की जानकारी बुधवार सुबह हुई. इस संबंध में संचालक प्रकाश कुमार के द्वारा छतरपुर थाना में मामला दर्ज कराया गया है. घटना की पुष्टि उत्पाद अधीक्षक संजीत देव ने की है. सीसीटीवी फुटेज के अनुसार घटना मंगलवार की रात 12.32 बजे की है. छतरपुर-जपला रोड में उषा पेट्रोल पंप के समीप सरकारी शराब दुकान है. तीन लोग चोरी करने से पहले नगर पंचायत की स्ट्रीट लाइट बुझाते नजर आए हैं. लाइट बुझने के बाद सीसीटीवी में कोई दृश्य कैद नहीं हो पाया है. सुबह में शटर का कुछ हिस्सा कटा नजर आया. भारी मात्रा

में शराब और नगद राशि से भरा बॉक्स गायब मिला है.

संचालक प्रकाश कुमार ने बुधवार को बताया कि मंगलवार रात 10 बजे तक दुकान खुली थी. दो दिन के सेल का पैसा बाक्स में रखा हुआ था. कटर से ताले की कड़ी काटी गई और शटर का कुछ हिस्सा तोड़ने के बाद दुकान में रखी 9.50 लाख की शराब और ढाई लाख रुपए से भरा बॉक्स गायब कर दिया गया है. इस संबंध में विभाग को सूचना दे दी गई है.

न्यूज अपडेट

स्कूल कर्मचारी ने की दो की हत्या

साराजेवो (बोस्निया-हर्जेगोविना)। उत्तर-पश्चिमी बोस्निया के एक कस्बे में बुधवार को एक स्कूल कर्मचारी ने गोली मारकर कम से कम दो लोगों की हत्या कर दी और कई अन्य को घायल कर दिया. स्थानीय मीडिया की खबरों में यह जानकारी दी गयी. गोलीबारी कथित तौर पर बोस्निया की राजधानी साराजेवो से लगभग 300 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में सैंस्की मोस्ट के एक माध्यमिक विद्यालय भवन में हुई.

टेक्सास में विमान दुर्घटना में दो मरे

ओडेसा (टेक्सास)। पश्चिमी टेक्सास के पास मंगलवार को एक छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया. इसमें पायलट और एक यात्री की मौत हो गई तथा एक महिला घायल हो गई. अधिकारियों के अनुसार, प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ओडेसा हवाई अड्डे से उड़ान भरने के बाद विमान अधिक ऊंचाई तक नहीं जा सका और बिजली के खंभे से टकरा गया इसके बाद करीब सात बजे एक गली में दुर्घटनाग्रस्त हो गया.

व्यापारिक जहाज को निशाना बनाया

दुबई। लाल सागर से गुजर रहे एक व्यापारिक जहाज पर बुधवार को कई हमले किये गए, जिसके चलते उसपर अब नियंत्रण नहीं रह गया है. इस हमले को हूती विद्रोहियों ने अंजाम दिया है जो पहले भी लाल सागर में व्यापारिक जहाजों को निशाना बना चुके हैं. बताया कि छोटी-छोटी नौकाओं से आए हमलावरों ने यमन में विद्रोहियों के कब्जे वाले होदेइदिया बंदरगाह से करीब 140 किलोमीटर पश्चिम में जहाज को छोटे हथियारों से निशाना बनाया.

अमेरिका में भारतीय डॉक्टर गिरफ्तार

वाशिंगटन। अमेरिका में कई वर्षों तक बच्चों और महिलाओं की सैकड़ों नग्न तस्वीरें खींचने और वीडियो बनाने के आरोप में 40 वर्षीय एक भारतीय चिकित्सक को गिरफ्तार किया गया है. मीडिया रिपोर्ट के अनुसार एजाज ने स्नानगृह, कपड़े बदलने की जगह, अस्पताल के कमरों और यहां तक कि अपने घर में भी कई जगहों पर छिपाकर कैमरे लगा रखे थे. उसने दो साल तक के छोटे बच्चों की तस्वीरें लीं और वीडियो बनाए. उसने कई महिलाओं के साथ ऐसे समय में कथित तौर पर यौन संबंध भी बनाए, जब वे बेहोश थीं या सो रही थीं.

लोपेज बेन एफ्लेक से लेंगी तलाक

लॉस एंजिलिस। दो दशक के रिश्ते में रहने और खूब सुर्खियां बटोरने के बाद मशहूर अमेरिकी अभिनेत्री जेनिफर लोपेज ने फिल्म निर्माता बेन एफ्लेक से तलाक लेने का फैसला किया है. हॉलीवुड के 'पावर कपल' कहलाने वाले इस जोड़े को उनके प्रशंसक प्यार से 'बेनिफर' कहते थे. लोपेज ने मंगलवार को तलाक का मुकदमा दर्ज कराया. लोपेज ने बेन से अलग होने की तारीख 26 अप्रैल 2024 दर्ज करायी है.

रुद्रपुर : सड़क हादसे में चार की मौत

रुद्रपुर। उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर के जिला मुख्यालय रुद्रपुर में बुधवार को तड़के एक कार और एक ई-रिक्शा की आमने-सामने हुई टक्कर में एक ही परिवार की तीन महिलाओं समेत चार व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी तथा दो अन्य घायल हो गए. जान गंवाने वाली एक महिला गर्भवती थी. पुलिस ने बताया कि अटरिया रोड के पास नैनीताल राजमार्ग पर हुई यह टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ई-रिक्शा के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार चार व्यक्तियों की मौके पर ही मृत्यु हो गयी.

कार-ट्रक के बीच टक्कर, चार की मौत

इटावा। उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में बुधवार को राष्ट्रीय राजमार्ग दो पर एक कार के आगे जा रहे ट्रक से जा टकरा जाने से चार लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए. पुलिस सूत्रों ने बताया कि सुबह साढ़े छह बजे आगरा-इटावा-कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग दो पर पिलखर गांव के पास दिल्ली से हमीरपुर जा रही एक कार के चालक को नींद आ गई और कार आगे जा रहे ट्रक से जा टकराई. उन्होंने बताया कि टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया.

एसआईटी करेगी यौन शोषण की जांच

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कृष्णागिरि जिले में हाल ही में एक फर्जी राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) शिविर में नाबालिग लड़कियों के कथित यौन शोषण से संबंधित घटनाओं की जांच के लिए एक विशेष जांच दल गठित करने का आदेश दिया है. राज्य सरकार ने बुधवार को बताया कि भारतीय पुलिस सेवा की वरिष्ठ अधिकारी के. भवनेश्वरी विशेष जांच दल (एसआईटी) का नेतृत्व करेंगी. मुख्यमंत्री ने उन्हें मामले की जांच में तेजी लाने और 60 दिनों के भीतर आरोप-पत्र दायर करने का काम सौंपा है.

जहरीली शराब पीने से एक की मौत

बेरहामपुर। ओडिशा में कथित तौर पर नकली देशी शराब पीने से तबीयत बिगड़ने पर एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उपचार करवा रहे 15 लोगों में से एक की मंगलवार की रात मौत हो गई. पुलिस ने बताया कि मरने वाले की पहचान चिकिता के निकट जेनापुर के रहने वाले जूरा बेहरा (60) के रूप में की गयी है. वह गंजम जिले के नुआगांव पुलिस थाने के मौंदपुर गांव में सोमवार को कथित तौर पर मिलावटी शराब पीने के बाद बीमार पड़ने वाले उन 20 लोगों में से एक थे.

मौसम : उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों में नदी और नाले उफान पर, राजस्थान व त्रिपुरा में अतिवृष्टि से कई इलाके टापू में तब्दील

केरल में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश, सड़क-रेल यातायात प्रभावित

लगातार न्यूज नेटवर्क

केरल, उत्तराखंड और राजस्थान सहित देश के कई हिस्सों मॉनसून की सक्रियता के बीच बीते 24 घंटों के दौरान भारी बारिश हुई. इसके कारण उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों में नदी और नाले उफान पर हैं, जबकि राजस्थान में बीते चौबीस घंटे में राजधानी जयपुर सहित कई जिलों में भारी बारिश दर्ज की गई. जयपुर, धौलपुर तथा झालावाड़ जिले में कहीं कहीं भारी वर्षा हुई है.सबसे अधिक, 85 मिलीमीटर बारिश जयपुर तहसील में हुई. केरल के कई जिलों में बुधवार तड़के भारी बारिश और तेज हवाओं के कारण पेड़ उखड़ गए, विभिन्न हिस्सों में संपत्ति को नुकसान पहुंचा, यातायात प्रभावित हुआ तथा बिजली गुल हो गई. भारत मौसम विज्ञान विभाग ने सुबह के समय इडुक्की, एर्नाकुलम और त्रिशूर जिले में 50 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हवा चलने के साथ-साथ मध्यम से मूसलाधार वर्षा होने का पूर्वानुमान किया था. संबंधित जिलों के प्रशासन ने बताया कि तेज हवाओं के कारण पेड़ उखड़ने से कोट्टायम और अलप्पुझा के बीच रेल परिचालन अवरुद्ध हो गया. केरल राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने कहा कि निचले इलाकों और नदी तट के कई हिस्सों में बाढ़ आने, बिजली आपूर्ति बाधित होने, मकानों को आंशिक नुकसान पहुंचने और भूस्खलन होने की आशंका है. मंगलवार को आईएमडी ने राज्य के छह जिलों में 'ऑरेंज अलर्ट' और बुधवार के लिए शेष जिलों में 'येलो अलर्ट'' जारी किया था.

त्रिपुरा में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से कई जिले बाढ़ की चपेट में

त्रिपुरा में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश की वजह से कई जिले बाढ़ की चपेट में हैं. नदियां उफान पर है. चारों तरफ तबाही का मंजर है. बारिश, बाढ़ और भूस्खलन की वजह से हुए अलग-अलग हादसों में करीब सात लोगों की जान जा चुकी है. और कई लोग लापता बताए जा रहे हैं, कई गांव बाढ़ के पानी में डूब गए हैं, लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है.

उत्तराखंड : तेज बहाव में युवक बहा, एक लापता

उत्तराखंड के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश के कारण नदी और नाले उफान पर हैं. नाले में पानी के तेज बहाव में एक युवक बह गया जबकि एक अन्य लापता हो गया. राज्य के आपातकालीन जानकारी के अनुसार नैनीताल जिले के कोटाबाग में मंगलवार देर शाम फतेहपुर नाले में पानी के तेज बहाव के कारण मोटरसाइकिल सवार एक व्यक्ति बह गया. राज्य आपदा प्रतिवादन बल की टीम ने शव बरामद किया. एक अन्य घटना में देहरादून जिले के पुरुकुल गांव के पास नदी में एक युवक बह गया जबकि दूसरे को स्थानीय लोगों ने बचा लिया.

बच्चियों का यौन शोषण : विरोध-प्रदर्शन के बीच बदलापुर में इंटरनेट सेवा बंद

स्कूल प्रबंधन ने घटना को छुपाया

लगातार न्यूज नेटवर्क

महाराष्ट्र में ठाणे जिले के बदलापुर में दो बच्चियों के कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ व्यापक पैमाने पर प्रदर्शनों के मद्देनजर बुधवार को शहर में इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गईं और अधिकतर स्कूल बंद रहे. इसी बीच, महाराष्ट्र राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने आरोप लगाते हुए कहा कि स्कूल ने अभिभावकों की मदद करने के बजाय मामले को छुपाने की कोशिश की. वहीं एमवीए ने घटना के विरोध में 24 अगस्त को 'महाराष्ट्र बंद' का आह्वान किया है, जबकि पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) की नेता सुप्रिया सुले ने उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के इस्तीफे की मांग की. उन्होंने बदलापुर की घटना की निंदा करने के लिए आयोजित एक विरोध प्रदर्शन से इतर एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सरकार पर महिला सुरक्षा के मुद्दे पर गंभीर नहीं होने का आरोप लगाया. उन्होंने दावा किया कि सरकार तो पार्टियों को तोड़ने में व्यस्त है, लिहाजा उसके पास आम लोगों के लिए समय नहीं है. वहीं मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इस मामले में विरोध प्रदर्शन को राजनीति से प्रेरित बताते हुए कहा कि अधिकतर प्रदर्शनकारी बाहरी हैं. मंगलवार को विरोध प्रदर्शन के दौरान रेलवे स्टेशन और बदलापुर के अन्य हिस्सों में पथराव की घटनाओं में शहर पुलिस के कम से कम 17 कर्मी और करीब आठ रेलवे पुलिसकर्मी घायल हो गए और जांचकर्ताओं ने हिंसा के सिलसिले में 72 लोगों को गिरफ्तार किया है. अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने बताया कि कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए शहर में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है तथा स्थिति धीरे-धीरे सामान्य हो रही है.

बदलापुर की घटना पर सुले ने मांगा फडणवीस का इस्तीफा

एमवीए ने 24 अगस्त को 'महाराष्ट्र बंद' का आह्वान किया

महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन महाविकास आघाडी (एमवीए) ने बुधवार को ठाणे जिले के बदलापुर स्थित एक स्कूल में दो बच्चियों के कथित यौन उत्पीड़न की घटना के विरोध में 24 अगस्त को 'महाराष्ट्र बंद' का आह्वान किया. राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार ने बताया कि एमवीए के घटक दलों- कांग्रेस, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना-उद्धव बालासाहेब ठाकरे (शिवसेना-यूबीटी) और शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी-शरदचंद्र पवार (राकांपा- एसपी) ने यहां एक बैठक में यह निर्णय लिया. उन्होंने कहा कि एमवीए के सभी सहयोगी दल 24 अगस्त को बंद में भाग लेंगे. उन्होंने कहा, 'हमने राज्य में महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे और भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) के नेतृत्व वाली 'महायुति' सरकार के सभी मोर्चों पर विफल रहने पर चर्चा की.'

मिमी चक्रवर्ती ने कहा- डॉक्टरों का समर्थन किया तो मुझे मिल रहीं रेप की धमकियां

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की पूर्व सांसद और बांग्ला अभिनेत्री मिमी चक्रवर्ती का दावा है कि उन्हें ऑनलाइन रेप की धमकियां मिल रही हैं. उन्होंने कहा कि इसके पीछे की वजह उनका कोलकाता में डॉक्टरों के विरोध-प्रदर्शन का समर्थन करना है. मिमी चक्रवर्ती ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर खुद को मिली धमकियों के स्क्रीनशॉट शेयर किए. उनका कहना है कि हाल के वक़्त में उन्हें ऐसे धमकी भरे कई कमेंट्स मिले हैं. उन्होंने अपनी पोस्ट में कोलकाता पुलिस की साइबर क्राइम डिविजन को टैग किया. पोस्ट के कैप्शन में मिमी ने लिखा, "और हम महिला अधिकारों के लिए न्याय की मांग कर रहे हैं? ये उनमें से कुछ हैं. भीड़ में खड़े नकाबपोश पुरुषों ने बलात्कार की धमकियों को सामान्य बना दिया है. कौन सी परवरिश और शिक्षा ऐसा करने की इजाज़त देती है."

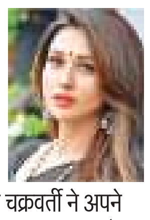

स्कूल ने अभिभावकों की मदद करने के बजाय मामले को छुपाने की कोशिश की : महाराष्ट्र राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष सुसीबेन शाह ने बुधवार को कहा कि बदलापुर के जिस स्कूल में दो बच्चियों का कथित तौर पर यौन शोषण किया गया था, उसने पुलिस में शिकायत दर्ज कराने में पीड़िताओं के माता-पिता की मदद करने के बजाय अपराध को छुपाने की कोशिश की. शाह ने मामले की गंभीरता पर जोर देते हुए कहा कि दो बच्चियों के कथित यौन शोषण का यह मामला स्पष्ट रूप से पॉक्सो (यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण) अधिनियम के तहत आता है. राज्य बाल अधिकार आयोग प्रमुख ने बताया कि घटना का पता चलने के बाद उन्होंने माता-पिता की चिंताओं को लेकर ठाणे जिला बाल संरक्षण इकाई से संपर्क किया. शाह ने कहा, 'वे (बाल संरक्षण इकाई) उन्हें शिकायत दर्ज कराने के लिए पुलिस के पास ले गए. जब मैंने स्कूल प्रबंधन से मामले के बारे में पूछा, तो उन्होंने इसे छिपाने की कोशिश की.

इलाहाबाद हाईकोर्ट की सख्त टिप्पणी

किसी भी धर्म का पुजारी नहीं करा सकता जबरन धर्मांतरण

लगातार। न्यूज नेटवर्क

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने धर्मांतरण को लेकर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए बड़ी टिप्पणी की है. जस्टिस रोहित रंजन अग्रवाल की सिंगल बेंच ने मो शाने आलम नाम के शख्स को जमानत देने से इंकार करते हुए कहा कि किसी भी धर्म का व्यक्ति, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाए जैसे फादर, कर्मकांडी, मौलवी या मुल्ला, अगर वो किसी व्यक्ति का जबरन गलतबयानी, धोखाधड़ी, अनुचित प्रभाव, जबरदस्ती और प्रलोभन देकर धर्मांतरण नहीं करा सकता है. अगर, वो ऐसा करता है, तो धर्मांतरण विरोधी अधिनियम के तहत जिम्मेदार होगा.

मौलाना पर एक पीड़िता को जबरन इस्लाम में परिवर्तित करने और एक मुस्लिम व्यक्ति के साथ उसका निकाह कराने का आरोप है. आरोपी याची शाने आलम के खिलाफ गाजियाबाद के थाना अंकुर विहार में यूपी गैरकानूनी धर्म परिवर्तन प्रतिषेध अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था. इस मामले में याची ने अपनी जमानत के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी.

कोर्ट ने आदेश में क्या कहा?

अदालत ने अपने आदेश में कहा है कि अधिनियम, 2021 की धारा 8 में प्रावधान है कि कोई भी व्यक्ति जो अपना धर्म परिवर्तन करना चाहता है उसे शेड्यूल-वन में निर्धारित प्रपत्र में कम से कम साठ दिन पहले एक घोषणा पत्र देना होगा. इसके लिए उसे जिला मजिस्ट्रेट या अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट के यहां आवेदन करना होगा. विशेष रूप से जिला मजिस्ट्रेट द्वारा अधिकृत किया जाएगा कि वो अपना अपनी स्वतंत्र सहमति से और बिना किसी बल, दबाव, अनुचित प्रभाव या प्रलोभन के धर्म परिवर्तन करना चाहता है.

याची के वकील ने कोर्ट में दलील दी कि आवेदक शाने आलम मौलाना यानी धार्मिक पुजारी है और उसने केवल आरोपी अमान के साथ पीड़िता का निकाह कराया था, पीड़ित महिला को जबरन इस्लाम में धर्म परिवर्तन नहीं कराया था.

इजराइल और हमास में नहीं हो पाया समझौता

यरूशलम। गाजा में युद्ध शुरू होने के बाद से अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की पश्चिम एशिया की नौवीं यात्रा समाप्त हो गई, लेकिन इस दौरान इजराइल और हमास के बीच संघर्ष-विराम समझौता नहीं हो सका. वहीं हमास ने मंगलवार को कहा कि यह प्रस्ताव उसके द्वारा पहले जताई गई सहमति के विपरीत है. उसने अमेरिका पर इजराइल की नयी शर्तों को स्वीकार करने का आरोप लगाया. मिस्र में बैठकें करने से पहले ब्लिंकन ने इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से भी मुलाकात की. हमास और इजराइल द्वारा चुनौतियां बरकरार रहने के संकेत दिए जाने के बीच ब्लिंकन ने कहा कि समझौते को इसी 'समय करना बहुत महत्वपूर्ण है.'

प्रौद्योगिकी का उपयोग जनहित में किया जाना चाहिए: राष्ट्रपति

- **द्रौपदी मुर्मू बोलीं- भारत चौथी औद्योगिकी क्रांति की चुनौतियों का सामना करने, इसका फायदा उठाने के लिए तैयार**

एजेंसी। फरीदाबाद

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को कहा कि भारत चौथी औद्योगिक क्रांति से पैदा हुई चुनौतियों का सामना करने और इससे उत्पन्न अवसरों का फायदा उठाने के लिए तैयार है. मुर्मू ने यहां जे सी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पाचवें दीक्षांत समारोह में कहा कि प्रौद्योगिकी का उपयोग उचित तथा सतत विकास और जनहित के लिए किया जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया चौथी औद्योगिक क्रांति के दौर में है. उन्होंने कहा कि भारत भी इस क्रांति की चुनौतियों का सामना करने और इसके अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार है. राष्ट्रपति ने कहा कि इस राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने में जे सी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी. राष्ट्रपति ने कहा कि इस विश्वविद्यालय ने पिछले कुछ वर्षों में कई औद्योगिक और शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौते किए हैं. उन्होंने कहा कि बहुत-सी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए इस विश्वविद्यालय के परिसर में उत्कृष्टता केंद्र भी स्थापित किए हैं. मुर्मू ने कहा कि वर्तमान में प्रौद्योगिकी के विकास के कारण प्रगति के अनेक रास्ते खुल गए हैं. राष्ट्रपति ने युवाओं को कुशल और आत्म-निर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए इस विश्वविद्यालय की सराहना की.

हसीना व उनके सहयोगियों के खिलाफ एक और मुकदमा

ढाका। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना और 86 अन्य के खिलाफ सिलहट शहर में एक जुलूस पर हमला करने के मामले में बुधवार को प्राथमिकी दर्ज की गई. इस महीने की चार तारीख को बड़े पैमाने पर हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान कई लोग गोली लगने से घायल हो गए थे. इस मामले के साथ ही हसीना पर अब 33 मुकदमे दर्ज हो गए हैं, जिनमें 27 हत्या के, चार मानवता के खिलाफ अपराध और नरसंहार के तथा एक अपहरण का मामला शामिल है. हसीना ने देश में हिंसक प्रदर्शनों के बीच इस्तीफा दे दिया था. जातीयतावादी छात्र दल की सिलहट शहर इकाई के कार्यवाहक अध्यक्ष जुबेर अहमद ने सिलहट मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट सुमन भुइया की अदालत में मामला दर्ज कराया. हसीना की बहन शेख रेहाना को भी इस मामले में आरोपी बनाया गया है.

डीएनसी : पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने किया कमला हैरिस का समर्थन

'नए चैप्टर' के लिए तैयार है अमेरिका

कमला के पति बोले

- **उनकी पत्नी महान राष्ट्रपति बनेंगी, सभी को उन पर गर्व होगा**

एजेंसी। शिकागो

अमेरिका के शिकागो में हो रहे डेमोक्रेटिक पार्टी के नेशनल कन्वेंशन (डीएनसी) में मंगलवार को पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने डोनाल्ड ट्रंप को खतरनाक बताते हुए राष्ट्रपति जो बाइडन और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की तारीफ़ की. वहीं कमला हैरिस के पति डगलस एमहॉफ ने कहा कि उनकी पत्नी एक महान राष्ट्रपति बनेंगी, जिन पर पूरे अमेरिका को गर्व होगा. एमहॉफ (59) ने डीएनसी में उत्साहित भीड़ को अपना परिचय 'फर्स्ट-सेकंड जेंटलमैन' के रूप में कराया. ओबामा ने डोनाल्ड ट्रंप को लेकर कहा, "डोनाल्ड ट्रंप ने प्रवासियों से जुड़े उन समझौतों को ख़त्म कर दिया, जिससे हमारी दक्षिणी सीमा को सुरक्षित करने में मदद मिलती. ट्रंप ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्होंने सोचा कि समस्या को वास्तव में हल करने की कोशिश करने से उनके अभियान को नुकसान होगा." ओबामा ने कमला हैरिस को लेकर कहा, 'अमेरिका नए चैप्टर के लिए तैयार है. हम कमला हैरिस के लिए तैयार हैं. कमला हैरिस भी तैयार हैं. दुनिया देख रही है कि नवंबर में होने वाले चुनाव में क्या होगा. देश के अधिकतर लोग उस देश में नहीं रहना चाहते जो विभाजित हो. हम कुछ अच्छा चाहते हैं.' कहा, "हमारा काम लोगों को ये विश्वास दिलाना है कि लोकतंत्र बहुत कुछ कर सकता है और कमला हैरिस ये अच्छे से समझती हैं." पांच नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में उनका मुकाबला रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप से होगा.

जो बाइडन ने बहुत खतरे के समय में लोकतंत्र की रक्षा की

बराक ओबामा ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की भी प्रशंसा की और कहा कि वे "राजनीति में सबसे दुर्लभ काम करने के लिए इतने निस्वार्थ हैं, कि उन्होंने देश की खातिर अपनी महत्वाकांक्षा को किनारे रख दिया." ओबामा ने कहा, "इतिहास जो बाइडेन को एक ऐसे उत्कृष्ट राष्ट्रपति के रूप में याद रखेगा, जिन्होंने बहुत खतरे के समय में लोकतंत्र की रक्षा की. मुझे उन्हें अपना राष्ट्रपति कहने पर गर्व है, लेकिन उन्हें अपना मित्र कहने पर और भी ज्यादा गर्व है."

देश की अगले राष्ट्रपति के तौर पर कमला को चुनें : बर्नी सैंडर्स

सीनेटर बर्नी सैंडर्स ने कमला हैरिस समर्थन किया. उन्होंने कामकाजी वर्ग के अमेरिकियों के लिए एक प्रगतिशील आर्थिक एजेंडा पेश करने और बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट लालच पर काबू पाने के महत्व के बारे में बात करते हुए कहा, 'हमें ऐसी अर्थव्यवस्था की जरूरत है, जो हम सभी के लिए काम करे, न कि महज अरबपति वर्ग के लालच को पूरा करने के लिए. हममें से 60 प्रतिशत लोग तनख्वाह पर निर्भर रहते हैं, जबकि शीर्ष एक प्रतिशत लोगों के साथ ऐसा कभी नहीं रहा.'

कमला हैरिस के पति ने मंच पर साझा की प्रेम कहानी

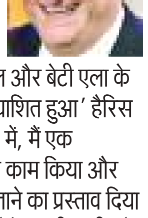

अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस के पति डगलस एमहॉफ ने अपनी प्रेम कहानी साझा की और याद किया कि कैसे 2013 में एक 'ब्लाइंड डेट' पर उनके बीच प्रेम की शुरुआत हुई और कमला के लिए एक अजीब 'वॉइस मैसेज' छोड़ा था, जिसे वह उनकी शादी की हर सालगिरह पर सुनाती हैं. मंगलवार रात यहां डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में मंच पर एमहॉफ ने यह किस्सा साझा किया, ताकि वह हैरिस के लिए समर्थन जुटा सकें. उन्होंने बताया कि उन्हें वकालत का पेशा बहुत पसंद है. वह बेटे कोल और बेटी एला के पिता बने, (पूर्व पत्नी) से तलाक लिया और फिर 'कुछ अप्रत्याशित हुआ' हैरिस के साथ एक 'ब्लाइंड डेट' पर गए. एमहॉफ ने कहा, '2013 में, मैं एक मुवक्किल से विवादास्पद मुलाकात करने गया। हमने मुद्दे पर काम किया और बैठक के अंत में प्रसन्न मुवक्किल ने मुझे 'ब्लाइंड डेट' पर जाने का प्रस्ताव दिया और इस तरह मुझे कमला हैरिस का फोन नंबर मिला.' उन्होंने अपनी पत्नी को एक 'योद्धा' और उनके बच्चों को प्यार करने वाली अभिभावक करार दिया.

रूस-यूक्रेन युद्ध रूसी क्षेत्र में यूक्रेन के हमलों के बीच पुतिन ने किया चेचन्या का दौरा, कहा

स्वयंसेवी लड़ाकों के रहते रूस को कोई हरा नहीं सकता

एजेंसी। मॉस्को

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने मंगलवार को रूसी संघ के भीतर मुख्य रूप से मुस्लिम गणराज्य चेचन्या का अचानक दौरा किया. यह लगभग पिछले 13 साल में चेचन्या का उनका पहला दौरा है. यह दौरा ऐसे समय में हुआ है, जब यूक्रेन सीमा पार से पश्चिमी रूस में तीन सप्ताह से लगातार हमले कर रहा है. रूस के कुर्स्क क्षेत्र में कीव के आक्रमण से युद्ध की दिशा बदल रही है और यूक्रेन की युद्ध से थकी हुई जनता का मनोबल बढ़ रहा है. हालांकि, इस आक्रमण के अंतिम परिणाम की भविष्यवाणी करना अभी संभव नहीं है. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद रूस पर किया गया यह पहला हमला है. पुतिन का स्वागत चेचन्या के स्वयंभू दबंग नेता रमजान कादिरोव ने किया. पुतिन ने वहां विशेष बल अकादमी का दौरा किया और यूक्रेन में तैनात होने से पहले वहां प्रशिक्षण लेने वाले स्वयंसेवी लड़ाकों से बातचीत की. इस अकादमी का नाम पुतिन के नाम पर रखा गया है. रूस की सरकारी एजेंसियों की रिपोर्ट के अनुसार, पुतिन ने इन स्वयंसेवी लड़ाकों की प्रशंसा की और कहा कि जब तक रूस के पास उनके जैसे लोग हैं, तब तक उसे 'कोई हरा नहीं' सकता. कादिरोव ने अपने आधिकारिक 'टेलीग्राम' पर एक पोस्ट में कहा कि मॉस्को द्वारा यूक्रेन में अपना 'विशेष सैन्य अभियान' शुरू किए जाने के बाद से स्वयंसेवकों सहित 47,000 से अधिक लड़ाके इस केंद्र में प्रशिक्षण ले चुके हैं. चेचन्या के लड़ाके यूक्रेन के साथ संघर्ष में दोनों पक्षों की ओर से लड़ रहे हैं. सोवियत संघ के पतन के बाद स्वतंत्रता समर्थक लड़ाकों का रूसी सरकारी बलों के साथ कई वर्षों तक युद्ध चला. दिवंगत चेचन नेता जोखर दुदायेव के प्रति वफादार कीव समर्थक स्वयंसेवक पुतिन और कादिरोव का समर्थन करने वाली चेचन सेना के कट्टर दुश्मन हैं. जोखर आजादी समर्थक नेता थे. पुतिन कादिरोव के पिता एवं पूर्व चेचन नेता अखमत कादिरोव की कब्र, एक कमांड पोस्ट और ग्रोज्नी की एक मस्जिद में भी गए.

यूक्रेन का रूस पर अब तक का सबसे बड़ा ड्रोन हमला

इसी बीच, रूसी प्राधिकारियों ने बुधवार को कहा कि यूक्रेन ने 2022 में युद्ध शुरू होने के बाद से पहली बार मॉस्को पर सबसे बड़ा ड्रोन हमला किया और उसके सभी ड्रोन नष्ट कर दिए गए हैं. रूस के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि मॉस्को ने रातभर में यूक्रेन के 45 ड्रोन नष्ट कर दिए. उसने बताया कि 11 ड्रोन मॉस्को क्षेत्र के ऊपर नष्ट किए गए, 23 ड्रोन ब्रायंस्क क्षेत्र, छह बेलगोरोद, तीन कलुगा और दो कुर्स क्षेत्र में नष्ट किए गए. मॉस्को के मेयर सर्गेई सोबियानिन ने अपने टेलीग्राम चैनल पर कहा, 'ड्रोन के जरिए मॉस्को पर हमला करने की यह अब तक की सबसे बड़ी कोशिशों में से एक थी.' उन्होंने कहा कि राजधानी मॉस्को के आसपास बनायी गयी मजबूत रक्षा प्रणाली के कारण सभी ड्रोन नष्ट कर दिए गए.

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा राजकमल प्लाजा, रूम नंबर 102 जयप्रकाश नगर, डीनोवली स्कूल रोड बरटांड़, धनबाद-826001 झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **दीपक कुमार अम्बष्ठ***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)